UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180882

UNIVERSAL
LIBRARY

ओ३म्

शिवाजी

एक

वीर रस प्रधान ऐतिहासिक नाटक

लेखक

श्री रुक्मिणी हरण, सती परीक्षा, पद्य-प्रवेशिका

आनन्द सरोज आदि के रचयिता

कविवर डाक्टर सुवर्णसिंह वर्मा "आनन्द"

ऐच, ऐल, ऐम, पी,

डाइट्स ऐक्सपर्ट—(इंग्लैण्ड)

प्रकाशक—

शिवरामदास गुप्त,

अध्यक्ष

उपन्यास बहार आफ़िस बनारस

(प्रकाशक ने प्रकाशन हक़ स्वाधीन रखा है)

थमबार]   सन् १९२९ सम्वत् १९८५   [मूल्य ॥)

नाटकमाला सं—६१
सम्पादक
शिवरामदास गुप्त

सावधान !

लेखक की आज्ञा बिना इस नाटक को खेलने, छापने, अथवा उद्धृत करने का व्यर्थ कष्ट कोई सज्जन न उठावें। स्कूल, कालिज, तथा अन्य क्लबों को भी उचित है कि लेखक से निम्नलिखित पते पर पत्र द्वारा लिखित आज्ञा प्राप्त कर लें।

डाक्टर सुवर्णसिंह वर्मा
H. L. M. P.
क़ीन की मंडी-आगरा

निवेदक—
प्रकाशक

मुद्रक—
शिवराम सिंह,
नेशनल प्रेस, बनारस कैण्ट।

यह पुस्तक

हिन्दी साहित्य के प्रेमी

हिन्दी भाषा के परम हितैषी

श्री ठाकुर हरनाथसिंह जी चौहान

B. A. U. P. C. S

लेट डिप्टी कलेक्टर तथा वर्तमान आगरा

म्युनिसीपैलिटी के एकज़ेक्यूटिव आफ़िसर

साहब के कर कमलों

में

सादर, सविनय तथा सप्रेम

समर्पित

है

पूज्य ठाकुर साहब !

विद्या के प्रेम चिन्ह विलक्षण हैं आप में ।
सब भाँति सदाचार के लक्षण हैं आप में ॥
आशा है इसे प्रेम से स्वीकार करेंगे ।
"आनंद" की शुभ भेंट अंगीकार करेंगे ॥

सुवर्णसिंह वर्मा

"आनंद"

लेखक के दो शब्द

प्रिय पाठक,

आजकल "नाटक" शब्द का अर्थ, दर्शकों के कोमल हृदयों में मनोरंजन रूपी अभिनय के मिस विषय-वासनाओं की वृत्तियों को बढ़ाना तथा शृङ्गार रस के समुद्र में उन्हें सर से पैर तक डुबो देनाही रह गया है। परन्तु मुझे भय है कि इस परिभाषा के आगे, यह नाटक मुहूर्त मात्र भी न ठहर सकेगा, क्योंकि प्रस्तुत पुस्तक से इस क्षुद्र लेखक का अभिप्राय शृंगार रस की नदी बहाना नहीं, परन्तु पाठकों की नसों में फिर से हिन्दू वीरता का उष्ण रक्त संचारित करदेना है।

कहानी बड़ी लम्बी है। एक समय था जब आर्यावर्त की वीर जातियों में साहस वीरता का ह्रास होकर विषय-विलासिता के अंकुर उत्पन्न हो गये थे। और जो कसी रही उन्हें फूट के फलों ने तुरन्त पूरा कर दिया था। कहने का अभिप्राय यह है कि वीर जाति कायर बन गई और किया कराया सब चौपट हो गया। शक्तिशाली मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब के प्रचण्ड तेज के आगे, एक एक करके सभी हिन्दू नरेशों ने मस्तक झुका दिये। शत्रुओं की बन पड़ी, अहिंसा का राग अलापने वाले हम कायरलोग चुपचाप गर्दन झुकाकर शत्रुओं के चरणचुम्बन करने लगे। परन्तु यह दशा भी अधिक समय तक न रही।

समय फिरा। ज्ञान का उदय हुआ। वीरता के विकास से कर्तव्य का केहरी दहाड़ उठा। साहसी देश भक्त सिंह-गर्जना पूर्वक आलसी कायरों का रणक्षेत्र में आह्वान करने लगे। एक साथ आंखें खुल गईं। लोगों को अपनी निर्बलता अनुभव होने लगी, फलतः हमारे वीर नायक शिवाजी का धीरे धीरे उदय हुआ। निस्सन्देह शिवाजी ने आद्योपांत अपना पवित्र कर्तव्य पालन किया। मातृभूमि के लिये, महाराष्ट्र जाति के लिये, पूज्य

पिता के लिये, स्नेहमयी माता के लिये, गौ, ब्राह्मण; अनाथों तथा पीड़ित की जाति के लिये उन्होंने कभी कुछ उठा न रखा। सबकी पूर्ण सेवा की।

अधिक क्या कहूं ? इस पुस्तक द्वारा जो कुछ सेवा कर सका हूं, वह आपके सम्मुख उपस्थित है। हाँ, इतना अवश्य कहना है कि वर्तमान समय में हिन्दू मुस्लिम संगठन की नींव पक्की करने के विचार से ही मैंने इसे लिखा है। पाठक महोदय भूल कर भी इस पुस्तक को दूसरी दृष्टि से न देखें।

शिवाजी और रौशन आरा का कपोल कल्पित वृत्तान्त इतिहास, साहित्य और देश व्यापी हिन्दू मुस्लिम ऐकता के विरुद्ध तथा घृणित समझ कर ही छोड़ दिया है। यथार्थ में शिवाजी का निर्मल चरित्र जितना उज्वल है, उतना बहुत कम वीर वरों का देखने सुनने तथा पढ़ने में आया है।

इस नाटक में अन्य अनेक कल्पनाओं के अतिरिक्त लक्ष्मी और दुर्गा जी की कल्पना रोचकता के विचार से करनी पड़ी है। तथा "साहब बहादुर" का प्रहसन मेरे घसीटे की तीसरी आवृत्ति है। प्रथम श्री रुक्मिणी हरण में "प्रपंची घसीटा" और द्वितीय "सती परीक्षा में "पापी घसीटा" की हैसियत से उक्त महाशय दर्शन देते हैं।

पात्रों की भाषा सामयिक तथा सुविधा के विचार से हिन्दी उर्दू मिश्रित रक्खी गई है। यह नाटक मैंने सन १९२४ ई० में लिखा था, उस समय हिन्दी, उर्दू, मराठी, गुजराती, बँगला तथा अन्य किसी भाषा में इस ढंग का नाटक न था, परन्तु इसे प्रकाशित करवाने में देर लगी और आज परम पिता परमेश्वर का कोटिशः धन्यवाद है, कि हम इस नाटक को अपने प्रेमी पाठकों की सेवा में उपस्थित करने में समर्थ हुए हैं।

कृतज्ञता प्रकाश

हिन्दी भाषा में मूल नाटक न होने के कारण हमने छत्रपति शिवाजी के अनेक जीवन चरित्रों के अतिरिक्त बंगला नाट्यकार पं० मनोमोहन गोस्वामी के "शिवाजी" से भी कहीं कहीं (खासकर अन्तिम दृश्य में) कुछ सहायता

की हैं। अस्तु हम उपर्युक्त लेखक तथा अनुवादक महोदयों के हृदय से कृतज्ञ हैं। इसके उपरांत उपन्यास बहार आफिस काशी के स्वनाम धन्य संचालक श्रीयुत शिवरामदास जी गुप्त ने भी इसके प्रकाशन तथा कहीं कहीं उचित संशोधन करने में जो परिश्रम उठाया है, इसके लिये हम उनके भी हृदय से आभारी हैं। तथा वे हमारे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

नाटक कुछ बड़ा हो गया है, इसमें संदेह नहीं, परन्तु फिर भी अभिनय करने वाले मित्र यदि चाहें तो "शिवाजी-यशवंत सिंह, "पागल शाहजहां" जैसे स्वतंत्र दृश्यों को छोड़ सकते हैं। अन्य नाटकों की भांति इसमें स्त्री पात्रों (Female Parts) की भरमार नहीं की गई है, इस विचार से कि नाटकों के अभिनय करने वाले, कालिज, स्कूल तथा प्राइवेट क्लबों (Private Clubs or Dramatic Societies) के विद्यार्थियों या बालकों के चरित्र भ्रष्ट न होने पावें।

भला या बुरा जैसा भी है यह नाटक आपके सामने है। अस्तु मातृभूमि की ओर मातृभाषा की पवित्र सेवा का लक्ष्य रखते हुये शहीद ज़ोहरा के आख़िरी दो लफ़्ज़ों की ओर हमारा ध्यान जाता है।

या ख़ुदा !

ये दोनों क़ौम हिन्दू और मुस्लिम आज मिल जायें।
वतन के वास्ते दोनों फटे दिल आज सिल जायें॥
इलाही अपनी रहमत से मिटादे दाग़ भारत का।
फले फूलै हरा होकर सदा ये बाग़ भारत का॥

यदि प्रेमी पाठकों ने इसे कृपा कर अपनाया तो मैं अपना श्रम सफल समझूगा और शीघ्रही अन्य वीर रस प्रधान नाटक सेवा में उपस्थित करूँगा।

विनीत निवेदक—

आगरा
१-२-१९२५

सुवर्णसिंह वर्मा
"आनन्द"

पात्र परिचय

पुरुष पात्र

श्री शिवाजी भौंसले—महराष्ट्र के उद्धारक, अन्त में क्षत्रपति नरेश।

तानाजी मौलसरे—शिवाजी के बालसखा।

कुँवर सूर्याजी—तानाजी के वीर पुत्र।

गुरु रामदास—महाराष्ट्र तथा शिवाजी के राजनैतिक गुरु।

निंबालकर—एक धर्मपरायण मराठा।

औरंगज़ेब—भारत सम्राट, शाहजहाँ का पुत्र।

दिलेरखां—औरङ्गज़ेब का वीर सेनापति।

दानिश्मन्द—आलमगीर का बुद्धिमान मंत्री।

शायस्ताखाँ—आलमगीर का मामा तथा सेनापति।

अली आदिलशाह—बीजापुर का नवाब।

अफ़ज़लखां—नवाब बीजापुर का सेनापति।

सलीम—नवाब बीजापुर का दुष्ट प्रकृति लड़का।

छमें—शंभाजी, राजायशवंत सिंह, शाहजहां, उस्मान, रहीमखां, भूषन, रामसिंह सर हेनरी ओक्सउन, डिगामा आदि आदि।

स्त्री पात्र

लक्ष्मी—निंबालकर की पुत्री, सूर्या जी की प्रेयसी।

सरस्वती—लक्ष्मी की मां।

ज़ोहरा—सलीम की बहिन।

जीजी बाई—शिवाजी की मां।

जहान आरा, रौशन आरा, नीति, सहेलियां आदि आदि।

प्रहसन पात्रावली

घसीटा—नाई, फिर ईसाई, यानी साहब बहादुर।

बेढब—घसीटे का मुंहफट नौकर।

मिस फ़ोकट—ईसाई अनाथ कन्या।

बीमा कम्पनी के एजेन्ट, लाला, पुलिस इन्सपेक्टर तथा जमादार आदि आदि।

ॐ

श्री छत्रपति शिवाजी

नाटक

रंग मंच।

(ईश्वर प्रार्थना)

सब— गाना।

दाता तेरो ही अधार है ॥ दाता०—
दाता करदे करदे करदे करम हम पर तू—
भारत का भार हटा दे—दुष्टन का मान मिटा दे—
भक्ति का भाव बढ़ा दे—कुदरत का कार दिखा दे—
तू ही निर्विकार है ॥ दाता०—
सर्व व्यापक प्रभो हर आन समाये तुम हो।
ज़र्रे ज़र्रे में अपनी शान दिखाये तुम हो॥
दीन दुखियों को बचाते हो विपद संकट से।
नज़रे 'आनन्द' मेहरबान लगाये तुम हो॥
कष्ट हरण, सृष्टि करन, राख शरण, तू परवर दिगार है ॥

(सब का जाना सीन का ट्रन्सफर होना)

अङ्क १ दृश्य १

जंगल।

(धर्म और नीति का प्रगट होना)

धर्म—अहा! धर्म की महिमा कैसी अपार है, इसका कैसा अपूर्व चमत्कार है। जिधर देखो उधर धर्म ही धर्म है, मनुष्यों में, देवताओं में, ऋषियों में गृहस्थियों में केवल धर्म ही का बल है। इसी का गौरव अटल है, कीर्ति अचल है और महिमा अतुल है:—

मर मिटे हैं सैकड़ों लाखों इसी की राह में।
हैं सदा दुख और काँटे देख लो गुमराह में॥
प्राण अर्पण करते हैं सब लोग इसकी चाह में।
धर्म की खातिर लगा है दाग देखो माह * में॥

नीति—नहीं २ स्वामी, नहीं। जो लोग धर्म पर प्राण अर्पण करते हैं, वे बड़ी भूल करते हैं। क्योंकि ईश्वर ने अपना धर्म जैसा पवित्र—नियम, किसी के बध के लिये, अथवा संहार के हेतु कदापि नहीं बनाया है।

धर्म—प्रिये नीति! इसमें तुमने ही कुछ भूल की है। सुनो, उस जगदीश्वर ने इस विश्व की रचना के प्रथम धर्म के चार खम्भे लगाये, उसी पर पञ्च महाभूत स्थिर ठहराये, तथा वृक्ष बनस्पति उगाये और जीव जन्तु पैदा कर दिखाये—

इस विश्व का आधार है, आधार धर्म का।
सब पुन्य और पुनीत है, आगार धर्म का॥

* माह—चाँद।

दुनिया की नीव में पड़ा आसार धर्म का।
व्यवहार धर्म का बड़ा आचार धर्म का॥

नीति—होगा ? धर्म का आचार बड़ा हो सकता है, किंतु यह तो इतिहासों से प्रमाणित ही है, कि धर्म के मार्ग पर चलने वाले सदा कष्ट उठाते हैं, दुःख पाते हैं। अपने दिल को मसोसते हैं और भाग्य को कोसते हैं:—

धार्मिक जनों की राह में जाले पड़े हुये हैं।
हर २ कदम पै जान के लाले पड़े हुये हैं॥
गूँगे बने हैं होठों पै ताले पड़े हुये हैं।
उभरे धरम के सीने में छाले पड़े हुये हैं॥

धर्म—यह तो ठीक है, कि सत्य की राह में काँटे, धर्म के मार्ग में दुःख, भलाई में आपत्ति अवश्य आती है। परन्तु बहुत थोड़े समय के लिये। क्योंकि जब सोना एक बार अग्नि में तप जाता है तो फिर वही कंचन का कंचन रह जाता है। विचार करो श्रीकृष्ण भगवान ने भी केवल धर्म—विस्तार के ही लिये अवतार धारण किया था और अधर्मी राक्षसों का संहार किया था। क्या वह वाक्य भूल गई,—

'यतो कृष्णस्ततो धर्मः यतो धर्मस्ततो जयः'।

नीति—प्राण नाथ ! इन बातों से मेरी शंका समाधान नहीं हुई। अब तक तो केवल धर्म का ही विषय था, परन्तु अब तो सत्य भी आ गये। मैं तो आप की मीमांसा से घबरा गई। जिस सत्य का आप इतना दम भरते हैं, वह भी संसार के भोले भाले जीवों को कष्ट देने में कुछ कम नहीं है। आप तो जानते ही हैं, कि इसी सत्य के कारण—

अङ्क १ दृश्य १

जंगल।

(धर्म और नीति का प्रगट होना)

धर्म—अहा! धर्म की महिमा कैसी अपार है, इसका कैसा अपूर्व चमत्कार है। जिधर देखो उधर धर्म ही धर्म है, मनुष्यों में, देवताओं में, ऋषियों में गृहस्थियों में केवल धर्म ही का बल है। इसी का गौरव अटल है, कीर्ति अचल है और महिमा अतुल है:—

मर मिटे हैं सैकड़ों लाखों इसी की राह में।
हैं सदा दुख और काँटे देख लो गुमराह में॥
प्राण अर्पण करते हैं सब लोग इसकी चाह में।
धर्म की खातिर लगा है दाग देखो माह * में॥

नीति—नहीं २ स्वामी, नहीं। जो लोग धर्म पर प्राण अर्पण करते हैं, वे बड़ी भूल करते हैं। क्योंकि ईश्वर ने अपना धर्म जैसा पवित्र—नियम, किसी के बध के लिये, अथवा संहार के हेतु कदापि नहीं बनाया है।

धर्म—प्रिये नीति! इसमें तुमने ही कुछ भूल की है। सुनो, उस जगदीश्वर ने इस विश्व की रचना के प्रथम धर्म के चार खम्भे लगाये, उसी पर पञ्च महाभूत स्थिर ठहराये, तथा वृक्ष बनस्पति उगाये और जीव जन्तु पैदा कर दिखाये—

इस विश्व का आधार है, आधार धर्म का।
सब पुन्य और पुनीत है, आगार धर्म का॥

* माह—चाँद।

दुनिया की नीव में पड़ा आसार धर्म का।
व्यवहार धर्म का बड़ा आचार धर्म का॥

नीति—होगा? धर्म का आचार बड़ा हो सकता है, किंतु यह तो इतिहासों से प्रमाणित ही है, कि धर्म के मार्ग पर चलने वाले सदा कष्ट उठाते हैं, दुःख पाते हैं। अपने दिल को मसोसते हैं और भाग्य को कोसते हैं:—

धार्मिक जनों की राह में जाले पड़े हुये हैं।
हर २ कदम पै जान के लाले पड़े हुये हैं॥
गूँगे बने हैं होठों पै ताले पड़े हुये हैं।
उभरे धरम के सीने में छाले पड़े हुये हैं॥

धर्म—यह तो ठीक है, कि सत्य की राह में काँटे, धर्म के मार्ग में दुःख, भलाई में आपत्ति अवश्य आती है। परन्तु बहुत थोड़े समय के लिये। क्योंकि जब सोना एक बार अग्नि में तप जाता है तो फिर वही कंचन का कंचन रह जाता है। विचार करो श्रीकृष्ण भगवान ने भी केवल धर्म—विस्तार के ही लिये अवतार धारण किया था और अधर्मी राक्षसों का संहार किया था। क्या वह वाक्य भूल गई,—

'यतो कृष्णस्ततो धर्मः यतो धर्मस्ततो जयः'।

नीति—प्राण नाथ! इन बातों से मेरी शंका समाधान नहीं हुई। अब तक तो केवल धर्म का ही विषय था, परन्तु अब तो सत्य भी आ गये। मैं तो आप की मीमांसा से घबरा गई। जिस सत्य का आप इतना दम भरते हैं, वह भी संसार के भोले भाले जीवों को कष्ट देने में कुछ कम नहीं है। आप तो जानते ही हैं, कि इसी सत्य के कारण—

हरिश्चन्द नरेश बिके चाण्डाल के निर्धन हो निज मान गँवाये।
मोरध्वज ने जेहि के बल पर निज पुत्र के ऊपर शस्त्र चलाये॥
शिव दधीच बलि ने सब जानत धर्म के हेतु बड़े दुख पाये।
कष्ट सहे कुछ मिले न 'आनन्द' सत्य की खातिर प्राण गँवाये॥

धर्म—हाँ, यह तो अक्षर २ सत्य है, किन्तुः—

छा कर के घटा सूर्य को जाकर है छिपाती।
पर सूर्य के गौरव को भला कब है मिटाती॥
सुख और दुःख का है सदा जोड़ा बना हुआ।
'आनन्द' से है एक जो सत में सना हुआ॥
प्रणवीर कभी दुःख को दुख मानते नहीं।
बस आज़माइश के सिवा कुछ जानते नहीं॥

नीति—ठहरिये २ स्वामी जी, आप तो बहुत कुछ कह गये। धर्म और सत्य की आँधी में मानो बह गये। मैं फिर कहती हूँ कि केवल धर्म में दुःख ही दुःख है, किन्तु नीति के समावेश में सदा सुख और जीत है। सुनियेः—

भगवान ने अर्जुन को बचाया था, किस तरह, बस नीति के बलपर।
और भीष्मसे योद्धा को सुलाया था, किस तरह, बस नीति के बलपर॥
कर्ण और द्रोण को भला गिरवाया, किस तरह, बस नीति के बलपर।
कौरव और जरासंध को मरवाया, किस तरह, बस नीति के बलपर॥

गाना।

धर्म—धर्म धुरन्धर धीरवान धनवान हुये देखो कैसे।
नीति—धर्म की खातिर कष्ट सहे नादान हुये देखो कैसे॥
धर्म—धर्म न छोड़ा प्राण तजे हठवान हुये देखो कैसे।
नीति—नीति की रीति नहीं जानी अज्ञान हुये देखो कैसे॥

धर्म—न कुछ ले आये थे ना कुछ भी साथ जायेगा।
धर्म ही एक इस दुनिया से साथ जायेगा।
नीति—सत्य है धर्म में इकबार जो पिस जायेगा।
जान से जायेगा और रंज से पछतायेगा॥

धर्म—नीति प्यारी—
नीति—मानो हमारी—
धर्म—प्यारा है धरम जहान में।
नीति—फँसते विचारे अज्ञान में॥
धर्म—क्यों, कुछ समझी, कुछ ध्यान में आया?
नीति—नहीं, कुछ भी तो नहीं।
धर्म—प्यारी सोचो विचार करो।
नीति—क्या सोचूं, क्या विचार करूँ प्राणनाथ!
धर्म—यही, कि नीति केवल धर्म का एक अंग है।

नीति—तो मैं कब आपकी अर्धाङ्गिनी होना अस्वीकार करती हूँ,सत्य तो यह है कि इस आरत भारत में किसी समय धर्म का पवित्र झंडा, पुन्य की हरीभूमि में बड़ी प्रबलता से लहराता था, किन्तु .....

धर्म—कहो २ प्रिये चुप क्यों हो गई?

नीति—क्या कहूँ प्राणनाथ, तब समय भी वैसा ही था। अधर्म के सन्मुख धर्म को और असत्य के आगे सत्य को सदा बिजय प्राप्त होती थी।

धर्म—पर अब क्या हुआ?

नीति—धन्य है, धर्म का स्वभाव सदैव से साधुता है, इसी लिये आप बड़े भोले हैं। आपको दूसरों के दोष तो दोष ही नहीं

प्रतीत होते। अब धर्म ही के पथ पर चलकर धर्म का नाश हो रहा है, जिस भारतवर्ष में अधर्म का नाम तक न था, उसी भारतवर्ष में आज धर्म का ह्रास हो रहा है। हाय, कैसा दारुण संताप है, इधर अत्याचार हो रहा है तो उधर श्रीमती गौ माता का संहार हो रहा है।

धर्म—(चौंककर) क्या कहा क्या कहा, गौ माता का संहार?

नीति—सुनिये और भी सुनिये। उधर दीन दुखी धर्म वेत्ता वेद पाठी ब्राह्मणों को जबरदस्ती अधर्मी बनाकर कष्ट पहुँचाया जाता है, तो इधर सती साध्वी अबलाओं पर अत्याचार किया जाता है।

धर्म—हैं! हैं! अत्याचार और आर्य देवियों के ऊपर? यह मैं क्या सुन रहा हूँ! प्रभो, यह सब किसका अपराध है? यह मेरी कौन सी अज्ञानता का पाप है?

नीति—प्राण प्यारे, अब आप समझे?

धर्म—समझा क्या?

दोष यदि हो भूल से तो जानता मैं कुछ नहीं।
मैं कभी दोषी नहीं हर्गिज़ नहीं बिलकुल नहीं॥

प्रिये! इसमें मेरा क्या दोष है, जो धर्म वेद शास्त्रों ने गाया, मनू भगवान ने बताया और पंडितों ने समझाया, वही मैंने कर दिखाया।

नीति—प्राण प्यारे! आप यथार्थ कहते हैं। किन्तु धर्म के भोलेपन के कारण विधर्मी लोगों ने अनुचित लाभ उठाया। अंत में वह समय आया, कि सब कुछ उलटा कर दिखाया। यही है स्वामी, अधर्म की माया।

धर्म—प्रिये ! तुमने मेरे हृदय में जो शंका उत्पन्न कर दी है, उसका समाधान अत्यन्त आवश्यक है।

नीति—बहुत शीघ्र। स्वामी ! कुछ ऐसी व्यवस्था कीजिये, कि इस आर्य धर्म—रूपी मिष्टान को अधर्मी राक्षस हड़प न कर जायें, अर्थात—

तलवार का बदला लिया जाये अगर तलवार से।
घूंसे का हो जबाब जब घूंसे के वार से॥
प्रतिकार हो जब धर्म का नीति की धार से।
शायद कि बच जाये धरम आज इस मंझधार से॥

धर्म—क्या कहा हिंसा, प्रतिकार, बदला ? नहीं कभी नहीं हो सकता। कारण कि यह सब आर्य धर्म के विपरीत है।

नीति—तभी तो कहती हूँ, स्वामी ! कि नीति की सदा जीत है।

धर्म—वह कैसे ?

नीति—चलिये, धर्म और नीति के एक मात्र संचालक इस संसार के रचयिता भगवान शिवजी से ही इस शंका का समाधान करा लीजिये।

धर्म—शिव जी भगवान से ? चलो २ यह सर्वोत्तम विचार भी है और समयानुसार भी है।

(पर्दा फटता है शिवजी का दरबार और न्यायालय)

द्वारपाल—धर्मराज की जय ! द्वार पर बड़ा हाहाकार हो रहा है।

शिवजी—क्या बात है, कैसा उत्पात है ! लाओ मेरे सामने लाओ।

(द्वारपाल का जाना और रंभाती हुई गौका और कसाई का तलवार लेकर आना)

शि०—ठहरो २ यवन सूत ठहरो। मुझे भी इस अत्याचार का कारण बताओ।

गौ—बचाओ २ हे जगत के स्वामी ! मुझे बचाओ !

यवन—हट जाओ २ मेरे सामने कोई न आओ।

(भगवान् के इसारे से दो दूतों का कसाई को पकड़ना)

(दौड़ते हुये ब्राह्मण का तथा पीछे २ मौलवी का चोटी काटने को आना)

मौ०—करो मुसलमाँ काटो चोटी मज़हब नेक हमारा है।
छोड़ो मत काफिर की बोटी मतलब एक हमारा है॥

ब्रा०—धाओ २ महादेव अब तुम बिन कौन हमारा है।
राक्षस धर्म बिगाड़ें अपना रहा न कहीं सहारा है॥

शि०—ठहरो २ मुग़ल सिपाही। यह तुमने क्या सोचा है, जो इस गरीब ब्राह्मण को सता रहे हो।

ब्रा०—दीनानाथ ! इस अधर्मी से हमारा उद्धार करो। शरणागत का बेड़ा पार करो। भगवन् ! विधर्म के प्रचार के लिये ही हमारे प्राण जा रहे हैं। इस संसार में चारों ओर अंधकार छाया है हम आप की शरण आ रहे हैं।

मौ०—ठहरो हम बताते हैं। हम अपने धर्म के लिये इसी तरह ख़ून बहाते हैं और पाक़ शरियत के मुताबिक अपना मज़हब बढ़ाते हैं।

(रोती हुई स्त्री का पीछा करते हुवे सिपहसालार का आना)

स्त्री—नहीं सुनता, नहीं सुनता, कोई हमारी प्रार्थना नहीं

सुनता। भारतवर्ष की पवित्र स्त्रियों का सतीत्व इस तरह भङ्ग हो, फिर भी तुम्हारी दया की जागृति नहीं होती दीनानाथ!

बेबस हैं हम बेकस हैं हम लाचार हुये हैं।
हम पर न जानें क्या २ दुराचार हुये हैं॥
सब तरह से जीवन से हम लाचार हुये हैं।
इस देश में हे नाथ! ये आचार हुये हैं॥

नीति—प्राण प्यारे, अब देखो आपने वर्तमान भारतवर्ष की स्थितिः—

धर्म ही की साधना से धर्म ही का नाश है।
धर्म रखकर प्राण देना भी कठिन विश्वास है॥

धर्म—क्या देखूँ, किस तरह देखूं, किन आँखों से देखूँ—

गऊ ब्राह्मण की दशा पर स्त्रियों के हाल पर।
को न रो देगा जमाने की निराली चाल पर॥

नीति—इसी से तो मैं कहती थी कि नीति का समावेश अत्यावश्यक है। [धर्म का दौड़ कर शिव जी के पैरों में पड़ना]

शिवजी—हैं! यह कैसा शिष्टाचार है। धर्मराज, आज यह कैसा व्यवहार है?

धर्म—महाराज! मेरी सब प्रकार हार है। अब तो आप ही के शरण में बेड़ापार है।

नीति—श्रीमान्! भारतवर्ष का उपकार, आर्य्यजाति का उद्धार।

शिव०—धर्मराज! हमें सब कुछ ज्ञात है, तुम भी सत्य पर दृढ़ हो और नीति देवी भी सत्य ही कहती हैं। फिर तुम्हें

तो याद है कि "यदा यदा हि धर्मस्य" फिर धर्म की ओट में अत्याचार करना पापी जनों की लालसा का एक मात्र परिणाम है। यथार्थ में ये सब धर्म मेरे ही पास आने के मार्ग स्वरूप हैं; किंतु सब के अलग रूप हैं। यही तो ज्ञान योग और कर्म योग की मीमांसा का भेद है।

ध०—तो भगवन्! उद्धार का उपाय?

शि०—प्रियवर धर्म! और पुत्री नीति! गौ ब्राह्मणों पर अत्याचार और सती स्त्रियों पर बलात्कार के अनेक उदाहरण मिले हैं। अस्तु हम इस बार एक ऐसी पवित्र आत्मा को भारत वर्ष में अवतार स्वरूप भेजते हैं, जिसके आचरण में धर्म और नीति का पूर्ण मिश्रण हो। वही डूबते हुये आर्य्य धर्म का उद्धार करेगा, गौ ब्राह्मणों का उपकार करेगा।

धर्म, नीति—भगवन्! वह कौन सी देव मूर्ति होगी?

(भवानी देवी का प्रकट होना)

भवानी—वह इन्हीं बाघम्बर वेषधारी विकराल मूर्ति शिव जी के अंश से वीर योद्धा शिवा जी का अवतार होगा—और उसी दिव्य मूर्ति से आर्यवर्त का उपकार होगा।

(आवाज़ का होना शिवा जी का प्रकट होना देवी का तलवार देना)

भवानी—आर्य धर्म की मान मर्यादा की रक्षा के लिये यह भवानी का प्रसाद है। जो ब्राह्मण और स्त्रियों की रक्षा के निमित्त है। यदि इसका सच्चा मान होगा, तो सदा तुम्हारा कल्याण होगा।

शि०—(शिर झुका कर तलवार लेना) जैसी माता की आज्ञा।

भवानी—अपनी जाति और धर्म का उद्धार करो-बैरियों का संहार करो। दुखियों का उपकार कर भारत का बेड़ा पार करो—यही मेरा आशीर्वाद है।

(पुष्प वर्षा)

गाना।

अब आरत भारत टेरत है, वनवारी गिरधारी सुखकारी।
भारत दीन भयो दुख पावै, तुम्हें छोड़ कहाँ हाहा खावे॥
तुम बृजवासी हो सुखराशी, वारी बनवारी गिरधारी।
धर्म बिगाड़ें आर्य अधर्मी, कैसे हैं ये हठधर्मी॥
आतुर धावो प्रान बचाओ, वारी बनवारी गिरधारी।
अब 'आनन्द' महा दुख पावे, तुम्हें छोड़ स्वामी कहाजावे॥
करें अधर्मी यों बेशर्मी, वारी बनवारी गिरधारी॥

टेब्ला

अङ्क १ दृश्य २

शिवा जी का मंत्रणा भवन

(शिवा जी के साथ २ उनके मुसाहिब और दिलेरखाँ का आना)

शि०—(पत्र पढ़ कर) तो तुम देहली से ही आ रहे हो, मुग़ल दूत ?

दिलेर०—जी महाराज !

शि०—और औरंगज़ेब ने ही तुम्हें भेजा है ?

दिलेर०—मेरी वफादारी का कामिल यक़ीन दिलानें के लिये शाहज़ादा औरंगज़ेब का यह दस्ती परवाना काफी सबूत होगा। (देना)

शि०—(पढ़ कर) हैं, क्या यह सत्य है, आश्चर्य ! भाई के सर पर भाई का ख़ून बोल रहा है। बिचारी आपत्ति ग्रसित प्रजा एक ओर हा हा कार कर रही है और इस अन्याय के अंधेरे में एक विश्वास घातक पुत्र, अपने वृद्ध पिता के प्राण हनन का भयंकर उपाय सोच रहा है ? क्या सच मुच पृथ्वी फटने वाली है ? यह ब्रह्माण्ड गिर पड़ेगा ? आकाश टुकड़े २ हो जायगा ? अत्याचार, भीषण अत्याचार। भगवन् ! सर्व शक्तिमान !! तुम्हारे राज्य में अन्यायियों का प्रचण्ड प्रताप इस भीषणता से बढ़ रहा है। पिता की शांत आत्मा का बदला उसी का पुत्र इस नीचता और अत्याचार से दे ? कितना लज्जा जनक, घृणास्पद और नीचता पूर्ण व्यवहार है। ओह !

ताना—महाराज ! कदाचित संसार में मनुष्यत्व और आदर्शों के नीचे गिरने का यह पहला ही प्रमाण है।

शि०—क्यों नहीं। जिस बूढ़े शाहजहाँ ने कष्ट सहन करके इस औरंगज़ेब का पालन पोषण किया, क्या वह बूढ़ा शाहजहाँ एक पल भर भी यह सोच सकता था, कि एक दिन यही औरंगज़ेब अपने बाप को कैद करने के लिये बिल्ली की तरह घात लगाने की चेष्टा करेगा। किस लिये ! इस तुच्छ धन के लिये ? अत्याचार और बल पूर्वक बादशाह कहलाने के लिये ?

अच्छा मुग़ल दूत, तुम अपने शाहज़ादे से कह देना कि हम हिन्दुओं में पितृ-भक्ति का भाव ईश्वर-भक्ति से भी बढ़कर समझा जाता है। इस लिये वे इस अनुचित काम में सहायता की इच्छा से हमारा भरोसा न करें।

दूत—तो क्या महाराज किसी किस्म की मदद न करेंगे?

शि०—मदद और हम से? अगर मुल्क का एक चोर, बदमाशों का सरताज और गुण्डों का सरगना, सहायता का पात्र हो सकता है तो बेशक औरंगज़ेब भी हम से सहायता माँगने का अधिकारी हो सकता है। लेकिन हम सब हिन्दू हैं और हमारा हिन्दू धर्म सदा से यही शिक्षा देता चला आया है, कि पीड़ितों की सहायता और अत्याचारी को उचित दण्ड देना ही हमारा धर्म है।

दूत—महाराज! बुज़ुर्ग बादशाह तो औलादे अकबर, यानी दाराशिकोह को तख़्तो ताज देना चाहता है। मगर ईमान पसन्द औरंगज़ेब ने दारा को सरे आम काफिर साबित कर दिया है। आपको तो अच्छी तरह मालूम ही है कि औरंगजेब कैसा लायक़ नेक और ईमानदार शाहज़ादा है। ऐसी हालत में आज वह बादशाहत की ख़्वाहिश करता है तो क्या बेजा है?

शि०—क्या खूब! ईमान और दीन की आड़ में बड़े भाई का ख़ून बहाना, पिता के विरुद्ध तलवार उठाना, मुग़ल दूत यह सब तुम्हारे मज़हब में ही जायज़ हो सकता है। किन्तु हम हिन्दुओं को ऐसा करना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव भी है।

दि०—महाराज ! औरंगज़ेब एक शाहज़ादा है, उसने मुझे आपके सामने भीख माँगने या गिड़गिड़ाने के लिये हर्गिज नहीं भेजा है। मगर फिर भी गौर कीजिए इस आलमे कोताह में इन्सान के काम इन्सान एक दिन ज़रूर आता है। यही वजह है कि हमारे शाहज़ादे ने आप जैसे बहादुर और नेक शख़्स से फ़र्ज़े शाहाना बजा लाने के लिये और आईन्दा जमाने को दिली-मुहब्बत से जकड़ने के लिये आपको याद फर्माया है। मैं नहीं समझ सकता कि आप इस कारेनेक में इस कदर क्यों हिचकिचाते हैं।

शि०—मुगल दूत ! हमें तुम्हारे मन्त्रणा की आवश्यकता नहीं। हमने एक बार कह दिया कि इस पैशाचिक कार्य में हम औरंगज़ेब को उनके वृद्ध पिता के विरुद्ध खड़े होने में कभी सहायता न करेंगे ! क्यों ताना जी ठीक है न ?

ताना०—महाराज ! ठीक और अक्षर २ ठीक है। किन्तु, इस बावले कुत्ते के सन्मुख आपका गीता सुनाना निरर्थक है। कारण, पिता को गद्दी से उतार कर स्वयं उस पर विराजना कदाचित इस विद्या को इनकी मातायें इन्हें जन्मघुटी में ही पिला दिया करती हैं। जभी बाबर, हुमायूं, अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ की बनाई हुई सीढ़ी पर चढ़ने के लिये शाहजादा औरंगजेब भी बिल्ली के बच्चे की तरह छींके पर मुंह मारने के लिये घूर रहा है। यह इनकी पैतृक नीति है।

दूत—तो मैं आप की तरफ से बिलकुल इनकार कर दूँ ?

ताना०—जी हाँ और इस तरह। (सिर हिलाना)

शि०—बे शक।

दूत—मेरी राय नाक़िस में महाराज कुछ ग़लती कर रहे हैं। क्योंकि निहायत जल्द बफ़ज़्ले खुदा रब्बुल आलमीन जब हमारे शाहज़ादे देहली के तख्ते ताऊस पर जल्वा फरमाँ होंगे तो महाराज को जरूर नीचा देखना पड़ेगा।

शि०—क्या कहा, नीचा देखना पड़ेगा?

दूत—यानी पछताना पड़ेगा।

शि०—मुग़ल दूत! तुम दूत की मर्य्यादा से बढ़ रहे हो। याद रक्खो तुम किसी दूसरे से नहीं वरन् शिवाजी भौंसले से बातें कर रहे हो।

दूत—तो शाहज़ादा औरंगजेब का सिपहसालार माफी चाहता है (जाना)

शि०—ठहरो २ सिपहसालार साहब, इस उन्माद का उत्तर भी अपने शाहज़ादे को दे देना (ताना जी के कान में कुत्ते०)

दूत—यानी वह क्या?

शि०—वह यह कि एक सेनापति को दूत के वेष में भेजना राजनीति के विरुद्ध है। इस लिये हमारी तरफ़ से औरङ्गज़ेब से यह संदेशा कह देना।

दूत—कौन सा संदेशा?

ताना०—(कुत्ता लाकर) महाराज यह दिल्ली का शाह स्वान हाजिर है।

शि०—लो ताना जी मौलसरे इस पत्र को इस कुत्ते की पूंछ में बाँधकर सारे नगर में घुमाओ और सब को यह कह कर समझा दो, कि जो पापी पुत्र अपने पिता को धोखा देने की

चेष्टा करता है उसके लिये हमारी ओर से यही उसका पुरस्कार है।

दूत—क्या! मेरे शाहज़ादे की इस क़दर तौहीन (तलवार पर हाथ ले जाना)

ताना—रहने दीजिये रहने दीजिये, महाशय—इस नकली सर्प को बांबी में ही रहने दीजिये—हम भी ऐसे काठ के डंडों से बहुत खेले हैं। जाइये ठंडे २ तशरीफ़ ले जाइये

दूत—तो इस तौहीन का ऐवज जल्द दिया जायगा (प्र०)

शि०—मित्रो! नवाब बीजापुर के अत्याचार और शाहज़ादा औरंगजेब के दुराचार असहनीय होते जा रहे हैं। इस हेत, माता भवानी की आज्ञा है, कि दुष्टों को उनकी करतूत का फल चखाया जाय। और वीर जाति मावलों के संगठन से देश के ऊपर से विजातीय शासन का भार हटाया जाय।

शत्रुओं ने जो बहाई हैं ये नदियाँ पाप की।
देश पर छाई घटायें आज दुख संताप की॥
कर रहे हैं वे प्रतीक्षा अब हमारे शाप की।
वीरता दिखलाइये अब है ज़रूरत आप की॥
देश को हलका करो इन बैरियों के भार से।
शत्रुओं के दांत खट्टे करदो इस तलवार से॥

(सब का तलवार चमकाते हुये जाना)

अङ्क १ दृश्य ३

मकान निवालकर

(सरस्वती श्री कृष्ण जी की मूर्त्ति के पास हाथ जोड़े खड़ी हैं)

सर०— गाना

जगदीश अब दया कर दुख से हमें बचालो ।
अपने दया के दामन में दीन को छिपालो ॥
उठता नहीं है संकट भारी शिला पड़ी है ।
गर दुख नहीं उठे तो दुख से हमें उठालो ॥
ज़ालिम हजार हाथों से जुल्म ढा रहे हैं ।
स्वामी तुम्हारे सेवक संकट उठा रहे हैं ॥

दुख, संकट, आपदा, अत्याचार, बस यही हमारे उठने बैठने के साथी हैं । आह ! कैसा कठोर संताप है । कल जहाँ सहस्रों भिक्षुकों को प्रति दिवस अन्न दान, वस्त्र दान दिया जाता था, वहाँ पर आज तीन तीन दिवस से निराहार हो रहा है । स्वर्ग समान आनन्द मयी गृहस्थी का सर्वनाश हो रहा है । विधाता ! कैसी अपार तेरी लीला है ! हा प्रभो ! मैं तो सब कुछ कष्ट सहन कर लूँगी, किंतु चिन्ता तो है उन प्राणनाथ, ईश्वर समान स्वामी की, जिन्हें हम दुखियों के कारण बड़े २ संकट उठाने पड़ रहे हैं ।

हमारे पेट की खातिर वे निर्वल होते जाते हैं।
हमारे सोच में दिन रात दुर्बल होते जाते हैं॥
न मालूम क्या बिगाड़ा हमने परमेश्वर तुम्हारा है।
हमें तो सुख दुख में बस तुम्हारा ही सहारा है॥

प्रभो! एक ओर संकट का पहाड़ टूट रहा है दूसरी ओर पुत्री के बिवाह का विचार एक असहनीय हो रहा है। भगवन्! जब हम अपनी क्षुधा तृप्ति के लिये एक एक दाने को लाचार हैं तो इसका कैसे बेड़ापार है! हा, भूख से व्याकुल उदास मुख वह इधर ही चली आ रही है। आवो बेटी, लक्ष्मी, क्या सोच रही हो?

(लक्ष्मी का प्रवेश)

लक्ष्मी—माता जी! सोचती हूँ कि अबतक पिता जी क्यों नहीं आये? वे तो संध्या तक आने को कह गये थे। मुझे तो सगुन अच्छे नहीं दीख पड़ते हैं! कहीं नवाब आदिलशाह के दरबार में कुछ उपद्रव तो नहीं हो गया?

सर०—नहीं पुत्री! मैने उन्हें भली भाँति समझा दिया है। कह दिया था कि जहाँ तक हो सके नवाब की शर्तों को स्वीकार ही करना चाहिये। बिपत्ति के समय उद्दंड या अधीर न होना चाहिये। आशा है, परमेश्वर भला करेंगे। परन्तु पुत्री! तेरा मलीन मुख देखकर मेरा हृदय फटा जा रहा है। जाओ बेटी घर में जो कुछ हो उसीसे भोजन बनाओ, अपनी क्षुधा मिटाओ।

ल०—(नीचा सिर करके) नहीं माता! मुझे भूख नहीं लगी है।

स०—पुत्री! तू कब तक योंही क्षुधा मार कर दुःख और चिन्ता से अपनी आग बुझायेगी? कब तक अपनी आत्मा को

संतोष रूपी अन्न से शान्त बनायेगी ? जा, मेरा कहना मान, कुछ भोजन करले।

ल०—माता! आज्ञा उल्लंघन तो नहीं कर सकती हूँ, परन्तु इच्छा बिल्कुल नहीं है। (प्रस्थान)

सर०—आह! एक वह शुभ शान्ति का दिन था, जब भूमि थी सम्पति थी, कई सेवक हाथ बांधे खड़े रहते थे, परमेश्वर की दया से चारो ओर आनन्द की वर्षा हो रही थी, एक दिन आज है जो हम कंगाल भिक्षुकों की भाँति एक २ दाने को तरस रहे हैं। बीजापुर के नव्वाब ने सब सम्पति हरण करली, दुर्भाग्य ने जीवन निर्वाह का मार्ग बन्द कर हमें दर २ की ठोकरें खाने को छोड़ दिया। किस लिये! केवल एक धर्म की रक्षा के लिये? ओ शैतान, नवाब! याद रख, जिस तरह हम गरीबों को सता कर तू ऐश्वर्य का सुख भोग रहा है, उसी तरह समझ ले कि एक दिन तेरी राक्षसी नवाबी भी भगवान के प्रकोप सागर में बह जायेगी। और तेरे अभिमान की खोटी कामना तुझे ख़ाक में मिलायेगी।

जिसने दिया है तुझ को बल वो हमको भी देगा।
दी है विपत्तियाँ तो इन्हें फेर भी लेगा॥
उसके लिये छोटे बड़े सब हैं सदा समान।
उसकी नजर में एक हैं हिन्दू व मुसलमान॥

(आना निवालकर का)

निवा०—सत्य है। हिन्दू हो या मुसलमान, मूर्ख हो या बुद्धिमान, किन्तु उस प्रभु के सन्मुख सभी एक समान हैं।

सर०—(सिर झुकाकर) आगये प्राणनाथ ! कहिये, कहिये, क्या आज्ञा मिली, नव्वाब की क्या इच्छा है ?

नि०—आज्ञा और इच्छा ? प्रिये, क्या कहूँ हमारी आपदा बड़ी ही भयंकर है। उसकी योजना बड़ी ही कठिन है—

बिगड़ा हुवा है आज मुकद्दर गरीब का।
उभड़ा हुवा है मेरा समंदर नसीब का॥
जकड़ा हुवा हूँ हर तरह दुख से जहान में।
इस बेबसी ने जकड़ा है ताला जबान में॥
लाचारियों के बोझ से मैं हिल नहीं सक्ता।
चलता हूँ इन पैरों से मगर चल नहीं सक्ता॥

सर०—अंत में उसने क्या कहा स्वामी ! क्या हमारा भाग्य बिलकुल सो गया ? या हमारे भले दिनों का अन्त हो गया ?

नि०—हाँ हो गया, मेरे सुखों का, आशाओं का, अभिलाषाओं का ही नहीं, निराशाओं का भी अन्त हो गया। किन्तु फिर भी यह सोया हुआ भाग्य, फूटा हुआ प्रालब्ध, टूटी हुई आशा की डोर सुधर सकती है। उसकी शर्तें स्वीकार करने पर हमें सुख शान्ति मिल सकती है ?

सर०—वो कौनसी शर्तें हैं ?

नि०—उसकी शर्तें एक नहीं वरन् दो दो हैं।

शर्तें क्या है आपत्ति है एक बिजली है एक पत्थर है।
कुछ खोट नहीं दुनियाँ का बस मेरी किस्मत का चक्कर है॥

सर०—कृपाकर कुछ तो कहिये !

नि०—प्रिये, सुनते ही हृदय विदीर्ण हो जायेगा। अच्छा हृदय को कठोर बनाकर सुनो। बीजापुर के दरबार से यह आज्ञा पत्र मिला कि बनाम पुरुषोत्तम निबालकर, सरकार बीजापुर आली जाह अली आदिलशाह के दरबार में हाजिर होकर हस्ब जैल शरायत कुबूल करो और हजूर के सच्चे खैर ख्वाह साबित होने के बाद हजूर नवाब की मर्जी के मुताबिक अपने लिये मौरूसी जमीन जायदाद व ओहदा पंच हजारी बख्शवाकर सरकार को खुश करो।

स०—इसके आगे क्या शर्तें हैं ?

नि०—पहली शर्त है कि मुसलमान हो जाओ और दूसरी शर्त है कि लक्ष्मी का बिवाह सलीम के साथ करदो। बस इस शब्द के उच्चारण से मेरे नेत्रों से रक्त की वर्षा होने लगती है। मेरे रोम २ से अग्नि बरसती है।

स०—ओह, क्या मेरी पुत्री और यवनम्लेक्ष के साथ बिवाह ? नहीं कदापि नहीं हो सकता। प्राणनाथ ! यदि हमें संसार का समस्त धन और सुख मिले तो भी मैं यह आज्ञा स्वीकार नहीं कर सकती।

हम हैं गरीब मुफलिसो मुहताज बनेंगे।
ईश्वर जिन्हें बनायेगा सरताज बनेंगे॥
अधर्म करेंगे न बेईमान बनेंगे।
मर जाँयगे लेकिन हम मुसलमाँ न बनेंगे॥

नि०—सत्य है प्रिये ! तुम्हारे साहस के लिये आशीर्वाद है।

हिन्दू पने का नाम न हर्गिज लजायेंगे।
हिंदू धरम को दाग न बिलकुल लगायेंगे॥

जिन्दा रहे तो एक दिन सबको दिखायेंगे।
हम जाति देश धर्म पर गर्दन कटायेंगे॥

स०—प्राण नाथ !

क्षत्री की टेक टेक है क्षत्री की आन से।
कोई शाँ निराली नहीं क्षत्री की शान से॥
हम देश के कल्याण में मिट जायँगे अगर।
मर जायेंगे तो भी मरेंगे आन बान से॥

नि०—तो हमें क्या करना चाहिये ?

सर०—स्वामी ! हम और करही क्या सकते हैं। बस अब हमें शीघ्र यहाँ से राजस्थान की ओर प्रस्थान कर देना ही उचित है।

नहीं कोई हमारा मेहरबाँ सारे जमाने में।
समझते खेल हैं जालिम किसी का दिल दुखाने में॥
किया जिसने हमें पैदा वही हमको बचा लेगा।
वो अपने मेहरे दामन में हम सबको छिपा लेगा॥

नि०—तुम्हारा बहुत ठीक विचार है। अब हमें यहाँ किसी के विश्वास पर ठहरना बेकार है। क्योंकि बिपत्ति में सब अपने पराये हो जाते हैं। फिर नवाब के भय से हमें कोई अपनी शरण में भी स्थान न देगा। इस आपदा में उस नर पिशाच का डर कोने कोने में समा रहा है, छोटे बड़े सब उसी का पक्ष ग्रहण करेंगे-मेरी कुछ भी न सुनेंगे, जिसका राज्य है लोग उसी की दोहाई देंगे, सत्य असत्य का न्याय न करेंगे।

स०—किन्तु प्राण नाथ। क्या आप महाराष्ट्र कुल तिलक बाना जी और शिवा जी जैसे वीर को भी भूल गये ?

नि०—नहीं। क्या कोई अपने दुःख के समय अपने सहायक को भूल सकता है? किन्तु यही विचार है कि कहाँ वे मुट्ठी भर बहादुर बीर और कहाँ नवाब आदिलशाह के ५०००० जवानों की शमशीर?

सर०—पर वो कुँवर सूर्या जी के साथ हमारी लक्ष्मी के सम्बन्ध का विचार?

मि०—हाँ यह विचार सर्वथा उचित है और समयानुसार ठीक भी है! अच्छा कल हम जाने के पहले लक्ष्मी को ताना के वीर पुत्र की भेंट कर देंगे।

सर०—अवश्य, मेरे कहने का यही तात्पर्य है कि आपत्ति के समय जहाँ तक हम हलके हो जायँ अच्छा ही है। वे लोग तो बिल्कुल राजी हैं ही और हम भी उनके उपकार को कभी भूल नहीं सकते। वो देखिये, सामने से पुत्री इधर ही आ रही है।

ल०—(स्वगत) सूरत कहाँ से बदलूँ खुश कर दिखाऊँ कैसे।
घर में नहीं है सामाँ भोजन बनाऊँ कैसे।

(पिता को देख कर) ओ हो, पिता जी आप आ गये? आज तो आपने बहुत बिलम्ब लगाया। अच्छा माता! देखो यह भगवद्गीता में क्या लिखा है?

सर०—क्या लिखा है? पुत्री!

ल०—बड़ी ही उत्तम और शिक्षा प्रद बातें लिखी हैं माता।

सर०—वह क्या?

ल०—लिखा है कि, "परित्राणमय साधूनां" अर्थात साधू भले पुरुषों की रक्षा के निमित्त और दुष्टों के मान-मर्दन के

लिये स्वयं परमेश्वर अवतार धारण करके आते हैं। देखो कैसी अच्छी बात है माता!

नि०—किन्तु पुत्री! यह सब बातें पुस्तकों में ही लिखने की है। सत्य तो यह है कि परमेश्वर भी दीनों की पुकार देर में सुनता है। वोही बलवान अन्याइयों के हाथ से अपने निर्बल भक्तों को कष्ट दिलवाता है, वही पत्थर से चींटी को मसलवाता है। (दरवाजे पर आवाज किवाड़ खोलो ३) हैं! द्वार पर कौन पुकार रहा है?

सर०—कौन महाशय हैं? आप क्या चाहते हैं?

नि०—भगवन्! कौनसी आफत अब मुझ पै आने वाली है। क्या इस आपदा में और कोई घटना घटने वाली है। ज्ञात होता है ये कोई मुसलमान सिपाही हैं। प्रिये! अब तुम और लक्ष्मी एक ओर हट जावो या यहाँ से उस ओर निकल जावो।

(दरवाजा तोड़कर सिपाहियों का मय सलीम का अन्दर आना)

स०—ओ बेवकूफ कमीने! सरे दरबार नवाब आदिल शाह की बेइज़्ज़ती करना, सरकारी अहदनामे को बच्चों का खेल समझ कर नफरत से फाड़ फेंकना, फिर गरूर से इतराना और घर में बैठकर मजहका उड़ाना, क्या खेल है जाना? अभी तुम्हें इसका हाल मालूम हो जायगा। लाओ लाओ, मेरी अमानत मुझे फेर दो।

नि०—क्या मैं अपने सामने शाहजादे को देख रहा हूँ?

सलीम—जी अभी आपने देखा ही क्या है। माशाअल्ला! (नशे में झूमकर) अभी तो आप देखेंगे और देखेंगे भी क्या? जनाब, मालूम पड़ जायगा।

नि०—किन्तु एक निर्धन मराठे के घर में इस तरह निधड़क किवाड़ तोड़ कर घुस आने का कारण ?

स०—जी कारण अभी मालूम पड़ जायेगा !

मौलबी—जनाव शाहज़ादा साहब ! आप एक छोटे आदमी के मुँह क्यों लगते हैं ? मैं अभी इसे आनन फानन में समझा दूँगा, इसके गरूर का भूत उतार दूँगा।

स०—अच्छा तो बिसमिल्ला आपही समझा दीजिये।

नि०—आफते सितमो जौर दिखायेगी ये किस्मत।
क्या २ न रंग और खिलायेगी ये किस्मत॥
खोटी हुई तकदीर और टेढ़ी हुई किस्मत।
सौ आँसुओं से हमको रुलायेगी ये किस्मत॥

मौलबी—बेशक रुलायेगी और जरूर रुलायेगी। अगरचे तुम्हारे हिमाकत की कारिस्तानी इसी तरह बुलन्दी पर इतरायेगी तो एक दिन जरूर तुम्हें आठ २ आँसू रुलायेगी।

(सलीम का लक्ष्मी की ओर हाथ का इशारा)

स०—ओ मेरे काफिर फरिश्ते की हूरे अरब, ज़रा इधर तो आ, मेरी आखों से अपनी आँखें तो लड़ा।

सर०—दूर हो शैतां कमीना तू और तेरा बाप है।
हिंदुवानी के लिये मुसलिम का छूना पाप है॥

स०—अजी बड़ी बी ! अगर तुम इस गुलशने लौज को हमें बख्श दोगी तो हम भी अल्ला मियाँ के यहाँ तुम्हारे सब गुनाह बख्शवा देंगे।

मौ०—(निबालकर से) अजी जरा आप मुझसे गुफ्तगू करें।

नि०—बस दूर ही खड़े रहो शैतानों ! मैं समझ गया कि तुम सब नीच पापी चांडाल हो।

शर्म है पाजी कमीनों नाबकारों के लिये।
एक है तलवार मेरी तुम हजारों के लिये॥

(तलवार पर हाथ रखकर)

सलीम—पकड़ लो, बाँध लो, इस पाजी मरदार को। अगर यह सीधी तरह राह पर न आये तो इसे ठोकरों से उड़ा दो।

नि०—(तलवार निकाल कर) अच्छा तो सँभल जावो (लड़ना और तीनों को गिराना)

लक्ष्मी०—बचा २ ऐ परमेश्वर! अपने भक्तों को बचा। दीनबन्धु ! अपने शरणागत की रक्षा को तू शीघ्र प्रकट होजा।

मिटादे नाम जालिम का जमाने की सिपाही से।
मिटाते तेरे बंदों को हैं जालिम बेहयाई से॥

मौ०—(सलीम के कान में) सरकार, हाथ पैर की ताकत से अक़्ल की ताकत ज़्यादा है।

सलीम—ठीक है, जिस्मानी ताक़त से फतह करना मुहाल है। मेरा तो वही पुराना ख्याल.........

सब०—कमाल है, कमाल है।

मौ०—बस, बहादुर तुम्हारी लड़ाई का खात्मा होगया। तुमने इन लोगों पर फतह पाई, इसी का नाम है बहादुरी। शाबास, शाबास !

सब०—कमाल है, गजब है।

मौ०—बस २ हम सब की दिली खराश तलवार की

नोंक से निकल गई । लिहाजा हाथ मिलावो और हमें रुखसत अता फरमावो ।

सलीम—दिली मुहब्बत व इनाम शाहाना के लिये अपने दस्त मुबारिक फैलाओ ।

नि०—क्या आप ईमान और इन्साफ की रू से कहेंगे कि मेरे साथ आज से शराफत का बरताव किया जायगा ?

सलीम—बेशक, हम बहादुर हैं, कोई चोर और डाकू नहीं हैं।

नि०—अच्छा तो आइये, मौलवी साहब! [तलवार फेंकना]

मौ०—बिस्मिल्ला ! तशरीफ लाइये ।

(हाथ मिलाते वक्त सलीम के इशारे से निवालकर को सबका पकड़ना)

सलीम-जकड़ लो, बाँध लो, गुस्ताख काफिर कमीने को।
उड़ादो ठोकरों से चूर कर दो इसके सीने को ॥

नि०—आह धोखा, कपट, अन्याय !

सर०—हा ! देख तो तू पिता यह घोर अत्याचार है।
फिर भी सोता है कहाँ कैसा बना रखवार है ॥

धाओ २ हे त्रिलोकी नाथ ! हम दीनों की रक्षा को शीघ्र धाओ । इस अत्याचारी जगत हमें उठालो ।

सलीम—कहो कैसा जोर आजमाते थे ? खुद काफिर होकर हमें काफिर बनाते थे ? कहता हूँ अब भी मेरा हुक्म मान जाओ, मुसलमान बन जाओ और इस खूबसूरत लड़की का मेरे साथ निकाह पढ़ाओ । वर्ना·······

नि०—धिक्कार है तुम्हारी सज्जनता पर ! याद रख ओ घमण्डी सलीम ! जिसने आज मेरी यह दशा बनाई है वही,

एक दिन तुझे भी इससे अधिक आपदाओं का आखेट करेगा, तेरे अत्याचार का तुझे दण्ड और हमारे सन्तोष का हमें हर्ष प्रदान करेगा।

सलीम—(लक्ष्मी की ओर जाकर) आइये २ तशरीफ लाइये !

सर०—(कटार निकाल कर) खबरदार, ओ म्लेक्ष कुत्ते, जो मेरी ओर पग उठाया। मैं नागिन बनकर डस लूंगी जो मेरी ओर हाथ बढ़ाया। तू नहीं जानता कि:—

हम हैं अवला हिंदुओं की हिंदुओं के वास्ते।
कर्वला सबला हैं हम तुम पापियों के वास्ते॥

स०-बहादुर सर्दार! क्या देर है, करदो इसका भी बेड़ापार

मौ०—क्या औरत जात पर हाथ उठायें सरकार ?

सर०—ओ दुष्टो ! अन्याइयो !! जिस तरह तुमने मेरे प्राण-नाथ को कपट द्वारा बन्दी किया है, मैं तुम्हारे बहकावे में नहीं आसकती।

सलीम—धोका हमने दिया या तुम्हारी इस नादान लड़की ने ? जरा इसकी आँखें तो देख···(४ पीछे से सिपाहियों का पकड़ लेना)

सर०—हा परमेश्वर ! कहाँ है तेरी करुणा, करुणा नाथ !

सलीम—(लक्ष्मी से) क्यों जी गुलफाम···············

लक्ष्मी०—बस २ दूर रह चांडाल, अपने अपवित्र मुख से अधिक डींग न मार···········

सारे ब्रह्मांड को इक चीख से जगा दूँगी।
तेरी नैया को मैं इक श्राप से डुबा दूँगी॥

मजा धोके का किसे कहते हैं चखा दूँगी।
रक्त हिन्दू का जिसे कहते हैं दिखा दूँगी॥

(सलीम की तलवार म्यान से निकाल लेना)

सलीम—वल्लाह, मेंडकीरा जुकाम पैदा शुद। मालूम हुआ कि इस कौम में कोई मर्द नहीं है। इस लिये औरत अपने नन्हें २ नाजुक हाथों से तलवार चलाना सीखती हैं। वर्ना..............

लक्ष्मी—ओ नीच, पापी! हिन्दू जाति का बच्चा २ शेर मर्द है। किन्तु तुम जैसे नामर्दों पर तो हिन्दू स्त्रियाँ भी हाथ उठाते शरमाती हैं:—

मर्द दुश्मन के लिये हिन्दू बहादुर काफी हैं।
तुम से जनखों के लिये हम औरतें ही काफी हैं॥

सर०—नि०—धन्य है, पुत्री तुझे धन्य है!

सलीम—ओ बेवकूफ लड़की, अगर तू तलवार नहीं रखती है तो देख, तेरे माँ बाप की गरदन उस तलवार की एकही वार से धड़ से अलग जा गिरती है। (इशारा करना)

लक्ष्मी—हा, ईश्वर! यह मैं क्या देख रही हूँ। पिता जी २............

सब०—बस दूर रह! (आगे बढ़ना)

सलीम—देख, अब भी मान जा। हमें तलवार देकर अपने माँ बाप को छुड़ा ले। वर्ना.........

लक्ष्मी—तो क्या तुम प्रतिज्ञा करते हो कि मेरे माता पिता को अपने बन्धन से मुक्त कर दोगे?

सलीम—बेशक छोड़ देंगे—बशर्ते कि तू तलवार देकर अपनी हार मंजूर करे।

लक्ष्मी—(तलवार देकर) लो।

जिससे डरते हो वही हथियार तुम्हें देती हूँ।
प्राण की भीख का धन्यवाद तुम्हें देती हूँ॥

लो, दाता हो तो दाता तुम्हें हम किस तरह जानें।
दो माँगती हूँ भीख मैं माँ बाप की जानें॥

लो, मुझपर करो उपकार मैं धन्यवाद दूँगी।
मैं आजीवन तुम्हें हृदय से आशीर्वाद दूँगी॥

(तलवार फेंककर घुटना के बल बैठ कर)

दया करना हम दुखियों पर है उचित आप को।
मत हमें कष्ट दें ज्यादा करो सन्ताप को॥
करके अत्याचार दुखियों पर न बढ़ाओ पाप को।
मैं भिखारिन माँगती हूँ भीख में माँ बाप को॥

सलीम—पकड़ लो, बाँध लो, इस पाजी नाहंजार को।

सर० नि०—हा अज्ञान बालिका! यह तूने क्या किया? इनपर विश्वास कर क्यों अपने आपको फँसा दिया!

लक्ष्मी—मीठी दगा है मुख पै गो पेट में छुरी है।
धोखे की जीत जीत नहीं हार से बुरी है॥

दुष्टों! एक अबला के ऊपर अन्याय और अत्याचार करके यों इतराना? लज्जा करो, चिल्लू भर पानी में डूब मरो।

जावो लड़ोगे तुम क्या हम नारियों के साथ।
चूड़ी पहन के बैठना घर नारियों के साथ॥

सलीम—चूड़ी पहन के बैठाने का हाल अभी थोड़ी देर में मालूम हो जायेगा।

लक्ष्मी—तो आप की क्या इच्छा है ? इस अन्याय अत्याचार का क्या कारण है ?

मौलवी—सिर्फ दीने इस्लाम की पाक बुनियाद को मजबूत करना। काफिरों को घटाना और अपने मजहब की तरक्की कर अपनी क़ौम को बढ़ाना।

लक्ष्मी—क्यों साहब ! मजहब भी कोई ऐसी वस्तु है जिसपर अनुचित दबाव डालकर अपना विश्वास दिलाया जाय ? अत्याचार द्वारा अपने धर्म का पाठ पढ़ाया जाय ?

मन के भीतर जो न बैठे वो समझ लो ढोंग है।
रक्तोपात से बढ़े धर्म नहीं वो ढोंग है॥
यदि रहा योंही उपद्रव तुम्हारे अन्याय का॥
सत्य जानो अब तुम्हारा शीघ्र पतन हो जायगा !

मौलवी—ओ नादान लड़की ! तू इन बातों को क्या जाने। दीन और धर्म को क्या पहिचाने।

शरियत में लिखा है करो काफिर से मुसल्माँ।
है फर्ज मुसल्माँ करो काफिर से मुसल्माँ॥
बनजाय जहाँ तक मुसल्माँ बनाओ खूब।
सौ काफिरों से बढ़के है एक खूने मुसल्माँ॥

लक्ष्मी—महाशय ! जिस धर्म की नींव निर्दयता और अत्याचार से डाली जायगी, समझ लो वो मजहब थोड़े ही दिनों में अवनति के सागर में डूब जायगी।

मौलवी—है फर्ज हमारा यही शरियत में लिखा है।
मजबूर हैं हम चूंकि यही हुक्मे खुदा है॥

लक्ष्मी-ओ म्लेच्छो! आपस का द्वेषभाव सिखाता है वैर करना।
मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर करना॥
हम सब उसी के पुत्र हैं वो सब का पिता है।
तेरा खुदा है वो तो हमारा भी खुदा है॥

सलीम—बस, खामोश हो। ज्यादा जबाँदराजी न कर। मौलवी साहब, अब बंदा रुखसत होता है......

मौ०—तो इस खाकसार के लिये क्या हुक्म होता है?

सलीम—या तो इन्हें कलमा पढ़ाइये, या जहन्नम को भिजवाइये।

नि०—(उठकर) क्यों धोखे से पकड़ कर बहादुरी दिखाते हो? क्यों इस निर्लज्जता पर भी इतने फूले जाते हो?

मौल०—(चोटी काटकर) काफिरो, ज्यादा बकवाद न करो। वादा करो कि मैं ताउम्र मजहब इस्लाम का पाबंद रहूँगा।

नि०—कदापि नहीं।

मौ०—देखो मार डाले जावोगे?

नि०—भय नहीं।

मौ०—खाल उधेड़ ली जायगी।

नि०—चिन्ता नहीं।

मौ०—मगरूर काफिरो, समझ कर जबान हिलाओ। अब भी वक्त है मान जाओ।

नि०—नहीं, हरगिज नहीं।

मौ०—अब भी बन मुसलिम बगरना मौत के घर जायगा।
हिन्दुओं में कौन अब तुझको बचाने आयगा॥

नि०—

बचाना उसको गर मंजूर होगा खुद बचायेगा।
वो अपने दीन भक्तों को मुसीबत से छुड़ायेगा॥

मैं केवल तुमसे इतना समय चाहता हूँ, कि एकबार उसकी प्रार्थना कर लूं। अपने दीन बन्धू का ध्यान धरलूं।

मौ०—मूर्ख ! तेरे बुतपरस्ती ने ही तुझे तबाह कर रक्खा है। सर्दार तय्यार हो जाओ।

उठादो इसको और इसके खुदाको आज दुनिया से।
मिटादो काफिरों के नाम की आवाज दुनियाँ से॥

(लक्ष्मी को ले जाना)

नि०—प्रभो ! जाती है शरणागत की कैसे लाज दुनिया से।
सर०—बचालो नाथ जाते हैं वृथा वृजराज दुनिया से॥

(जल्लाद का तलवार उठाना, ताना और शिवाजी का प्रकट होना)

ताना—बस, खबरदार जो हाथ उठाया।

शिवा०—सावधान, जो एक पग आगे बढ़ाया। धन्य है हिन्दू बीर ! धन्य है—भारत रमणी ! धन्य है। मूर्खो:—

कसौटी में कसो देखो कि मजहब इसका कहते हैं।
वह मजहब धन्य है जिसमें बहादुर ऐसे रहते हैं॥

(एक तरफ से लक्ष्मी और रस्सी में बँधे सलीम को सूर्या जी का लाना)

मौलवी—शतानों, तुम नहीं जानते कि यह किसके हुक्म में खलल डाल रहे हो।

सूर्याजी—खूब अच्छी तरह जानता हूं। तुम्हें और तुम्हारे हुक्म दाँ को अच्छी तरह पहचानता हूँ—जाओ कुशल है कि मेरे सम्मुख से चुपके चले जाओ परंतु ध्यान रहै—

अब हिन्दुओं को नीचा दिखाया न जायगा।
धोखे से मुसलमान बनाया न जायगा॥
यों जब्र करके कल्मा पढ़ाया न जायगा।
फूंको से ये चिराग बुझाया न जायगा॥

(क्रोध से दोनों का देखना)

टेब्ला।

अङ्क १ दृश्य ४

मकान।

(घसीटा नाई का साहेब के लिबास में आना)

घसीटा०—मंजूर दस्त बस्ता हो मेरी दुआ सलाम।
छोटे बड़ों सबों को घसीटे का राम २॥
पहिले तो थे घसीटे एक मामूली बारबर। *
पर अब जनाब बन गये मिस्टर से मास्टर॥

प्यारे बन्धुओं, अज़ीजो, आदरो! एक दिन था, कि घसीटा नाई देहातों के कपर गट्टुओं की दाढ़ी बालों का मूड़न दो २ रोटियों पर किया करता था। पैर दबाता था, घर

---

* नाई।

में झाडू लगाता था, तिस पर भी धमकियों की तलवारें, घुड़कियों की बोछारें, खाता था। मगर भगवान् भला करे उस सफेद रीछ पादरी का जिसने गिरजे में लेजाकर मेरी नहन्नी और पेटी को धता बताया और घिस्सू से मिस्टर घसोटा बनाया। अर्थात् एक काले आदमी को cent percent अंग्रेजी पारसल बना दिखाया।

अब तो अकड़ के चलते हैं हम ज़ोर शोर से।
और लेते हैं सलाम भी आँखों की कोर से॥
गो दुम नहीं वे दालका बूदम ज़रूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

इस बूट की बलिहारी! इस टोप की वाह २!! कोट पतलून की शाबाश!!! इस टोप में वह जादू है, कि आगे निकली हुई नोक चेहरे का सब ऐब ढकलेता है, पैरों पर जमा हुआ ६ इंची मैल मिस्टर बूट की मिहरबानी से परदे के अन्दर छिप जाती है। गुदड़ी बाजार का यह काला कोट काले आदमी को गोरा बनाता है। स्वयं मुझे देखो कि बन्दा पढ़ने के नाम A. B. C. भी नहीं जानता, फिर भी लोगों में साहब बहादुर कहलाता है।

पढ़ने के नाम खुद नहीं बक़लम ज़रूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

गाना।

मैं साहब कैसा आला, मैं आला फैशन वाला।
मैं गिटपिट करके, सिटपिट करके, काम बनाने वाला॥ मैं साहब०
इस साहबी के ठाट में, रोटी भी चल बसी।

पतलून के लालच में, लगोंटी भी चल बसी ॥
क्या क्या रुश्राब श्रा रहे हैं मेरे ठाट के।
धोबी के गधे बन गये, घर के न घाट के ॥ मैं साहब०-

हैं! यह सामने से कौन मरदूद चले श्रा रहे हैं? लड़ते झगड़ते इसी तरफ को कदम बढ़ाये श्रा रहे हैं। बस श्रब जरा मुछों को ऐंठकर इन्हें श्रपनी शान दिखानी चाहिये, हिन्दुस्तानी श्रादमी पर अंग्रेजी रोश्राब जमानी चाहिये।

(दो इनश्योरेंस एजेन्टों का लड़ते हुए आना)

१ एजेन्ट—नहीं, पहिले मुझे बातें करने दो!

२ एजेन्ट—जी नहीं, पहिले मुझे बातें करने दो।

घसीटा—वाह २ यह तो मसाला ही कुछ श्रौर है।

१ एजेन्ट—नहीं पहले मुझे गुफ्तगू करने दो।

२ एजेन्ट—नहीं पहले मुझे टॉक करने दो।

१ एजेन्ट—हुजूर! बन्दगी, पहिले मेरी सुनिये।

२ एजेन्ट—गरीब परवर! सलाम, पहिले मेरी सुनिये।

१ एजेन्ट—जी हुजूर, पहिले मैं श्राया हूँ।

२ एजेन्ट—नहीं साहब! पहिले मैं श्राया हूँ।

१ एजेन्ट—गधा कहीं का। साहब! पहले मैं श्राया हूँ।

२ एजेन्ट—उल्लू कहीं का। साहब! पहले मैं.........

१ एजेन्ट—नालायक, साहब, पहिले मैंने सलाम किया।

२ एजेन्ट—लुच्चा कहीं का, साहब, पहिले मैंने बन्दगी की।

घसी०-शट अप! तुम लोग साहब के श्रागे शोर मचाता है।

१ एजेन्ट—हुजूर, बात यह है.........

२ एजेन्ट—सरकार, श्रर्ज़ यह है.........

१ एजेन्ट—ग़रीब परवर, मैंने सुना है.........

२ एजेन्ट—अन्न दाता, मैंने सुना है.........

घसीटा—जल्दी बोलो, तुमने क्या सुना है?

१ एजेन्ट—हुजूर, अपनी जानका.........

२ एजेन्ट—ज़नाब ! अपनी जिन्दगी का.........

१ एजेन्ट—बीमा करायेंगे ?

२ एजेन्ट—इन्श्योर करायेंगे ।

घसीटा—ठहरो २ एक २ आदमी बोलो।

१ एजेन्ट—अच्छा तो हुजूर पहिले मैं.........

२ एजेन्ट—नहीं हुजूर पहिले मैं.........

घसीटा—(स्वगत) मालूम हो गया, कि यह कोई जान का बीमा कराने, वाले किसी लाईफ इंश्योरेंस कम्पनी के एजेन्ट हैं। मगर बन्दा भी इन से दो जूतियाँ आगे बढ़ा हुआ है। सारंगी का रोब तबले की जोड़ी पर चढ़ा हुआ है।

पैसा न सही फिर भी घसी टुम ज़रूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ ॥

(दोनों एजेन्ट एक दूसरे को दरवाजे तक ले जाते हैं)

१ ए०—हुजूर ! मेरी कंपनी का ४० लाख का कैपीटल है।

घसीटा—बहुत अच्छा.........

२ ए०—हुजूर ! मेरी कंपनी का २ करोड़ का कैपीटल है।

घसीटा—बहुत खूब.........

१ ए०—मेरी कंपनी का रेट बहुत ही कम है.........

२ ए०—हुजूर ! मेरी कंपनी का रेट बिल्कुल डाऊन है।

घसीटा—(स्वगत) क्या खूब ! यह बीमे वाले तो प्लेग के चूहों की या हैजे के कीड़ों की तरह दिन रात ज़र्ब, गुणा multiply होते जाते हैं।

१ ए०—हुजूर ! मेरी कंपनी मरने वाले को फौरन ही रुपया दे देती है।

२ ए०—हुजूर ! मेरी कम्पनी मरने के पहिले ही रुपया दे देती है और उस जन्म के लिये कुछ वज़ीफा बाँध देती हैं।

घसीटा—वाह २ ! स्टेज हैं बृन्द्राबन औ यह दोनों पंडे हैं।
जिजमान हैं घसीटे और यारों यह संडे हैं॥

१ ए०—हुज़ूर ! मेरे पास दो Policies बहुत अच्छी हैं।

२ ए०—हुजूर ! मेरे पास एक Policy ऐसी है जो एक साल बाद दो बन जाती हैं।

घसीटा—वाह २ तुम्हारी पौलसी भी अंडे देती है जो साल के बाद १ की २ बनजाती हैं। अच्छा, हमको जल्द समझाओ कि तुम्हारा क्या मतलब है।

१ एजेन्ट—अच्छा पहिले मैं समझाऊँगा।

२ एजेन्ट—नहीं पहले मैं.........

१ एजेन्ट—(दूसरे के मुँह पर हाथ रख कर) हुजूर ! आप हमें १० साल तक ५०) माहवार दें तो १० साल बाद हमारी कम्पनी आपको............

२ एजेन्ट—(उसके मुख पर हाथ रखकर) नकद २५ हज़ार देगी और अगर आप दूसरे ही साल में टें हो गये या १-२-३ हो गये तो आपको.........

घसीटा—(चपत मारकर) तुम्हारे बाप को.........

१ एजे०—क्यों ? पाया गर्मा गर्म ! हुज़ूर ! खुदा न ख्वास्ता भगवान आपका भला करे, आपके दुश्मनों की मौत आजाये तो हम आपको नकद १० हजार देंगे।

२ एजेन्ट—२० हज़ार देंगे।

१ एजेन्ट—२५ हज़ार देंगे।

२ एजेन्ट—३० हज़ार देंगे।

घसीटा—अच्छा.........

१ एजेन्ट—(एक तरफ ले जाकर) फरमाइये।

२ एजेन्ट—(अपनी तरफ ले आकर) कहिये।

१ एजेन्ट—(अपनी तरफ खैंचकर) इरशाद!

२ एजेन्ट—(अपनी ओर) हुकम!

घसीटा—अरे मुझे कोई सैण्डो या राममूर्ति समझ रक्खा है जो इस ओर उस ओर खैंच २ कर ऊधम मचा रखा है। फिर भी-

ताकत नहीं तो क्या हुआ रुस्तम ज़रूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

१ एजे०-हुजूर! मेरी कम्पनी बड़ी ईमानदार है। यह लीजिये पान खाने को।

२ एजेन्ट—हुजूर! मेरी कम्पनी बड़ी पुरानी है। लीजिये चाय पीने को।

१ एजे०—लीजिये, डाली के लिये।

२ एजे०—लीजिये, दावत के लिये।

(दोनों का जेब में रुपये डालना)

गाना

दोनों—हम तो साहब का बीमा करायेंगे।
घसीटा—मेरा मरदूद कीमा बनायेंगे॥
दोनों—बिछा लालच का जाल, होंगे पूरे निहाल।
इसे दोज़ख का रस्ता दिखायेंगे।

घसीटा—करें मुझको कंगाल, बचे रोटी न दाल।
हाय मुझको ये संडे फसावेंगे॥

१ ए०—मैं पानी का, अग्नी का गिरने का।
मरने का इन सब का बीमा कराऊँ॥

२ ए०—मैं दोज़ख का, जन्नत का, शादी का।
लड़के का इन सब का बीमा कराऊँ॥

घसीटा—इन दोनों ने फाँसा, दे चकमा वो झाँसा,
मैं क्यों करके पीछा छुड़ाऊँ॥

घसीटा—मुझे छोड़ो।
१ ए०—असत्य है।
२ ए०—राम २।
१ ए०—सत्य है।
दोनों—मार २ बीमा करायेंगे॥ हम लो०—

(दोनों का घसीटा को कंधे पर उठाकर ले जाना)

अङ्क १ दृश्य ५

दरबार ।

(औरंगजेब सिंहासन पर विराजमान है। आलिम और उमरा सभी यथा स्थान बैठे हैं ।)

और०—अहा, खुश नसीबी, खुश किस्मती ! हजार हजार शुक्र है उस पाक परवरदिगार आलमे का, जिसकी मेहरबानियों के कवी बाजू ने अपने इस नाचीज बन्दे को शाही तख्त ताऊस पर बिठा कर इस कदर इज्जत बख्शी है ।

शुक्र है तेरा खुदाया आलमे परवर दिगार ।
तेरे बन्दों को सहारा है तेरा परवर दिगार ॥
कौन किसका होता है इस आलमें कोताह में ।
ज़ेर कदमों में पड़े हैं हम तेरे परवर दिगार ॥
तोड़ कर खामोश करदे ख़ार तू परवर दिगार ।
किश्तिये इस्लाम करदे पार तू परवर दिगार ॥

आज इस शाही तख़्त पर बैठते हुये मेरे जिस्म में मुगलिया खून जोश खा रहा है। दिमाग चकरा रहा है। समझ में नहीं आता कि क्यों मुझ पर एक बड़ा भारी खौफ तारी है। खुदाया, क्या यही इनामे ताजदारी है ?

दानिश मन्द—जहाँपनाह ! आप इस खुशी के वक्त में

यह कैसी बातें कर रहे हैं ? हजूर के इक़बाल से इस वक्त सारे मुल्क में सन्नाटा छा रहा है-दुश्मन तो क्या, शैतान तक भी नजर नहीं आ रहा है।

और०—तुम गलती करते हो दानिशमन्द ! मेरा खौफ दिली खौफ है जो फौज के डर से, जिस्मानी कूवत से या तोप और बन्दूकों से जाने वाला नहीं। मेरा ख़ौफजदह दिल अपनी आकबत और पाक दीन इस्लाम की ओर से लरजा जा रहा है।

दानिश०—हुजूर एक सच्चे मुसलमान हैं।

और०—यही एक खास सबब है कि उठते बैठते, सोते जागते बराबर रैयत की भलाई के खयालात में ही मुहिब रहता हूँ।

दानिश०—हजूर की नेक नीयती और सआदत मंदी तो काबिले तारीफ है। फिर भी मेरी नाकिस राय के मुताबिक अगर जहाँ पनाह अपने बुजुर्गों के कदीमी उसूलें सल्तनत को जारी करदें तो शायद हिन्दू मुसलमान दोनों की दिली मुहब्बत की गाँठ, जो जहाँ पनाह के ना वक्त जज़िया जारी कर देने से ढीली पड़ गई है—फिर से ताकत पाये। और मुमकिन है कि हुजूर को कामिल उरुज बख्शवाने में कामयाब हो जाये।

और०—दानिश मन्द ! औरंगज़ेब नादान नहीं है, दुनिया दारी से कतई अंजान नहीं है, जिन तरीकों से हमारे बुजुर्गों ने हिन्दुस्तान की हुकूमत की है, मैं उसे तरजीह नहीं दे सकता। ग़ौर करो कि काफिर टुकड़ खोर हिन्दुओं के डर से, महज

आइन्दा बगावत के अन्देशे से,—उनकी लड़कियों के साथ शादी करना किस कदर बुजदिली है। इर असल मुगलिया खान्दान में इसी दोगली नसल से यहाँ तक तनज्जुल वाकय हुआ है। लेकिन औरङ्गजेब एक कट्टर मुसलमान है। वह बिना खौफ काफिरों के मन्दिरों को हत्तुल इमकान बरबाद कर के उनकी जगह मसज़िदे तैयार करायेगा। इन काफिरों की नाचीज लड़कियों से अपने पाक महलों को नापाक न बनायेगा।

दानिश०—हुजूर! दुरुस्त फरमाते हैं। मगर एकाएक इस किस्म की तबदीली देख कर रिआया में बगावत फैल जाने का अन्देशा है।

और०—ओह, मुतलक परवाह नहीं। औरङ्गजेब कभी इन गीदड़ धमकियों से डरने वाला नहीं। दानिशमन्द, तुम जानते हो कि काँटे से काँटा निकालने के लिये ही तो मैंने बुड्ढे वेवकूफ राजा जयसिंह व राजा बीकानेर जैसे खुर्राटों को रख छोड़ा है।

चोबदार—(आकर) हुजूर का इकबाल बुलन्द हो। सिपह सालार दिलेरखाँ हाजिर होना चाहते हैं।

और०—आने दो। (जाना चोब दार का) देखो दक्खिन से क्या खबर आती है।

दिलेर०—(आकर) मुबारक, मुबारक, हुजूर का अलसबे शाही तरक्की फरमाये!

और०—क्या खबर है सिपहसालार! तुम्हारे इन्तजार में हम निहायत बेकरार थे।

दिलेर०—गुलाम हुजूर का अदना ताबेदार है। मगर दक्खिन की बुरी खबर है।

और०—यानी, वो क्या बदख़बर है?

दिलेर०—हुजूर ने इस कदर जल्द तख्त पर कब्जा करने की उजलत नाहक की। मेरी राय में तो अगर हुजूर चन्द दिन और सब्र करते और मुख़ालफत की आतिश से तमाम मगरूर हस्तियों को नेस्त नाबूद करके तब इस तख्त पर जलवा फरमाँ होते—तो आज की ख़ुशी हजार हा गुनी महसूस होती।

और०—तो क्या दक्खिन के सरदार औरङ्गज़ेब के सामने सर झुकाने से इनकार करते हैं?

दिरे०—जी इनकार ही नहीं—बल्कि वे इस तख़्त शाही को नफरत से देखते हैं। यानी शाही हुकूमत के जलाल को हिक़ारत की ठोकर मारते हैं।

और०—(तलवार निकाल कर) क्या कहा ठोकर? मुझ हिन्दुस्तान के बादशाह के साथ बजाय अदब के यह गुस्ताख़ी! आखिर वो कौन है बदकिरदार?

दिले०—हुजूर! वही शिवा जी भौंसला मराठा सरदार।

और०—शिवा जी भौंसला? दिलेर खाँ, अपनी तरफ से कुछ भी घटा बढ़ा कर कहने की जरूरत नहीं है। हकीकत वाकया साफ साफ करो बयान—आखिर वो क्या कहता है शतान?

दिले०—जहाँपनाह! सुनी हुई नहीं इन आँखों से देखी हुई बातें करता हूँ बयान। सरकार के हुक्म के मुताबिक मैं शिवाजी

के पास ब हैसियत एक शाही क़ासिद के गया और निहायत अदब के साथ जनाब का खत पेश किया। लेकिन उस मक्कार ने सब कुछ सुन लेने के बाद सिर हिला हिला कर एक एक लफ़्ज़ मदद से दस दस दफ़ा इन्कार कर दिया।

और०—महज मदद से इन्कार—यह तो कुछ बेजा नहीं है उसकी अक्ल के मुताबिक ठीक ही है।

दिले०—और उस गुस्ताख़ मगरूर काफिर ने यह कहते हुये, कि हम हिन्दुओं के मजहब में वालिद के खिलाफ हाथ उठाना बहुत बड़ा गुनाह है। जनाब का खत एक जंगली कुत्ते की दुम में बाँध कर सारे शहर में मय ढिंढोरे के घुमा दिया।

और०—(साँस लेकर गुस्से में) ओफ, इस कदर तौहीन—

लाजिम है भेड़िये को करे भेड़ का शिकार।
बकरी की क्या मजाल करे शेर का शिकार॥
तौहीन तख़्तो ताज है अहकाम की तौहीन।
तौहीन अगर मेरी है इसलाम की तौहीन॥

सब०—(एक स्वर में) इसलाम की तौहीन !

और०—बस ओ नाहंजार, सब्र कर तुझे साँप के बिल में हाथ डालने का मजा मिलेगा। इसलाम की सरे बाजार तौहीन ! जब तक मुगलों का एक २ बच्चा जिन्दा है, हरगिज़ मुमकिन नहीं।

दानिश०—बेशक, चूहे और शेर का मुकाबिला हरगिज मुमकिन नहीं।

दिले०—बहुत ठीक जनाब आली ! शिवा जी दर हक़ीकत

एक पहाड़ी चूहा है। मगर उसके सर पर मौत सवार है, इसी लिये मुगल बादशाह के मुकाविले में खड़ा होने को तैयार है।

और०—क्या कहा मुकाबला, बराबरी? और, इन्तकाम ये सब हमेशा बराबर वालों में ही ज़ेबा देते हैं।

शायस्तखां—जहांपनाह! अगर चे हुज़ूर के सामने इस खाकसार की लफ्फाजी विलकुल वेकार है—मगर फिर भी बन्दा हुक्म का तलबगार है।

और०—मैं समझ गया मामूजान, आपकी बहादुरी मुझसे छिपी हुई नहीं है। बेहतर है, इस काफिर मगरूर को आपही ठिकाने लगा दीजिये, फौरन आप दक्खिन की तरफ कूँच कर दीजिये।

शाय०—बजा इरशाद सर्कार!

और०—मगर याद रखिये, आप मेरे लिये लड़ने नहीं जा रहे हैं या बादशाहत के लिये जङ्ग करने नहीं जा रहे हैं बल्कि—

शाय०—दीन इसलाम के लिये।

और०—बहुत ठीक! अच्छा तो आप लोग तशरीफ ले चलिये। (सब का जाना)

और०—(खुद) औरङ्गज़ेब २! जरा सोच समझ कर कदम बढ़ाने की जरूरत है। तख़्त पर कब्जा करना और बादशाहत का इन्तिजाम करना दोनों जुदा २ काम है। हिन्दुस्तान में आकर इतनी दूर से जो मुगलों ने सिक्का जमाया है—उसमें खुदा की गैबी मदद हमारी शराफत और बहादुरी का काफी सबूत है—।

हल०—(आना हलाकू खाँ का)। अल्ला हुजूर को सलामत रक्खे। शाही जलाल बुलन्द इकबाल हो।

और०—कौन हलाकू खाँ, कहो क्या ख़बर है, हमारा ख्याल था, कि तू वाकईअकल मन्द है।

हला०—हुजूर की इनायत और खुदा के करम से तज़ीम का झण्डा बुलन्द है। हुजूर को एक खुशखबरी सुनाने आया हूँ।

और०—वह क्या ?

ह०—हुजूर ! राजा जयसिंह के रिश्तेदारियों में यह कह दिया गया है कि उन्होंने दीन इसलाम कबूल कर लिया है। इस अफवाह को बेवकूफ राजपूत लोगों ने सच भी मान लिया है और बमूजिब हिन्दू धरम के उनका चारो ओर से खाना पीना सब बन्द करा दिया। यानी उनके हकीकी बिरादरान ने उन्हें अपनी नजरों से गिरा दिया। (सलाम करके जाना)

और०—(हंस कर) हा हा ! खूब किया। महज जबान हिला देने से जिस हिन्दू मजहब में फर्क आता है, उसी हिन्दू मजहब की कमजोरी एक दिन हिन्दुवों को नेस्त नाबूद कर देगी। ओ बुड्ढे जय सिंह ! मुझे कल की सी बात याद है कि एक दिन दारा के साथ तू भी मुझे मारने की घात लगा रहा था। बेवकूफ, वह तेरा वक्त था--अब मेरा वक्त है। बस अगर तेरी मज़हबी जड़ ढीली हो गई तो शाखें कितने दिन जिन्दा रह सकती है। अगर औरङ्गजेब जिन्दा है तो एक दिन हिन्दुवों का नामो निशान भी मिट जायगा। (जाना)

अङ्क १ दृश्य ६

रास्ता

(शिवा जी व ताना जी बातें करते आते हैं)

ताना०—तो क्या यह बात ठीक है कि मुसलमान आपके पिता महाराज शाह जी को बड़ा कष्ट दे रहे हैं?

शिवा०—ताना जी, यही कारण है कि कल शाम को मैंने ४गुप्तचर बीजापुर की ओर भेज दिये हैं।

ताना०—आप की प्रत्येक बातें आश्चर्य जनक होती हैं। अच्छा ये गुप्तचर आपने किस विचार से भेजे हैं?

शिवा०—सुनो, फ़ाडके जी तो बीजापुर दरबार में नौकरी करेंगे और वहाँ राज्य की अंतरीय कार्यवाही से तथा पिताजी की हर समय की दशा से हमें सूचित करेंगे। और शेष तीनों व्यक्तियों में से कुछ फौजी जमादार की हैसियत में रहेंगे और कुछ, पिता जी की सेवा में या उनके पहरे पर रहेंगे।

ताना०-धन्य है शिवाजी! तुम्हारी गम्भीरता व सहनशीलता को धन्य है। सूर्य्य मर्यादा छोड़ सकता है, चन्द्रमा छिप सकता है किन्तु आप अपने नियम को कदापि भङ्ग नहीं कर सकते। भाई सत्य कहता हूँ कि जिसदिन तुम अपने मुँहसे "चढाई" का एक शब्द निकाल दोगे इन म्लेच्छों का नाम भी भारत वर्ष में न पावोगे।

(२) यह लीजिये महाराज! नवाब साहब का ताज!

(पैरो के पास रखना)

शिवा०—इस संदूक में क्या चीज है, सोनदेव जी?

सोन०—महाराज! इसमें कल्याण के शाहज़ादे की तक़दीर। मुगलों के अत्याचार का बदला, और हमारी खुशी का प्रमाण पत्र।

शिवा०—शीघ्र कहिये वह क्या है?

सोन०—महाराज! क्या कहूँ। आपको तो मालूम ही है कि कल्याण के नवाब फैजुल्ला खाँ ने अपनी हिंदू प्रजा को कितना कष्ट पहुँचाया! हिन्दू बच्चों को दीवारों में चुनवा देना, हिन्दू अबलाओं का सतीत्व नष्ट करना, मंदिरों के सर्वनाश में हाथ बंटाना इत्यादि उसने अपना खेल बना रखा था········

शिवा०—(हाथ मलकर) बस २ सोनदेव! मेरे रक्त में क्रोध का प्रवाह आ रहा है! क्रान्तकारी हृदय प्रतिशोध के लिये रक्त को उछाल रहा है। यदि उबल पड़ेगा तो महामारी से भी अधिक विकाल रूप धारण करेगा। अब तुम जल्द कहो क्या कहते हो?

सोन०—महाराज! यह उन्हीं स्त्रियों के अत्याचार का प्रतिकार है। (बक्स खोलकर) यह लीजिये, फैज़ुल्ला की पतोहू आप के सन्मुख उपस्थित है।

शिवा०—ओह, यह क्या किया सोनदेव? तुमने बड़ा ही कलंकित कार्य किया! ज्ञात होता है कि तुमने अभी तक शिवा को नहीं पहिचाना।

सोन०—महाराज! मेरे परिश्रम का यह तिरस्कार? प्रभो!

जब यवनों के अत्याचार का ध्यान आता है तो हृदय की ज्वाला धधक उठती है। मेरे रोम २ से प्रतिकार की अग्नि बरसती है। महाराज, भवानी की शपथ है कि यदि आप आज्ञा दें तो हम बिना अन्न जल किये या तो इन यवनों को इस संसार से नष्ट भ्रष्ट कर दें अथवा अपना ही अन्त कर लें ?

शिवा०—शांत! वीर सोनदेव! शांत!! तनिक विचार तो करो कि तुमने अपमान और प्रतिकार में अंधे होकर कैसा भीषण अत्याचार किया है ? भाई! माना कि नवाब ने उनके ऊपर ज़ुल्म किया, हिन्दू स्त्रियों पर अत्याचार का पहाड़ गिराया, पर उसका बदला एक अनाथ अबला से ? क्यों, क्या एक पागल कुत्ता किसी मनुष्य को काट खाता है, तो वह मनुष्य भी उस कुत्ते को काट खाता है ?

सोन०—काटता तो नहीं है महाराज, पर अपने जूतों की ठोकर से उस नीच कुत्ते का मुँह तोड़ देता है।

शिवा०—ठीक। उसी कुत्ते का या दूसरे का ? ज़रा सोचो तो उस क्रूर फैज़ुल्ला का बदला हम यवन-स्त्रियों से कैसे ले सकते हैं ? हमारे लिये तो मुसलमान स्त्रियाँ भी उतनी ही आदर की पात्री हैं जितनी हिन्दुओं की। ताना जी! यही मैंने आप से भी कहा था कि हमारा युद्ध अन्यायी यवन बादशाहों से है, न कि यवन प्रजा से ? अबलाओं को सताना दुष्ट यवनों का ही कार्य है। यदि हम हिन्दू ऐसा करेंगे तो हमारा धर्म नष्ट हो जायगा, हिन्दू गौरव भ्रष्ट हो जायगा। सुन्दरी! सोनदेव का और हमारा अपराध क्षमा करो! ताना जी! इस बालिका को वस्त्राभूषण सहित इसके नगर को पहुँचा दो और आदर्श

हिन्दुत्व को कलंकित करने के अपराध में सोनदेव को राज्य से बाहर निकाल दो।

ताना०—धन्य हो महाराष्ट्र पति शिवाजी! आप धन्य हो। वीरता इसी का नाम है।

(सोनदेव का तलवार रख कर धीरे २ आना)

यवन स्त्री—हिन्दू राजा! आपकी इस नेकी को मै ताउम्र नहीं भूल सकती। आप हिन्दूजाति के सूरज हो। आपकी मेहरबानी के लिये मैं शुक्रगुज़ार हूँ। तस्लीम!! (सर झुकाना)

(सब का जाना)

अङ्क १ दृश्य ७

दरबार शाह बीजापुर

(नव्वाब वजीर इत्यादि सब यथा स्थान विराजमान हैं।

नृत्तकियाँ— गाना।

आली सरकार—
शाही शान पर हम वारी वारी।
आलम में शान निराली—
छाई कैसी खुशहाली—
सूरत है भोली भाली—
रखना हो दिन दिन आली—आली०—

दिलवर पर जायें वारी।
इन क़दमों पर बलिहारी।
सूरत है प्यारी प्यारी।
नर नारी सारी वारी—वारी आ०—

नवाब०—वज़ीर साहब। आगरे से क्या ख़बर आई है? सुना है, शाहंशाह शाहजहाँ कैद कर लिये गये?

वज़ीर—हुज़ूर का ख़्याल बिलकुल सही है। बूढ़े बादशाह को क़िले में क़ैद करके शाहज़ादा औरंगज़ेब तख़्त पर बैठ गया!

नवाब०—ओह, इस क़दर जल्द क़ब्जा कर लेना? कैसी ताज़्जुब ख़ेज़ ख़बर है। तिसपर ख़ूबी यह कि रैय्यतो रऊसा आलिमो उलमा सब पर कामिल दबाव भी है। शायद तवारीख़ इससे बेहतर वाक़या नहीं बतला सकती।

वज़ीर—हुज़ूर औरङ्ग़ज़ेब बड़ाही मक्कार शख़्स है। मजहब और दीन की आड़ में सब को अंधा बनाकर किस चालाकी से खुद बादशाह बन बैठा है?

नवाब०—मगर हमारी तरफ़ से तो ख़ामख़्याली का मौका अभी तक नहीं आया है।

वज़ीर—उम्मीद तो नहीं है। मगर उस वहमी दीवाने का क्या ठिकाना जो आइन्दा के ख़ौफ से अपने हक़ीक़ी भाइयों का ख़ून बहाना अपना फ़र्ज़ समझता है।

नवाब०—ख़ैर खुदा हाफ़िज़! लेकिन मराठों का क्या हाल है?

वज़ीर—जब तक आलीजाह का इक़बाल है, शाही जलाल है, तब तक किसी का चूं करना भी मुहाल है। क्योंकि

दिलावर अफजल खां को वहां भेजना, मराठों के लिये सरापा ज़वाल है।

सलीम—(प्रवेश कर) अब्बाजान की ख़िदमत में मराठे गिरोह के एक ज़बरदस्त डाकू को गिरफ्तार कर लाया हूँ।

नवाब०—शाबाश, मेरे सआदत मंद बर खुरदार !! लेकिन इसे किस जुर्म में किया है गिरफ्तार ?

सलीम—जुर्म एक नहीं बल्कि लाखों हैं।

नवाब०—हाजिर करो। (कैदी सूर्या जी का आना)

सलीम—वालिद बुज़ुर्गवार ! इसी का नाम है सूर्या जी सर्दार। सब से बड़ा जुर्म तो यह है कि इसने बीजापुर के ख़िलाफ़ बग़ावत फैलाने व ख़ैरख़्वाह रिआया को भड़काने का पेशा अख़्तियार किया है। दूसरे हमारे राज्य से मुसलमान भाइयों को नेस्तोनाबूद करने को तय्यार हुआ है।

नवाब०—क्यों ओ मक्कार ! तेरी इतनी जुर्रत कि मेरे सामने सर उठाये, जिस राज्य में परवरिश पाये, उसी के ख़िलाफ़ बग़ावत फैलाये ?

सूर्या०—बग़ावत ! कैसी बग़ावत ? किसकी बग़ावत।

नवाब—क्या तू भी ताना और शिवा जी की तरह लूट मार करता है ?

सूर्या०—क्या वीर तानाजी और शिवाजी लुटेरे हैं ? ओ अभिमानी नवाब ! लुटेरे और डाकू तो तुम हो, जो विदेशी होकर भारत वर्ष की दौलत लूट कर अपने देश में ले जाते हो। अपने कपट को सत्यता और सच्चे देशभक्त परोपकारी शिवाजी को, डाकू बतलाते हो ?

नवाब०—नादान छोकरे! अपनी ज़बान को लगाम दे, वर्ना खैंच ली जायगी। जिस कूवत पर ऐंठ रहा है वह अभी तोड़ दी जायगी।

सूर्या०—नवाब साहब! मैं नहीं, वरन् आप स्वयं अभिमान के वशीभूत हो हमपर अन्याय कर रहे हैं। जिस भारत वर्ष के जल वायु ने आपको इतना बड़ा बनाया उसी पर क़ब्ज़ा करने के लिये हमपर छुरी चला रहे हैं? किन्तु इससे हम भयभीत होने वाले नहीं। आपकी बादशाहत से डर कर अधर्म मार्ग पर पग चलने वाले नहीं:—

दरिया में क्या रहोगे कर दुश्मनी मगर से।
क्यों काटते हो पाकर साया उसी शजर से॥
सोचो शरम करो कुछ इंसाफ की नज़र से!

नवाब०—क्या कहा शर्म? ओ बेवकूफ,छोटा मुँह और इतनी बड़ी ज़बान? कम्बख़्त अभी इस हिमाक़त का हाल तुझे मालूम करा देता लेकिन लाचार हूँ कि तेरी उठती जवानी पर रहम आता है! सच २ बोल कि इस बग़ावत की क्या वजह है?

सूर्या०—नवाब साहब! यह तो आप अपने ही हृदय से पूछिये। यदि भारत ऐसी उपजाऊ भूमि न होती तो तुम जैसे विदेशियों से यह देश इतना जल्द न पट जाता।

नवाब०—ओ अक़्ल के अन्धे, यह बातें किसके सामने कर रहा है, किससे नसीहत का राग अलाप रहा है?

सूर्या०—उससे जो अपनी गरदन में भीक की झोली डाल कर आये थे। और अब हम पर हुकूमत करने लगे। हमारे ही रक्त से अपनी राक्षसी प्यास बुझाने लगे।

मांगी थी भीक जिसने कौन हम या आप हैं ?
धोके से लिया राज्य किसने हम या आप हैं ?
यों करके पराधीन छुरी हम पै चलाना।
डाकू लुटेरे चोर कौन हम या आप हैं ?

नवाब०—बस ख़ामोश हो, वर्ना अब रहम का ख़ात्मा हो गया समझो ! ऐसा न हो कि मेरी मेहरबानी गुस्से से बदल जाये और तेरी नौजवानी मिट्टी में मिल जाये।

सूर्या०—देखा जायगा परन्तुः—

हम थोथी धमकियों से डराये न जायेंगे।
इक साथ हमेशा को सुलाये न जायेंगे॥
भूले थे खुद ही और भुलाये न जायेंगे।
जोरो सितम के खेल खिलाये न जायेंगे॥
उभरे हैं जोश दिल में दबाये न जायँगे।
लोहे के चने हैं ये चबाये न जायँगे॥

नवाब०—बेशक चबाये जायँगे—और तुम्हारे ऐसे काफ़िर भी जल्द ठिकाने लगाये जायँगे। ले जाओ ! इस मक्कार बद्-क़िरदार को जेलख़ाने की हवा खिलाओ।

सूर्या०—चिंता नहीं। हम अनाथों का भी नाथ है। परन्तु सावधान ! यह सदा ये मज़लूम कभी खाली न जायगी। मेरी आह शीघ्र ही प्रलय मचायेगीः—

(तलवार फेंक कर)

डरते नहीं हम हाथ में तलवार न लेंगे।
बदला कभी हम ख़ून का सरकार न लेंगे॥

हर वक्त मुल्क के लिये हम सर फ़रोश हैं।
इस पर भी अपनी जाँ के कभी दाम न लेंगे॥
हँसते हुये हम मौत के हाथों में जायँगे।
लेकिन हम अपने मुल्क को तुमसे छुड़ायेंगे॥

सलीम—ओ शैतान! बन्द कर अपनी ज़बान?

(तलवार खैंचना)

(टेब्ला)

अङ्क १ दृश्य ८

मकान

(नौकर का बड़बड़ाते आना)

बेढब—परिवर्तन! परिवर्तन! उन्नति के जमाने में जब कि संसार सीढ़ी लगा कर आकाश पर चढ़ा जा रहा है तो आप क्यों बैठे २ मक्खियाँ मारें? हवाई जहाज़ों को रेल की पटरी पर चलने दो, रेल को आकाश में उड़ने दो; पुरुषों को स्त्रियाँ और स्त्रियों को पुरुष बनने दो। डाक्टर वैद्य को रोगी और रोगियों को वैद्य की नाडी परीक्षा करने दो। सारांश यह कि पूरब वाले पच्छिम और पच्छिम वाले पूरब आ जायें, देशी विदेशी और काले भी गोरे भी हो जायें। नीच ऊँच और अनपढ़ विद्वान कहलायें, शुद्र

जनेऊ धारण कर क्षत्री बनें और ब्राह्मण क्षत्री शूद्र कहलावें। क्यों? यों, कि जब से मेरे स्वामी ने पुराने भेष को बदलकर क्रिस्तानी टोप धारण किया है, तब से बंदा भी कुर्ता टोपी त्याग कर इस केचुली में फटा इसाई अर्थात भारतीय अखरोट और विलायती उबलरोट बन गया है।

(घसीटा का आना)

घसीटा—उल्लू, पाजी, डैमफूल, नामाकूल, गधे की भूल,...

बेढब—बस २ उल्लू पाजी डैमफूल नामाकूल गधे की भूल! आप मुझे जो चाहें सो कह लें, मगर जब मैं बातें करता हूँ तो बीच में न बोलें।

घसीटा—क्यों?

बेढब—इस लिये कि जिस समय आपने मुझे नौकर रक्खा था, वह शर्त याद है? एकरार नामे की दस्तख़त का ख्याल है। देखिये, मेरे हाथ पैर आपके नौकर हैं, मगर मेरी चमड़े की ज़बान आपकी गुलाम नहीं है।

घसीटा—तू आदमी है या लंगूर?

बेढब—जी बन्दा लंगूर! और आप साहबों की दुम!!

घसीटा—हम साहबों की दुम?

बेढब—जी! साहब बने हुजूर! मैं नौकर लंगूर हूँ!

घसीटा—साहब नहीं तो—साहबों की दुम जरूर हूँ!

बेढब—वाह २ क्या साहबों की दुम है!

घसीटा—अच्छा कान खोल कर सुन!

बेढब—कहिये क्या बात है?

घसीटा—अबे देख अब हम Derby के Shoe की तरह

1st Quality का साहब बन गया है, तू किसी के आगे मेरी हँसी न कराना !

बेढब—जी नहीं सरकार ! (खुद से) हँसी तो नहीं कराऊँगा मगर आप की इज्जत मिट्टी में ज़रूर मिलाऊँगा ।

(दरवाजे पर मिस फोकट का आना)

मि० फो०—मिस्टर घसीटा ?

घसीटा—अरे यह कौन है ?

बेढब—होगा कोई क़ाबुली, आपसे रुपये वसूल करने आया होगा ।

घसीटा—अबे जाकर तो देख ।

बेढब—मान लीजिये कि क़ाबुली ही हुआ तो ?

घसीटा—तो कहना कि साहब बाहर गये हैं ।

बेढब—जो हलवाई हुआ तो ?

घसीटा—कहना घर पर नहीं हैं ।

बेढब—पान वाला हुआ तो……

घसीटा—कहना नाटक देखने गये हैं ।

मि० फोकट—(बाहर से) मिस्टर घसीटा !

घसीटा—अरे जा, जल्दी देख !

बेढब—और यदि यह मेरे पहुँचते पहुँचते द्वार पर से वन् टू थ्री हो गया तो ?

घसीटा—अबे जाता है कि बातें बनाता है ।

बेढब—लीजिये, तो मैं चला ।

घसीटा—हाँ जा, जा !

बेढब—तो क्या मैं सच मुच चला जाऊँ ? (फिर आवाज)

घसीटा—अरे कम्बख़्त ! जल्द जा, यह किसी लेडी की आवाज़ मालूम होती है। मेम है मेम !

बेढब—तो हुज़ूर ! इस मेंमें को किस खूंटे से बाँधियेगा।

घसीटा—फिर वही ज़बान दराज़ी ! अरे बेवकूफ, यह तो वही यतीम खाने वाली लड़की मिस फोकट जान पड़ती है जो मेरे ऊपर ऐसे मरती है जैसे मलाई के ऊपर कौआ।

बेढब—(स्वयं) अरे वाहरे घसीटा नौआ। (जाना)

(घसीटा का फटे रुमाल से जूते और मुँह पोंछना। फोकट का आना।)

फोकट—हैलो मिस्टर घसीटा !

घसीटा—आइये आइये मिस फोकट !

फोकट—आपके मिज़ाज तो अच्छे हैं ?

घसीटा—आपकी जूतियों के तुफैल से।

बेढब—क्यों नहीं साहब ! आखिर हैं तो अंगरेजी जूतियाँ।

घसीटा—अच्छा मैम साहब ! आपके लिये चाय मँगाऊँ ?

फोकट—वैल डियर घसीटा ! अभी हम मैम साहब नहीं हैं, मिस हैं।

बेढब—अजी मैं तो वह जादू जानता हूँ कि कहिये तो मिनटों में मिस साहब से मैम साहब बना दूँ।

घसीटा—चुप रह दुम कटे लंगूर।

बेढब—जी, जी, जी कहिये हुज़ूर।

घसीटा—चाय ला, काफी ला, बिस्कुट ला, जल्दी ला।

पैसा नहीं तो क्या हुआ फिर भी हुजूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

बेढब—अभी लीजिये फौरन से पेश्तर (आकर) मगर हुजूर खुदा के बच्चे।

घसीटा—जा जा वैसे ही ले आ।

बेढब—मगर किस के यहाँ से साहब?

घसीटा—ज्वाला पनवाड़ी की दूकान से।

बेढब—(उछल कर) बहुत अच्छा अभी लीजिये! (वापस आकर) मगर हुजूर?

घसीटा—क्यों क्यों?

बेढब—ज्वाला का तो डेढ़ रुपया बाकी देना है।

घसीटा—अच्छा तो सन्नू के यहाँ से ले आ। (पीछे हाथ से मना करना)।

मि० फोकट—डीयर घसीटा!

घसीटा—माई डार्लिङ्ग!

बेढब—(लौट कर दोनों के कन्धे पर हाथ रख कर) साहब २!!

घसीटा—क्या है डैमिड?

बेढब—हुजूर सन्नू न देगा, उसके तो ४) आपकी किताब में निकलते हैं न?

घसीटा—अबे तो जा कहीं दूसरी जगह से ले आ, रफ़ा हो दफ़ा हो, सफ़ा हो।

बेढब—तो यह बात आप साफ साफ क्यों नहीं कहते!

मि० फोकट—डीयर! वह जो डाली आपने मेरे पापा को भेजी थी हम सब को खूब पसन्द आई।

बेढब—(खुद से) क्यों नहीं आप हैं भी तो इसी लायक़!

घसीटा—ऐसे गुलाबरू का गो ख़ादिम ज़रूर हूँ।

साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

बेढब—मज़ा तो यही है—

मि० फोकट—उई हुई, यह आदमी है या डबल रोटी ?

बेढब—ऐहै ये मेंमें है या बालू की भुनी मूँग फली। (जाना)

घसीटा—डीयर ! वह जो तुम्हारा पुराना नौकर खटमल था, अच्छा हुआ जो उसे निकाल दिया। वह मेरी आँखों में ऐसे खटकता था जैसे जूते में कीला !

मि० फोकट—डीयर ! मैं तो तुमको ऐसे चाहती हूँ जैसे डरवी का पंप शू ! नौकर तो क्या मैं तुम्हारे लिये अपने मां बाप को भी निकाल सकती हूँ।

(बुड्ढे का आना)

बुड्ढा—घिस्सू ! ओ बेटा, घिस्सू !

मि० फोकट—डीयर ! यह कौन मनहूस अपना नहूसत का टोकरा इधर ही लिये चला आ रहा है ?

बुड्ढा—भगा दो, निकाल दो, एक दम टिकटिकी पर लटका कर गोली मार दो। भाइयो ! जब से इस सत्यानाशी की पुड़िया ने मेरा घर देखा है मलेरिया की भांति नित्य आकर मेरे पुत्र को दबाती है। लाख धिक्कार पर भी अपना काला मुख यहां से नहीं हटाती है।

घसीटा—अरे तुम यहाँ कहाँ पापड़ बेलने को चले आये ? (स्वयं) अगर जो इसे मालूम हो जायगा कि यह सफेद रीछ मेरा बाप है तो फिर भूल से भी मेरे घर की ओर पग न उठायेगी, मुझे रीछ की औलाद बतायेगी (प्रकट) डीयर ! यह मेरा पुराना नौकर है !

बुड्ढा—मैं और नौकर ! हत् तेरे फटे इसाई की बेसी

तैसी ! कोट पतलून के स्वांग में ऐसा ऐंठ गया ? गिटपिट के जामे में ऐसा भूत हो गया।

बेढब—(आकर) जी ! जन्टिलमैन पुत्र पिता को भूल गया।

बुड्ढा—चल निकल मनहूस ! मेरे घर से अभी दूर हो ! क्यों रे मूर्ख घसीटा ! अंगरेजी पढ़ कर अपनी मान-मर्य्यादा को भी ले डूबा ?

घसीटा०—हाय २; मैं अपनी हरकतों पै गो नादिम जरूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

गाना।

बुड्ढा—चल चल चल तू बदकिरदार।
फो०—मैं हूँ क्या अलबेली नार॥
ब०—मैं इन दोनों से हुशियार।
बे०—वाह ! वाह !! वाह !!!
फो०—ब्यूटी ने आज मेरी जहाँ को लुभा लिया।
घ०—फैशन ने मेरे सारे ऐबों को दबा लिया।
बुड्ढा—इस ढंग को देखो अरे इस ठाट को देखो।
,, —बेटे ने हाय बाप को नौकर बना लिया॥
फो०—ऊना मासी धम—
घ०—फादर पढ़े न हम।
बे०—इंगलिश की टूटी टंग। अजी वाह ! वाह !! वाह !!!

(बुड्ढा डंडा मारता हुआ सब को ले जाता है)

अङ्क १ दृश्य ६

महल ।

(लक्ष्मी का मलिन वेश में गाते हुए आना)

लक्ष्मी— गाना

कान्हा ! आके दिखाजा सुरतिया मुझे ।
प्यारे फिर से सुना जा बंसुरिया मुझे ॥ का०—
प्रेम बन्धन में तुझे बाँध के जो राखेगा ।
तेरे नैनों का सुधा नीर वही चाखेगा ॥
इस जगत जाल से समझो है बेड़ा पार तभी ।
एक टक जो तेरे चरणों की ओर ताकेगा ॥
कोई वाकी बता दो डगरिया मुझे ॥ कान्हा—

*   *   *   *

देश शून्य है जहाँ वीर का वंश नहीं है ।
हृदय शून्य है जहाँ प्रेम का अंश नहीं है ॥
महा शून्य है प्रेम वेदना विरह न जाने ।
विरही की गति प्रेम, प्रेम की विरह न जाने ॥
प्रेम पूर्ण वैराग्य में दुख भी है "आनन्द" भी ।
शुद्ध प्रेम के भाव से मिलें सच्चिदानन्द भी ॥

आह ! विकट समय के सहायक की अमूल्य सहायता की कृतज्ञता कैसी मर्म भेदी होती है—इसका अनुभव वही कर सकता है, जिसके हृदय में चोट लगी हो । भगवन् ! वह मधुर छवि-वे वीरता पूर्ण शब्द, वह प्रेम भरी वाणी, वे मनोहर नेत्र,

अब कहाँ दिखलाई पड़ेंगे? परमात्मन्! क्या तू भी उसी मनोहर आकृति के समान ही कोमल, शीतल, मधुर और करुणाशील है? यदि है तो मैं यही कहूँगी कि मेरी पवित्र आत्मा का परमात्मा वही है। जब पिता जी के मुख से मैंने सुना कि कुंवर सूर्यासिंह जी यवनों के हाथ गिरफ्तार हो गये—आह, एक बिजली सी सारे शरीर में दौड़ गई। एक ज्वाला सी भभक उठी—और अब मैं उसी जर्जर शरीर का शेष स्वरूप हूँ।

प्यारे सूर्या! मेरे आराध्य देव!! अब मैं तुम्हें कहाँ पाऊँगी तुम्हारी मोहनी मूर्ति द्वारा अब इन प्यासे नेत्रों की तृष्णा को कब बुझा पाऊँगी? प्राणनाथ! इस दासी को कब तक भटकाओगे, कबतक बिरह की अग्नि में जलाओगे? भगवान! स्त्रियाँ तो यों ही संसार से अनभिज्ञ होती हैं, तिस पर हिन्दू स्त्रियाँ तो जन्म से ही अबला कहलाती हैं। प्रभो! मुझे साहस और धैर्य दो। दयानिधि! कोई ऐसी युक्ति सुझाओ कि मेरा यह अधम शरीर अपने प्राणनाथ के काम आये! यह तुच्छ जीवन सफल हो जाये।

गाना।

केशव कृष्ण कृपाल दयाल,
सुधारो दशा-दुख से गिरधारी।
संकट घोर परो भक्तन पै,
टेरत तुमको-कृष्ण मुरारी।
जब २ भीर परी दासन पै,
आस रही तुम्हरी अति भारी।
नंगे पाँयन धाय बचाय,
हटाय दई विपदा बनवारी॥

ओह ! मेरे हृदय-सागर में एक उत्साह का प्रवाह जोश मार रहा है—मेरे अन्तःकरण में ेम के विकाश का दिव्य उजाला हो रहा है। बस अब प्रेम की सीढ़ी पर धैर्य के सहारे भक्ति के उद्देश्य तक श्रद्धा की आशाशक्ति द्वारा पहुँचना है। किन्तु क्या उपाय करूँ ? (सोचकर) हाँ ठीक है। इस स्त्री वेष को बदल कर पुरुष वेष धारण करूँ। प्रयत्न करूँगी और अपने प्यारे के कल्याण के लिये उद्योग करूँगी।

(वेग से जाना)

(सिपाहियों का सूर्या जी को पकड़ कर लाना)

सूर्या जी०— गाना।

गुलामी से हम अपने मुल्क को आज़ाद करदेंगे।
किसी दिन जुल्म की ज़ंजीर को बरबाद करदेंगे॥
हमें बेकस समझ कर क्यूं डराता है तू ऐ क़ातिल।
हम अपनी आह से ढीली तेरी बुनियाद करदेंगे॥
न छेड़ो बे गुनाहों को हमारी आरज़ू सुन लो।
वगरना दोनों आलम को तहे उफ़ताद करदेंगे॥
अगर उस पाक परवर की हुई आनन्द की नज़रें।
जिन्हें बरबाद करते हो उन्हें आबाद करदेंगे॥

(जाना)

अङ्क १ दृश्य १०

मार्ग ।

(शिवाजी और माता जीजीबाई का प्रवेश)

शिवा०—मातेश्वरी ! हृदय हताश हो रहा है,—जब भारत-वर्ष का भाग्य सूर्य ही अस्त हो जायगा तो मैं जीवित रहकर क्या करूँगा ?

जीजी—पुत्र शिवा ! तुम कैसी मूर्खों की सी बातें करते हो ? क्या मेरे दूध को लजाना चाहते हो, वीर माता की सन्तान होकर कायरपन दिखाना चाहते हो ?

शि०—नहीं माता ! मैं कब कहता हूँ कि वीर जननी के दूध से पाली हुई संतानें वीरता का नाम डुबायेंगी। मेरे कहने का उद्देश्य तो केवल यह है कि बीजापुर के नवाब के सामने हथकड़ी बेड़ी समेत जाने के पूर्व प्राण त्यागन कर दूँगा।

वीर गति से युद्ध भूमि में प्राण तजूँगा।
या लेकर स्वराज्य भारत का कष्ट हरूँगा॥
जर जर कर सब गात बनों में दुःख सहूँगा।
पर यवन राज्य के पराधीन होकर न रहूँगा॥

जीजी—धन्य है वीर पुत्र ! इतना साहस है तो निराशा कैसी ? बेटा शिवा ! तुम्हारा आदर्श बड़ा ऊँचा है :—

राम कृष्ण से जहाँ हुए योगी बलधारी।
सतवादी हरिश्चन्द्र और ध्रुव से तपधारी॥
दानी कर्ण धर्म से हुए जहाँ सतधारी।
जहाँ हुए परताप महाराणा हठधारी॥
उसी पुन्यमय भूमि में वीरोंका आधार है।
वीर वंश में तू शिवा शिवजी का औतार है॥

शि०—(पैर छूकर) माता, आप धन्य हैं! आपका दूध रक्त बन कर मेरी नस नस में जोश मार रहा है। बस अब आज्ञा दो कि मैं अफ़ज़ल खाँ को यमलोक पहुचाऊँ और महाराष्ट्रों के माथे से कलंक का टीका मिटाऊँ।

जीजी०—जाओ पुत्र, हमारा आशीर्वाद है कि अपने पूज्य पिता को बन्धन से छुड़ाओ और शत्रु पर विजय पाओ।

शिवा०—माता, जिसने आपका दुग्ध पान किया है उसके लिये संसार में कुछ भी असंभव नहीं है, किन्तु यदि मैं एकायक पिताजी के पास पहुँच भी जाऊँ तो वे मुझे पहिचानेंगे किस तरह?

जीजी०—जिस तरह ध्यान करने पर परमात्मा अपनी आत्मा को पहिचानता है, माँ कहने पर गाय अपने बछड़े को पहिचान लेती है, उसी तरह "पिता" कहने पर मेरे प्राणनाथ भी तुम्हें गले से लगावेंगे। किन्तु वत्स! जब म्लेच्छ पठान तुम्हें धोके से मारने आया है तो तुम भी सावधानी से काम लेना।

शिवा०—जो आज्ञा!

जीजी०—आओ चलो, मैं तुम्हें अपने हाथों से कवच और बाघनख पहिनाऊँगी।

(स्वामी रामदास का प्रवेश)

राम०—कौन शिवाजी और जीजी बाई !

दोनो—श्री गुरु जी के चरणों में प्रणाम !

गुरु०—आशीर्वाद, कल्याण हो ! प्रसन्न रहो !!

जीजी०—गुरुदेव ! अशांति के समय चित्त की वेदना को संतोष प्रदान करने वाले आपके दर्शन से हम कृतार्थ हुए।

राम०—देवी ! तुम तो स्वयं गंगा के समान पवित्र, चंद्रमा के समान शीतल, सूर्य के समान प्रकाशमान और भारत माता के समान पूजनीया हो। फिर इस स्वर्ग समान गृहस्थी में अशांति का कारण ?

शिवा०—भगवन ! विद्या के प्रकाश की अनुपस्थिति में जिस प्रकार अविद्या, मोह और अज्ञान का अंधकार रहता है; उसी प्रकार आपके दर्शनों में विलम्ब होने से हमारा कोमल चित्त भी चंचल हो उठता है।

राम०—शिवजी और भवानी के एक मात्र प्राण स्वरूप शिवाजी के मुख से ऐसे बचन अवश्य आश्चर्य प्रकट करते हैं। क्या मेरी दी हुई शिक्षाओं को तो नहीं भूल गये ? देखो राज्योन्नति में अहंकार, प्रजा में व्यभिचार, शत्रु से शिष्टाचार, शरणागत से दुर्व्यवहार, स्त्रियों पर बलात्कार, गौओं पर तीव्र कुठार और ब्राह्मणों पर दुराचार, जहाँ कहीं भी होगा उस राज्यका शीघ्र ही पतन होगा।

श०—धन्य हो, गुरुदेव ! आप धन्य हो !

राम०—देश के नवयुवकों परही देश के कल्याण का भार है। तुम्हारी भारत माता आज दुखी और निराधार है। पुत्र ! विषय भोग में फँसना तो बड़ाही सहल है। किन्तु इस परतंत्र देश को

स्वतंत्र करना, शत्रुओं का दमन और गौ ब्राह्मणों का उद्धार करना अतीव दुर्लभ कार्य है। यह सारा देश आज एक टक तुम्हारी ही ओर देख रहा है। बस मोह को त्यागो और यवनों को देश से निकाल बाहर करने को उद्यत हो जाओ।

शिवा०—गुरुवर! आज्ञा सहर्ष स्वीकार है। महाराष्ट्र राज्य को आपकेही चरणों का आधार है।

राम०—तो जाओ, माता और अपनी धर्मपत्नी से बिदा लेकर अपने कार्य पर तत्पर हो जाओ।

शि०—जो आज्ञा! (पैर छूकर माता के साथ जाना)

राम०—राजस्थान केशरी महाराणा प्रताप रूपी सूर्य के अस्त होते ही भारत वर्ष की कीर्ति भी समाप्त हो गई। अब सिवाय शिवाजी के भारत का आशा रूपी दीप कहीं दिखाई ही नहीं पड़ता! भाई भाई के रक्त का प्यासा है, द्वेष फूट और अहंकार ने सब कुछ नाश कर दिया, रही सही मान मर्यादा को देश के विरोधी शत्रुओं से मिल कर खो बैठे। भगवन! अब तेरा ही आधार है। इस डूबते हुए भारत रूपी नौका का तुम्हारे ही हाथ पतवार है।

गाना।

पाया नहीं कोई देशकी सुधि लेने वाला।
भारत के दुख टार के सुख देने वाला॥
फूट ने देश में अन्धेर मचा रक्खा है।
नक़शा बेदाद का क्या ख़ूब खिचा रक्खा है॥
देश विद्रोह ने रंग आज जमा रक्खा है।
अपनी तक़दीर में मुहताज लिखा रक्खा है॥
नैया चली दीनानाथ तू है खेने वाला॥ (जाना)

अङ्क १ दृश्य ११

कैम्प।

(अफ़ज़ल खाँ कोंच पर लेटा है सामने खांडे राव हाथ जोड़े खड़ा है—सहेलियों का गाना)

सहे०— गाना।

पड़ पड़ गले में इश्क़ की ज़ंजीर रहगई।
खिच खिच के दस्ते नाज़ में शमशीर रहगई॥
मिन्नत जो की जनाब से उज़रे विसाल पर।
तन तन के चश्मे यार की शमशीर रहगई॥
खींचा जो नक़शा यार का इक शब को ख़्वाब में।
बन २ के मेरे सामने तसवीर रहगई॥
ग़ैरों से मिला करते हो "आनन्द" से छिपके।
रुसवाई के लिये मेरी तक़दीर रहगई॥

* * * *

अफ़ज़ल—साक़ी मज़े से बोतल पीओ हमें पिलाओ।
बाक़ी हो दिलमें अरमाँ सब आज कर दिखाओ॥
राहत का जो घड़ी हो क्यों फ़िक्र में गँवाओ।
आओ शराब पीओ मैके मज़े उड़ाओ॥

ओह! किस तेजी के साथ आज खुशी के दरिया में जोश आ रहा है और उस जोश में मेरी क़ूवत की किश्ती हिलोरें ला रही है। आफरीं २!

आलम में शाक़े इन्सां-इन्सान से बड़ा हूँ।
क़ूवत में इस जहाँ की-ईमान से बड़ा हूँ॥
हैं फ़ीलो बशर क्या शै-हैवान से बड़ा हूँ।
रुस्तम की ताब क्या है-शैतान से बड़ा हूँ॥

खाँड़े०—बेशक हुज़ूर! शैतान से भी ४ हाथ बड़े हैं।

अफ़०—खाँड़ेराव?

खाँड़े०—हुज़ूर!

अफ़०—तुम जानते हो मैं कौन हूँ?

खाँड़े०—हुज़ूर! नवाब बीजापुर के आला सिपहसालार हैं।

अफ़०—हरगिज नहीं! मुतलक नहीं! कतई नहीं! बिलकुल नहीं।

खाँड़े०—जी जी, (डर से काँप कर हाथ जोड़ता है)

अफ़०—हम हैं शाहंशाह बीजापुर!

खाड़े०—हाँ हुज़ूर हैं शाह बीजापुर ज़रूर! ज़रूर!!

अफ़०—खाँड़ेराव-अब मत भूलना!

खाँड़े०—हुज़ूर कभी नहीं!

अफ़०—अच्छा हम कौन हैं खाँडेराव!

खाँड़े०—हुज़ूर नवाब बीजापुर हैं जनाब।

अफ़०—(उठ कर) नवाब के बच्चे के दादे के बाप! हम हैं बादशाह बीजापुर।

खाँड़े०—हुज़ूर ग़लती से ख़ता हुई, हुज़ूर का माई बाप हूं! हुज़ूर बिलकुल ४० सेर और १६ आने बीजापुर के बादशाह हैं।

अफ़०—(मद्य पीकर) खांडेराव, शिवा जी नहीं आया?

खाँड़े०—जी अभी तक तो नहीं आया।

अफ़०—क्यों नहीं आया?

खाँड़े०—हुजूर वह बड़ा डरपोक है-हुजूर के डर की वजह से कांपता हुआ धीरे धीरे आ रहा होगा।

अफ़०—डरपोक-हा हा हा! आख़िर है तो काफ़िर। तभी तो उसका नाम पहाड़ी चूहा रक्खा गया है। मगर मैं तो पहाड़ी बिल्ली क्या पहाड़ी बिल्ला हूँ। क्यों खाँडेराव!

खाँड़े०—हुजूर बिलकुल पहाड़ी बिल्ला!

अफ०—अच्छा हम कौन हैं खाँड़ेराव?

खाँड़े०—हुजूर पहाड़ी बिल्ला!

अफ०—क्यों भूल गया?

खांड़े०—जीजी नहीं सरकार! हुजूर बादशाह बीजापुर हैं!

(आना सलामत खाँ)

अफ०—सलामत खां?

सला०—हुज़ूर!

अफ०—फौज का क्या इन्तज़ाम है?

सला०—हुजूर २०० जवान ख़ीमे की बांई तरफ पोशीदा हैं और बाक़ी ३०० यहां से ½ मील के फासले पर हैं।

अफ०—ठीक! मगर उस पहाड़ी चूहे को पकड़ने के लिये लोहे के सीखचों का पिंजड़ा?

सला०—हुजूर के बग़ल के खीमे के अन्दर पोशीदा है।

अफ०—बहुत ठीक! ओ काफिर मगरूर शिवा जी! तूने समझ रक्खा है कि खाँन बेवकूफ है, तुझसे डरता है, और सुलह करना चाहता है? ओ अक़्ल के अन्धे! तुझे खाँन चूहे—दान में प्लेग के चूहे की तरह बंद करके बीजापुर ले जायगा

और कुत्तों से तेरी बोटियाँ नुचवायेगा। अच्छा सलामत खां लो फतह का पैमाना। (शराब का प्याला आगे बढ़ाता है)

सला०—हुज़ूर ! बन्दा इस न्यामत से मुबर्रा है।

अफ०—अच्छा तुम खांडेराव ?

खांड़े०—गुलाम माफी चाहता है जनाब !

अफ०—क्या कहा जनाब ?

सला०—बादशाह बीजापुर हैं आप !

अफ०—बेहतर ! अच्छा अब हम आराम करते हैं। सलामत खां, जाओ और खांडेराव, तुम दरवाजे पर खड़े रहो। जब शिवा जी मिलने आवे हमको फौरन से पेश्तर ख़बर दो।

खांड़े०—बहुत अच्छा हुजूर ! (जाना)

अफ०—मगर हम कौन हैं खांडेराव ?

खांड़े—(लौट कर) हुजूर हैं शाह बीजापुर सरकार !

(सब का जाना अफजल खाँ का सोना, तकिये को शिवाजी समझ कर लड़ना हँसना—सोना फिर—ख़ाम ख़्याली)

खांड़े०—(आकर) हुजूर ! शिवा जी आ गया।

(अफ़ज़ल सोता रहता है)

खांड़े०—(झिझोड़ कर) हुजूर ! शिवाजी आ गया !

अफ०—क्या बकवास करता है-तकिया है, शिवा जी नहीं हैं, वह नहीं आया।

(शिवाजी और ताना का प्रवेश)

शिवा० ताना०—हर हर महादेव······

अफ०—कौन २ तुम्हारा क्या नाम है ?

ताना०—यही हैं महाराज शिवा जी !

अफ०—तुम ३ (कांपकर) शि······वा······जी।

शिवा०—(हँस कर) क्या इसी हिम्मत पर हिन्दुओं पर राज करोगे खां साहब ?

अफ०—ओ किसान की औलाद ! तेरी यह बुनियाद ?

शिवा०—ओ भटियारी के पूत ! तेरी और यह करतूत ?

अफ०—ओ मक्कार, कमीने नाबकार !

शिवा०—बस अपनी ज़ुबान थाम नहीं तो·········

अफ०—हां नहीं तो क्या ?

शिवा०—नहीं तो इस सर को वापिस लेकर न जायगा।

अफ०—यह तो मैं पहले ही जानता था। बदमाश ! इसी लिये ५०० जवान भी साथ लाया था।

शिवा०—किस लिये ?

अफ०—तुझे गिरफ्तार करने के लिये, यह हमने तेरे लिये पहले ही से जाल बिछा रखा था ! सलामत ३ !!!

शि०—मूर्ख ! वह सब सलामती के साथ लोहे के चूहेदान में बंद हैं, अब तू अपनी सलामती की ख़ैर मना।

अफ०—ठहर गुस्ताख़ ! अभी तुझे मज़ा मालूम हो जायगा।

शिवा०—और तुझे भी तेरी नीचता का बदला मिल जायगा, नीच ! ब्राह्मणों से दुर्व्यवहार, गौ, और स्त्रियों पर अत्याचार !

अफ०—ओ मूजी नाहंजार ! पहले मेरा वार संभाल।

(खंजर मारने चाहना)

अफ़ज़लखां भटिआरी से पैदा था, यह ऐतिहासिक है कल्पित नहीं।

शिवा०—तो ले तेरा भी आ गया काल !

(तान्ना एक व्यक्ति पर तलवार छीन कर चढ़ते हैं दूसरे पर खांडे राव)

ताना—रख दो रख दो, अगर मरने का डर हो तो सब लोग हथियार रख दो—

(सब हथियार रखते हैं)

(अंत में पर्दा फटता है-भवानी की पुष्प वर्षा)

(लोहे के सीख़चों में ख़ान के सिपाही बन्द दिखाई देते हैं)

(नेपथ्य में से हिन्दू धर्म की जय)

(शिवा जी का ख़ंजर छीन कर फेंक देना और बाघनख को अफजल के सीने में भोंक देना)

टेब्ला

ड्राप

अङ्क २ दृश्य १

स्थान-मार्ग बीजापुर

(शाहज़ादा सलीम और मुहमद शुजा)

स०—तो तुम्हें मेरी मदद करनी होगी शुजा !

शु०—दिल से करूँगा।

स०—नहीं तो।

शु०—हां, नहीं तो ?

स०—नहीं तो मालूम पड़ जायगा।

शु०—अजी मालूम पड़ जायगा चे माने दारद, मैं तो वल्लाह शौक़ से आप की मदद करने को तैयार हूँ।

स०—बस हाथी की चाल सामने, घोड़े की ढाई घर और यह लो ऊँट ने वज़ीर को शै-दी, और इधर देखो घोड़े ने शाह को मातदे दी। क्या समझे ?

शु०—बाह वाह इस शतरंज की ज़रूरत ?

स०—सुनो। कल उस काफिर के क़त्ल कराये जाने की खुशी में ज़ोहरा के साथ तुम्हारा निकाह—बाद को ज़ोहरा के हाथों वज़ीर का खून—और यह इलजाम अब्बाजान के सिर रखकर शाहज़ादा सलीम की तख्तनशीनी—समझे मियाँ शुजा।

शु०—मरहबा २ शाहज़ादा साहब ! खूब सोचा।

स०—बस तो तुम्हारा काम ?

शु०—ज़ोहरा को राज़ी करना।
स०—और मेरा फ़र्ज़ ?
शु०—वही शतरंज का खेल।
स०—बस २ मैदान साफ है।
शु०—और जो कुछ किस्मत में लिखा है।
दोनों—मालूम पड़ जायगा।

(जाना)

अङ्क० २ दृश्य २

बाग़

(ज़ोहरा के साथ सहेलियों का गाते हुए नज़र आना)

सहेलियाँ— गाना।

गुलशन की ये बहार है।
जोबन का ये उभार है॥
उस पै फ़िदा है गर कोई।
हम पै जहाँ निसार है॥

बाग़े जहाँ में साथ २ गुलशन हैं दो शबाब में।
लज़्ज़त है उस अनार में। इनमें भी बेशुमार है॥

ज़ोहरा—वाह वाह !! तुम्हारा दिमाग़ है या इश्क़ की लुग़त है ?

१ स०—जनाबा, जो आप कहें वह बजा है, मगर जो हम कहें वो ग़लत है।

ज़ो०—बेशक एक बार नहीं दस बार ग़लत है। याद रखना अब हमसे न बोलना।

२ स०—क्या खूब ! खुद ही हज़रते इश्क़ की महफिल में मूँह खोलना, तिस पर यह सितम कि ख़बरदार हमसे न बोलना।

ज़ोहरा—तो ढड्डो यह कहां की शराफत है कि एक इन्सान के जिस्म की कुदरती बाग़ीचे से हमसरी कराकर शबाब के तराज़ू में तोलना। ज़रासी ज़बान और ऐसे बे भाव के अल्फ़ाज़ बोलना।

२ स०—तो क्या जनाब आपका हुस्नो शबाब इस नाचीज़ बाग़ीचे से भी कुछ कम है ?

३ स०—अजी वल्लाह कम क्या मानी सितम है सितम, ज़रा देखिये :—

भौंरे से बाल तुम्हारे हैं, घुंघराले काले काले हैं।
चमकीले लांबे लांबे हैं, या काले डसने वाले हैं॥

१ स०—अजी ! बालों से तो ज्यादा इनकी आँखों की पुतलियाँ ही काली हैं, भौं कमान की छटा निराली है।

मद मस्त ये नैना काले हैं मद होश बड़े मतवाले हैं।
ये तीखे तीर निराले हैं या बुझे ज़हर के भाले हैं॥

४ स०—अजी, यह तो कुछ भी नहीं हैं, ज़रा होठों पर तो नज़र डालो—

अधर रसीले नैन कटीले, जोबन गेंद खिलौने हैं।
नख शिख से सुन्दर अलबेली, तिस पर नैन सलोने हैं॥

१ स०—अरी, चल तू क्या तारीफ करना जाने! मेरी सुन:—

लखनऊ की है नज़ाकत बाल हैं बङ्गाल के।
हुस्न में कश्मीर भी सानी नहीं इस गाल के॥
पारसाई साफ है टीका है यह गुजरात का।
चाँदनी शरमा गई देखा जो सूरज रात का॥
यह ठोड़ी है पेरिस की या पंजाब ने नाक बनाई है।
यह दूध पै मक्खी बैठी है या तिल ने अदा दिखाई है॥

ज़ोहरा—वाह रे शर्माने वाली, बढ़ २ कर इतराने वाली।

३ स०—जी बजा है, निराले हुस्न-वाली।

ज़ोहरा—बस २ ज़्यादा बातें न बना जा, मेरे सामने से हट जा।

२ स०—हाथ जोड़ती हूँ, एक बात और सुन लो।

ज़ोहरा—अच्छा बोल।

२ स०—आशिक हर इक भौंरा यहाँ जाँबाज़ तुम्हारा।
प्यारा है हर इक दिल को ही अन्दाज़ तुम्हारा॥
यों झेंपना और रूठना हर बार तुम्हारा।
कलियों को भी शर्मा रहा है हार तुम्हारा॥
यह ख़ौफ है आ जाय न दिलदार तुम्हारा।
ख़ुद ही यहाँ बिक जाय ख़रीदार तुम्हारा॥

छू ले न हाथ शाख़ के बदले में तुम्हारा।
मुँह चूम न ले फूल के बदले में तुम्हारा॥

ज़ोहरा—चल, चल, निगोड़ी, बे दुम की घोड़ी, तू बड़ी है छिछोरी। जा यहाँ से चली जा; ज़्यादा चोंचले न दिखा।

सब—नहीं जी, हम सब तो नहीं हटने की।

ज़ोहरा—अच्छा तो लो मैं ही जाती हूँ!

सब—अच्छा नाखुश न हो, लो हम सब चली जाती हैं!

(सब का जाना)

ज़ोहरा—ओह! कैसा ग़ज़ब है, यह हुस्नो शबाब, यह रंगो रुआब-यह साज़ो सिंगार और इस उठते हुये जोबन का निखार! उस पर नवाब बीजापुर की लड़की शोहरते आफ़ाक़ और शौहर वह भड़भूंजा मुहम्मद शुजा—जिसकी ओर देखने की तबीयत नहीं चाहती, मैं उससे हरगिज शादी नहीं कर सकती। क्या एक बादशाहज़ादी के लिये इस ज़माने में तरहदार खूबसूरत शौहर नहीं मिल सकते हैं? ज़रूर मिल सकते हैं! मेरे क़दमों की ख़ाक सिर से लगाने के लिये हज़ारों नवाब ज़ादे तरसते हैं?

(लक्ष्मी का मर्दाने भेष में प्रवेश)

(लक्ष्मी को देखकर) हैं! जनाने बाग में इस तरह बेख़ौफ़ दाखिल होने वाले तुम कौन?

लक्ष्मी—नहीं मालूम।

ज़ोहरा—(स्वगत) या खुदा! हुस्न तो जैसे कूट २ कर भर दिया है। (प्रकट) क्यों जनाब! यह गुस्ताख़ी? यह ज़बान दराज़ी? एक शाही ज़नान ख़ाने में बे धड़क दाख़िल होना और इस तरह बेख़ौफ होकर बोलना?

लक्ष्मी—जनाबा, मैं नहीं जानता कि यह शाही ज़नान ख़ाना किस का है, आप कौन हैं, और मैं कौन हूं।

ज़ोहरा—(स्वगत) या अल्लाह ! बहादुरी के साथ साथ ग़ज़ब का भोलापन भी है। कलेजा निकला जा रहा है-दिल मचला जा रहा है। (प्रगट) जनाब ! आप का इस्मे शरीफ़ ?

लक्ष्मी—ख़ाकसार को लक्ष्मी शंकर कहते हैं।

ज़ोहरा—अहा ! जैसा ख़ूबसूरत चेहरा है वैसा ही खूब-सूरत नाम भी है। जनाब की तशरीफ आवरी का सबब ?

लक्ष्मी—लाचारी, मजबूरी।

ज़ोहरा—वज़ह ?

लक्ष्मी—बिला ज़रूरत हर जगह दिली राज़ का खोलना ठीक नहीं। दूसरों के दरवाजे पर अपनी मुसीवत का राग गाना मुनासिब नहीं।

ज़ोहरा—मैं समझती हूँ, आपको कोई दिली सदमा पहुँचा है। आप बेख़ौफ होकर अपना राज़ कह सुनाइये। बंदी आपकी ख़िदमत के लिये हरतरह तैयार है।

लक्ष्मी—तो क्या आप प्रतिज्ञा करती हो, मेरी सहायता करोगी ?

ज़ोहरा—बेशक।

लक्ष्मी—मुझे स्त्रियों के बनावटी प्रेम से तो ऐसी आशा नहीं है।

ज़ोहरा—आप इम्तहान लीजिये।

लक्ष्मी—व्यर्थ है।

ज़ोहरा—आज़माईश कीजिये ! मुझे ख़िदमत का मौक़ा दीजिये।

लक्ष्मी—अच्छा तो सुनो। तुम्हारे पिता ने मेरे एक परम मित्र को बन्दी कर रक्खा है। यदि आप दया कर उसको छुटकारा दिला दें तो आपका मैं बड़ा अनुग्रहीत हूँगा।

ज़ोहरा—लेकिन यह काम तो बड़ाही मुश्किल है।

लक्ष्मी—मगर अभी तो—

ज़ोहरा—अच्छा कोई परवाह नहीं। बन्दी आपके लिये अपनी जान की बाज़ी लगायेगी मगर आपकी ख़िदमत ज़रूर बजा लायेगी।

(उसके भाई सलीम का पुकारना)

सलीम—ज़ोहरा ज़ोहरा !

ज़ोहरा—जनाब ! दरवाज़े पर मेरा भाई पुकार रहा है—अब आप एक तरफ़ जल्द छिप जाइये। वर्ना वह देख पायेगा तो ग़ज़ब ढायेगा।

(लक्ष्मी का छिप जाना—सलीम व शुजा का आना)

सलीम—मालूम पड़ जायेगा ! मालूम पड़ जायेगा !

ज़ोहरा—मालूम पड़ जायेगा ? भाई, तुम तो कुछ पागल से हो गये हो ! मालूम ? आख़िर क्या मालूम पड़ जायेगा ?

सलीम—ज़ोहरा ! ख़ुश हो जा। कल सुबह मैं शिकार करूँगा।

ज़ोहरा—शिकार ? कैसा शिकार ? किसका शिकार, भाईजान !

सलीम—यही तो मालूम पड़ जायेगा, कि किस का

शिकार। ज़ोहरा! एक हफ्ता हुआ है मैंने एक काफ़िर को गिरफ्तार किया था, वह बड़ा ही ज़बरदस्त डाकू है। आज मैंने वालिद साहब को खुश करके यह इजाज़त ले ली है कि कल सुबह उस बदनसीब को मैं अपने हाथों से फाँसी पर लटकाऊँगा .....

ज़ोहरा—ओह, कैसा दर्द नाक नज़्ज़ारा होगा।

सलीम—हम लोगों को अफसोस करने की ज़रूरत नहीं। ज़ोहरा! हम सब मुसलमान हैं, बल्कि मुझे तो बड़ी खुशी होगी।

ज़ोहरा—किस लिये?

सलीम—इस लिये कि कल की खुशी में मैं अपने बिरादर शुजा के हाथ में अपनी अज़ीज़ हमशीरा का हाथ दूंगा!

ज़ोहरा—बग़ैर मेरी ख़्वाहिश? अच्छा भाई जान, जाओ, आराम करो और ख़्याल रक्खो-अगर आइन्दा तुम इस सख्श को बिना मेरे हुक्म के अन्दर लाओगे तो मैं अब्बाजान से इसकी शिकायत करूँगी।

सलीम—अगर तुम्हारी यह इजाज़त है तो ऐसा न होगा।

शुजा—अफसोस! हायरे! किस्मत!!

ज़ोहरा—लेकिन भाई जान! उस क़ैदी का क्या नाम है? वह किस जगह फांसी पर लटकाया जायगा? मैं भी उसे फाँसी चढ़ते वक्त देखने जाऊँगी।

सलीम—इस वक़् तो वह खुद कैदख़ाने में है। मगर फांसी जुमा मसजिद के सामने चौराहे पर होगी। उसका नाम है सूर्या जी डाकू।

(दोनों का जाना)

ज़ोहरा—(लक्ष्मी कोरोते देखकर) क्यों जनाब ! आप रोते क्यों हैं ?

लक्ष्मी—अपने भाग्य को।

ज़ोहरा—नहीं २ सब्र से काम लो। अब आप की क़िस्मत जाग उठी। जब बन्दी ने आपको अपना सरताज बनाया तो आपकी तकलीफों का ख़ातमा भी नज़दीक आया।

लक्ष्मी—ओह, तुम कैसी संग दिल हो। सुन रही हो कि मेरे मित्र को कल फाँसी होगी और हँसी करती हो।

ज़ोहरा—हाँ हाँ, मैं जानती हूँ कि तुम सच्चे प्रेमी हो-मेरा दिल तुम्हारे पास है और तुम्हारा दिल तुम्हारे दोस्त के हाथ है। तो बस चलो, मैं अपनी जान पर खेलूंगी और तुम्हारे दोस्त को बचाऊँगी।

लक्ष्मी—आपकी असीम दया ! मैं आजन्म तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा।

(जाना)

दृश्य २

जेल।

(हथकड़ी-बेड़ी से जकड़ा हुआ सूर्या जी)

सूर्या०— गाना

यही दान दे मुझे हे पिता ! कि शरण में तेरी पड़ा रहूँ।
भारत जननि के चरण में निज हाथ जोड़ खड़ा रहूँ॥
जब तक शरीर में प्रान हो निज देश का अभिमान हो।
तुझे छोड़ और न ध्यान हो इसी रंग में मैं रंगा रहूँ॥
यह हथकड़ी हों सुहावनी और बेड़ियाँ मन भावनी।
यह ज़ेल सुख मय पावनी-इसी जाति में मैं पड़ा रहूँ॥

ओह ! कैसी बिपत्ति ! कैसा क्लेश !! आज मुझे आठ दिवस बीत गये परन्तु किसी ने मेरी सुधि भी न ली ! हे दयालु पिता ! यह लोहे की हथकड़ी बेड़ी जो कभी स्वप्न में भी न देखी थी, क्या अब जीवन के साथ ही जायेगी ? हैं ! यह मैं कायरों की तरह क्या कह गया ? नहीं २ हम भारतवर्ष की संतान, सदा विदेशियों की परतन्त्रता में रहने से इस कारागार की स्वतंत्रता को लाख गुना अच्छा समझते हैं। हम भूख से तड़प तड़प कर मर जायेंगे, जेलों में सड़ जायेंगे किन्तु अपने देश को स्वतंत्र कर जायेंगे।

(आना वज़ीर का)

वज़ीर—ओ देश के बच्चे, कल सुबह तेरी आज़ादी का ख़ातमा है।

सूर्या०—चिन्ता नहीं।

वज़ीर—बोल अब भी हमारी शर्तें कबूल करेगा ?

सूर्या०—कदापि नहीं।

वज़ीर—मौत सर पर खड़ी है ?

सूर्या०—भय नहीं।

वज़ीर—बेवकूफ लड़के! तुझे मुसलमानों से इस क़दर नफ़रत क्यों है ?

सूर्या०—वज़ीर साहब! आप अपने मुँह से ऐसी छोटी बातें क्यों कहते हैं ? मुसलमानों से हमें नफरत नहीं वरन् प्रेम है। हमें तो नफ़रत है इस अन्यायकारी सरकार से, जो हमारी प्रार्थनायें न सुन कर हमारे ऊपर सख्ती कर रही है; हमारे जन्म सिद्ध अधिकारों को हम से छीन रही है।

वज़ीर—भला वे कौन सी सख्तियाँ हैं ?

सूर्या०—एक नहीं अनेक! हम हिन्दू लोग जिस पूजनीय गौ माता की पूजा करते हैं, उन बेगुनाहों को तुम लोग किस बेरहमी के साथ क़त्ल करके भक्षण करते हो।

वज़ीर—मगर वो तो हमारी शरियत का हुक्म है।

सूर्या०—लज्जा करो २!! ऐ शरियत के अन्धे गुलामो! लज्जा करो। जब अकबर बादशाह ने अपने राज्य में गोकुशी बन्द करा दी थी—तब तुम्हारी शरियत कहाँ गई थी ? शरियत के नाम को बदनाम करने वालो! क्या तुम्हें नहीं मालूम कि तुम्हारी कुरान शरीफ में लिखा है कि खुदा के अदना से अदना बन्दे को भी कष्ट देना भारी गुनाह है।

वज़ीर—ओ मुल्क का बाग़ी ! तू मुल्क को जान के मुकाबिले में तरजीह देता है।

सूर्या०—अवश्य—

बुल बुलों के दिल में इज़्ज़त है चमन के वास्ते।
छोड़ सक्ते हैं जहाँ को अंजुमन के वास्ते॥
जिस तरह बिकते हैं आशिक गुलबदन के वास्ते।
जान दे देंगे खुशी से हम वतन के वास्ते॥

ओ गुलाम—कीड़े !! जालिम शैतान !! दरबार के खुशामदी कुत्ते ! तू देश भक्ति का गौरव क्या जाने।

हम अपनी जन्म भूमि के लिये गरदन कटा देंगे।
करेंगे इसकी रक्षा और निज सर्वस लुटा देंगे॥
हमें उद्धार करने को तुम्हें संहार करने को।
हम अपनी ख़ून की धारा से गंगा जी बहा देंगे॥
वतन क्या है वतन की बू वतन की आबरू क्या है।
वतन पर कैसे मरते हैं ज़माने को दिखा देंगे॥

वज़ीर—बस अपने बकवास को बन्द कर, इस ज़िक्र को छोड़।

सूर्या०—उस पर भी यह अन्याय कि हम से कर लिया जाय ? क्या यह कम पाप है ?

वज़ीर—नहीं यह कोई पाप नहीं है।

सूर्या०—पाप नहीं है ? हमारे मेहमान बन कर आना, हमी पर हुकूमत जताना—और फिर हमारे ऊपर 'कर' लगा कर हमारी जाति व देश को निर्दयता से मिटाना ?

वज़ीर—नादान छोकरे ! जबांदराजी से बाज़ आ ! अगर

अपनी ख़ैरियत चाहता है तो ले दस्तख़त की कुञ्जी से अपनी किस्मत का ताला खोल।

सूर्या०—यानी ?

वज़ीर—यानी इस शर्तनामे पर दस्तख़त कर।

सूर्या०—शर्तनामा ! कैसा शर्तनामा ? आखिर इसमें क्या लिखा है ?

वज़ीर—वही मुसलमान हो जाना, रियासत को सालाना महसूल चुकाना और पंच हज़ारी ख़िताब पाना।

सूर्या०—नहीं हो सकता—कभी नहीं हो सकता ! ओ मज़हबी दीवाने ! यह हिंदू जाति कच्ची मिट्टी से बनी हुई नहीं है जो देश और धर्म को छोड़कर तुम्हारी सोने की लंका पर लुभा जायेगी। तुम्हारे भय से भयभीत हो अधर्म की ओर पग उठायेगी। ये आर्य जाति की सन्तान है। धर्म में तत्पर रहना, देश की सेवा करना, इनका कर्तव्य महान है।

बिजलियाँ टूट पड़ें दुख की घटा छा जाये।
उबाल खा के समन्दर यहां समा जाये॥
आज यमराज भी सम्मुख जो मेरे आ जाये।
है असंभव जो मुझे एक पग डिगा जाये॥

(काग़ज़ फाड़ना)

वज़ीर—बस ख़बरदार ! ज़्यादा न बोल।

सूर्या०—परमात्मा ने जिह्वा उसका गुण गाने और ग़रीबों की आह से इस संसार को जगाने के लिये ही बनाई है।

वज़ीर—बेवकूफ ! यह बीजापुर की बादशाहत और बीजापुर की ही ख़ुदाई है।

सूर्या०—झूठ है।

वज़ीर—नहीं सच है।

सूर्या०—परमात्मा वह है जो संसार का पालन करता है।

वज़ीर—तो हमारा नवाब भी अपने मुल्क़ की परवरिश करता है।

सूर्या०—मगर वह खुदा नहीं।

वज़ीर—तू गुस्ताख़ है!

सूर्या०—किन्तु मिथ्या भाषी नहीं।

वज़ीर—तू ज़बाँदराज़ है!

सूर्या०—पर चापलूस नहीं।

वज़ीर—तू बदमाश है!

सूर्या—मगर देशद्रोही नहीं।

वज़ीर—तू बाग़ी है!

सूर्या०—पर ज़ालिम नहीं!

वज़ीर—तू काफिर है!

सूर्या०—मैं नहीं बरन तू काफिर है।

वज़ीर—यह हिम्मत! यह जोश ख़रोश! मेरे सामने और यह हौसला, यह शैतानी? ले अपने किये की सज़ा पा। इस ज़बाँदराजी का मज़ा उठा।

(पिस्तौल चलाने चाहना अन्दर से ज़ोहरा का फायर करना)

जोहरा—(लक्ष्मी के साथ प्रगट होकर) नहीं, बल्कि ख़ुदा से इनकार करने वाला ही काफ़िर कहलाता है और बुरा नतीजा उठाता है।

सि०—(आकर) वज़ीर साहब। यह आपका गुलाम आपकी मदद को आया—

सूर्या०—(वजीर का तमंचा लेकर) और जैसा किया वैसा फल पाया।

(तमञ्चा मार देना)

लक्ष्मी—चलिये २ शीघ्र यहाँ से निकल चलिये, वर्ना ग़ज़ब हो जायगा।

सूर्या०—एक क्षत्री मर जायगा पर रण से पीठ न दिखायेगा।

दूसरा सि०—(आकर) पकड़ लो २ यही है काफ़िर, भागने न पावै।

सूर्या०—आवे २ जिसकी हिम्मत हो मेरे सामने आवे।

(कई सिपाहियों का आना सूर्या एक हाथ में तलवार दूसरे हाथ में पिस्तौल लेकर जोहरा और लक्ष्मी को लेकर लड़ते हुए निकल जाता है।)

टेब्ला

अङ्क २ दृश्य ४

मार्ग ।

(सूर्या ज़ोहरा और लक्ष्मीशंकर का बातें करते आना)

सूर्या०—महाशय ! आपने जो उपकार किया है उसके लिये मैं अत्यन्त आभारी हूँ ।

लक्ष्मी—आर्यपुत्र ! उपकार-कर्तव्य और धर्म तीनों कार्य अलग २ हैं । इस प्रपंची और स्वार्थी संसार में जब ऋषि मुनि तक स्वार्थ के वशीभूत हैं तो मैं एक साधारण मनुष्य हूं ! क्यों भाई ज़ोहर अली !

ज़ोहरा—बजा इर्शाद !

सूर्या०—तो क्या तुमने स्वार्थवश मुझे कारागार से निकाला है ? क्या तुम्हारा मुख उज्ज्वल और हृदय काला है ?

लक्ष्मी—सम्भव है, क्यों जनाब ?

ज़ोहरा—मुमकिन है ।

सूर्या०—तो शीघ्र बताओ, मैं तुम्हें इस उपकार का क्या बदला दे सकता हूं ?

लक्ष्मी—आप से बदले की आशा नहीं ।

ज़ोहरा—और ज़रूरत भी नहीं ।

सूर्या०—यह कैसा रहस्य है, क्या मैं कुछ भी आपकी सेवा नहीं कर सकता ?

लक्ष्मी—आप धैर्य रखें। बदला देने वाले से बदला ले लिया जायगा।

ज़ोहरा—वेशक।

सूर्या०—किन्तु मुझसे कहने में............

लक्ष्मी—बुराई है, हानि है।

ज़ोहरा—और बदनामी भी है।

सूर्या०—महाशय ! मैं आप के उपकार के बोझ से दबा हुआ हूँ। कृपया यह बतलाइये आप कौन हैं ?

लक्ष्मी—(ज़ोहरा से) आप की क्या राय है ?

ज़ोहरा—कह सकते हैं।

लक्ष्मी—अच्छा तो ध्यान से सुनिये। निम्बालकरकी पुत्री लक्ष्मी ने मुझसे प्रण किया है कि यदि मैं तुम्हें छुड़ा लाऊँ तो वह मेरे साथ ब्याह कर लेगी।

सूर्या०—हे ईश्वर ! यह मैं क्या सुन रहा हूँ ? क्या यह बात सत्य है ?

ज़ोहरा—इसमें ताज्जुब की क्या बात है ? क्या हमारे ये दोस्त कुछ कम हसीन और बहादुर हैं ?

सूर्या०—बस २ इस असत्यता को अपने पास ही बांध रखो। ओह ! यह संसार, यह पृथ्वी, यह सूर्य्य, यह चन्द्र सब मिथ्या हैं ! तुम सब प्रपंची और झूठे हो !

लक्ष्मी—क्या पागल हो गये ?

ज़ोहरा - इसमें शकही क्या है।

सूर्या०—मेरे उपकारियो ! आज तुम लोगों ने सूर्या जी को जीत लिया। आह, अब मैं अपना कलंकी मुख प्यारी लक्ष्मी को नहीं दिखा सकता। लो भाइयो, इस तलवार से मेरा सर काट कर लक्ष्मी के पैरों पर डाल देना। यही मेरी प्रार्थना है !

लक्ष्मी—किस लिये ? क्या तुम भी लक्ष्मी को चाहते हो ?

सूर्या०—हाँ चाहता था। पर अब मैं उसके योग्य नहीं रहा। जब लक्ष्मी ने तुमसे विवाह का प्रण कर लिया है, तो शीघ्रता करो, मेरे इस घृणित जीवन से मुझे उबारो।

लक्ष्मी—(जोहरा से) क्यों ?

ज़ोहरा—(सिर हिलाकर) हरगिज़ नहीं।

लक्ष्मी—वीरवर ! मैं क्षत्री संतान हूँ, निरपराध के ऊपर शस्त्र नहीं उठा सकता।

सूर्या०—तो एक और प्रार्थना है !

लक्ष्मी—कहिये !

सूर्या०—हम दोनों आपस में न्याय संगत युद्ध करें—जो हार जाये वह स्वर्ग को जाये—जो विजयी हो वह लक्ष्मी से ब्याह रचाये।

लक्ष्मी—प्रस्तुत हूँ।

जोहरा—नहीं २ यह कैसे हो सकता है। अभी तुमने इसकी जान बचाई और अब यह तुमसे लड़ना चाहता है ! बड़े शर्म की बात है। यह तुम्हारे ऊपर तलवार उठाता है—या खुदा ! यह तो कोई बदमाश नज़र आता है।

लक्ष्मी—(इशारा करके) जरा आप तमाशा तो देखिये। (सूर्या से) हाँ जनाब !

सूर्या०—आइये (तलवार फिराना)

लक्ष्मी—ज़रा ठहरिये मैं सोच लूं।

(इसी तरह तीन बार कहना जोहरा का तमंचा तैयार करना)

लक्ष्मी—आइये आइये। (दोनों में तलवार चलती हैं पीछे से सलीम फौज के साथ आता है)

सली०—पकड़ लो पकड़ लो, बदमाशों को, दगाबाज़ों को! जेल से भागने का नतीजा अभी मालूम पड़ जायेगा।

(तीनों एक तरफ हो जाते हैं)

लक्ष्मी—क्यों जनाब! कभी आपकी यह ख़ून की प्यास बुझ भी सकती है?

सली०—बुझेगी, मगर हिन्दुओं के खून से।

लक्ष्मी—क्या हिन्दू मुसलमान हिन्दुस्तान जैसे बड़े मुल्क में एक दिल होकर नहीं रह सकते?

सली०—कभी नहीं।

लक्ष्मी—एक दूसरे का शत्रु ही बने रहेंगे?

सली०—हमेशा।

ज़ोहरा—मैं पूछता हूं तुम्हें खुदा का डर है?

लक्ष्मी—ईश्वर का भय है?

सली०—है।

लक्ष्मी—इस ईश्वर के दिये हुये शरीर को मिटा कर ईश्वर को क्यों ख़फ़ा करते हो?

ज़ोहरा—कुफ्र करते हो?

सली०—बहस न करो। जंग करो या अपने को हमारे हवाले करो।

ज़ोहरा—करो करो जी तोड़ कर जंग करो।

ल०—झोको २ ईश्वर की आँखों में धूल झोंको॥

(सूर्या और सलीम दोनों का लड़ना—दोनों एक दूसरे की गरदन पर तलवार रखते हैं)

(झपट कर लक्ष्मी सूर्या के आगे—जोहरा सलीम के आगे सिर खोल कर खड़ी होती है)

दोनों—अपनी जान देने के पहले हमारी जान ले लो।

(सलीम के तमन्चे से जोहरा की मौत)

सूर्या०—प्यारी लक्ष्मी ?

लक्ष्मी—प्यारे सूर्या जी ! (दोनों का जाना)

सली०—अज़ीज़ जोहरा !

ज़ोहरा—भाई सलीम ! यह क्या कर डाला ? या खुदा ! मेरे खून से हिन्दू मुसलमान दोनों के दिल के काँटे निकल जायँ, दोनों एकता से मिल जायँ।

खुदा के घर की मेरी रुह अब मेहमान होती है।
कि भाई ! तेरे हाथों से बहन कुर्बान होती है॥
खुदा ये क़ौम हिन्दू और मुसलिम आज मिल जायें।
वतन के वास्ते दोनों फटे दिल आज सिल जायें॥
इलाही अपनी रहमत से मिटा दे दाग़ भारत का।
फलै फूलै हरा होकर सदा यह बाग़ भारत का॥

ओ खुदा ! ओ रहीम !! (मृत्यु)

सली०—अफसोस ! प्यारी हमशीरा ! अज़ीज़ ज़ोहरा ! ज़ोहरा ! मुझे माफ़ कर। ग़लती हुई। नशे में निशाना चूक गया—उफ़ ज़ोहरा !!

(गिर पड़ता है—टेब्लो)

अङ्क २ दृश्य ५

राजा यशवन्त सिंह का पड़ाव।

[यशवन्तसिंह और मंत्री का बातें करना]

यश०—पूना दुर्ग पर शायस्ता खाँ ने पूरी तौर से कब्जा कर लिया—क्या यह बात सच है मन्त्री जी ?

मंत्री—जी हां यह अक्षर २ सत्य है ! खाँ साहब ने बड़ी चतुराई से पूना का क़िला हाथ में ले लिया है !

(द्वारपाल का प्रवेश)

द्वार०—महाराज की जय हो ! दरवाजे पर एक पागल आदमी खड़ा है। वह अपने को शिवा जी का दूत बताता है। आपके दर्शन को आना चाहता है।

यश०—आने दो ! (स्वगत) एक पागल को दूत बनाकर भेजना, इस में भी कुछ न कुछ रहस्य अवश्य होगा !

(दूत का प्रवेश)

दूत—खाँ-साहब सलाम !

दरबारी—हैं २, महाराज यशवन्त सिंह हैं ! खाँ साहब नहीं !

दूत—क्षमा कीजियेगा—भूल हुई ! महाराज की सेवा में यह नज़राना शिवा जी ने भेजा है ! (थाली पैरों पर रखता है)

यश०—हैं, यह कैसा आश्चर्य ! दूत ! क्या शिवा जी भी तेरी ही तरह पागल हैं ?

दूत—जी हाँ महाराज ! शिवा जी पागल है और दस बार पागल है ! सोचिये तो सही, संसार के राज सुखों को तिलाञ्जली देकर अकेला ही यवनों का मुक़ाबिला करने को खड़ा हुआ है। पागल है, बिलकुल पागल है। जो पागल न होता तो आप की तरह सुन्दर २ वस्त्र पहनता! चैन से जीवन व्यतीत करता। मुग़लों का दास बन जाता तो क्या होता? महाराज शिवा जी अवश्य पागल है।

यश०—(थाली देख और चौंक कर) हैं २ ! यह कैसा आश्चर्य ! इस थाल में तो बड़ी विचित्र वस्तुयें भेजी गई हैं? यह सब क्या है दूत?

दूत—महाराज ! यही पागलों की बची खुची सामग्री हैं !

यश०—अर्थात् ?

दूत—अर्थात्—समझ लीजिये खाँ साहब !

यश०—(तलवार निकाल कर) खबरदार !

सब०—चुप २ पाजी !

दूत—बस तो मालूम हुआ—मुग़लों के पैर की ठुकराई हुई रोटी खाकर भी अभी आप के अन्दर ठकुराई की ठसक मौजूद है ! मुसलमानों को अपने प्राणों के बदले अपनी मान-मर्यादा और जन्मभूमि तक बेच कर भी अभी हिन्दुत्व की सुगन्धि बाक़ी है ! बस तो महाराज, सुनिये—जब शिवा जी ने सुना कि क्षत्रिय-कुल-तिलक महाराज यशवन्त सिंह महाराष्ट्र के हिन्दुओं की गर्दन काटने आये हैं, भाई भाई के खून से अपनी प्यास बुझाने आये हैं तो यह थाड़ी सी सामग्री आपकी सेवा में भेजी है !

यश०—दूत ! तुम कोई असाधारण पुरुष हो ! तुम्हारी वाणी में वीरता, शब्दों में तेज और नेत्रों में ललकार का भाव दीख पड़ता है ! किन्तु यह रस्सी भेजने का क्या अभिप्राय है ?

दूत—महाराज ! देखिये और अच्छी तरह देखिये, यह रस्सी नहीं वरन् वेदपाठी ब्राह्मणों के पवित्र यज्ञोपवीत हैं, जिन हिन्दुओं के सत्यानाश के लिये आप इतनी दूर से आये हैं, यह उन्हीं के जनेऊ हैं। बस यहां के हिन्दू अपने भाइयों पर—अपने हिन्दू राजा पर हथियार चलाकर हिन्दू जाति का नाम नहीं डुबाना चाहते। अस्तु, महाराज ! आप जीत गये, लीजिये इन जनेऊओं को आग लगवा दीजिये, अपने हाथ से भस्म करवा दीजिये।

यश०—(स्वगत) ओह ! निस्संदेह मैं गिर गया, अपने धर्म पथ से गिर गया। क्या मैं हिन्दू नहीं ? मेरे शरीर में अब मुग़लों का लहू बह रहा है ? (प्रगट) हां दूत ! यह छोटी सी पुस्तक क्यों भेजी ?

दूत—महाराज ! मुग़ल राज के दास आपही इसको छोटी पुस्तक कह सकते हैं ! मैं हिन्दू हूं, मैं इसे भगवान का वाक्य गीता शास्त्र कहता हूं ! इसको भेजने का अभिप्राय यह है कि महाराज ! जिस हिन्दू धर्म की समय २ पर स्थापना करने के लिये भगवान जन्म लेते हैं, उसी धर्म को आप अपने पैरों से रौंद डालिये। मसल डालिये। इसे कुचल डालिये !

यश०—नहीं २ यह मेरी धर्म की पुस्तक है, मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता। परन्तु यह छुरी किस लिये भेजी है ?

दूत—इसलिये कि हिन्दू हिन्दू पर हथियार चलाने के

पहिले अपने प्राण दे देगा। बस आप खुशी से चलिये और अपनी तरह सबको बेखटके मुसलमान बना डालिये और महाराष्ट्र के सब हिन्दुओं की चोटी काट डालिये!

यश०—बस करो २ दूत! मैं भली भांति जान गया कि शिवाजी एक कट्टर हिन्दू हैं परन्तु तुम कह देना कि क्षत्रिय प्रतिज्ञा के अनुसार मैंने जो शब्द मुगल बादशाह को दे रक्खे हैं उनसे फिर नहीं सकता, एक लुटेरे डाकू का साथ देकर बादशाह को धोखा दे नहीं सकता।

दूत—क्या कहा, शिवा जी डाकू है, लुटेरा है? सोचिये २ ऐसे शब्द वीर चूणामणि महाराणा प्रताप के संबंधी के मुख से शोभा नहीं देते। सोचिये हिन्दू-कुल-भूषण! इस संसार में लुटेरा कौन नहीं है? बछड़े का हक़ छीन कर मनुष्य गाय का दूध खुद पी जाता है, लुटेरा है, किसानों का हक़ छीन कर राजा अन्न उठाले जाता है, लुटेरा है, महाराज, उसी मातृभूमि की संतान शिवाजी यदि महाराष्ट्र देश को मुग़लों से स्वतंत्र करना चाहता है तो लुटेरा कहाता है, तो क्या दूसरे देशों से आये हुये भारतवर्ष पर अधिकार करने वाले मुग़ल बादशाह-चोर-लुटेरे या डाकू नहीं हैं?

यश०—धन्यहो २ दूत प्रवर! तुमने मुझे आज सोते से जगा दिया। मेरी आत्मा को अपने उपदेश वचन से अपना लिया।

दूत—और सुनिये महाराज, नगर २ में पाठशालायें—गौ-शालायें अनाथालय और औषधालय जो दीख पड़ते हैं ये शिवा जी की लूट से ही चल रहे हैं। क्षत्री कुल श्रेष्ठ शिवा जी देश

रक्षक हैं और अधर्मी मुग़ल देश भक्षक हैं। बस महाराज, विश्वास कीजिए, हिन्दू जाति मर मिटेगी परन्तु मुग़ल बादशाह की कभी दासता स्वीकार न करेगी। आप वीर हैं, क्षत्री कुल दीपक हैं! आप चलिये! महाराष्ट्र के राजसिंहासन पर विराज कर उसे सुशोभित कीजिये! हम सब आपको छत्र देंगे! मुकुट पहनायेंगे, कर देंगे, अपना राजा मानेंगे। पर महाराज हम औरङ्गजेब को जजिया कदापि नहीं दे सकते यही मेरे प्रभु की प्रार्थना है। हिन्दू गौरव की रक्षा कीजिए यही याचना है।

यश॰—धन्य है, महाराष्ट्र देश—धन्य है शिवा जी! मुझे आज एक दूत के मुख से राजनीति की शिक्षा मिल रही है।

दूत—महाराज! महाराष्ट्र के वीर लोग अपने जीते जी मुग़लों से पददलित होना नहीं चाहते! ब्राह्मणों को धर्म भ्रष्ट होते-ऋषियों पर अत्याचार होते-मंदिरों को टूटते; गौओं को कटते और अपनी देवियों के सतीत्व नष्ट होते हम लोग नहीं देख सकते।

यश॰—बस २ करो दूत! बुलाओ २ शिवा जी कहाँ हैं? मैं उनके दर्शन से अपना जीवन सफल करूँगा। मैं शिवा जी का साथ दूँगा और मुगलों का विध्वंस करूँगा।

दूत—महाराज! आपका दास शिवा जी आपके सामने उपस्थित है!

यश॰—(लिपट कर) हैं २ तुम्हीं शिवा जी हो! धन्य हो, धन्य हो वीर, धन्य हो!!

(यवनिका पतन)

अङ्क २ दृश्य ६

(प्रवेश घसीटा)

घसीटा—10, 45, 62, 73, और 7 अस्सी plus twen-ty one hundred. पूरे दस दस के सौ नोट। अरे वाहरे मिस्टर घसीटा ताम लोट! लेडिज़ एण्ड ज़न्टिल मैन! क्या कहूँ, वक्त बहुत ख़राब है।

मैली फटी पोशाक से होती नहीं इज़्ज़त।
होती है फ़क़त कोट बूट हैट से इज़्ज़त॥
धोती से सेकण्ड क्लास में होती नहीं इज़्ज़त।
पर ख़ूब है तक़दीर से इस ठाठ की इज़्ज़त॥
असली नहीं साहब तो मैं नक़ली ज़रूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

जब हजामत बनाते बनाते हाथों में छाले पड़ गये, पानी भरते भरते खोपड़ी का दिवाला निकल गया! यजमानों की भाड़ झौं की चौकार, हरेक खिदमत का तलबगार! पर पैसे के नाम तकरार; तो कुत्ते के [illegible] कपट के पासे से वह धोके की चाल चली कि [illegible] रह रहा। इज़्ज़त बढ़ाने को वह अंग्रेजी —मज़ा तो यही है। [illegible] फ़क़त. किस्मत आजमाने के लिये घसीटा—अरे मजे के ठेकेदार! जल्द दिल लगानेके लिये पार्टी खोपड़ी का सिमेन्ट उखाड़ फेंकेंगे। जब से इज़्ज़त मिली

तो इज्ज़त से खर्च बढ़ा, खर्च से अक्ल बढ़ी और अक्ल की जोर से जाली नोट बनाये। और वही नोट फिर मिस्टर घसीटा ने बाजार में चलाये—वेल थ्री चीअर्स फौर औनरेबुल मिस्टर घसीटा, हिप २ हुर्रे ३ !!!

होता है नतीजा यही हम से बहादुरों का।
लो देख लो तमाशा साहब बहादुरों का॥

(आना इन्श्योरेन्स एजेन्ट और बेढब का)

बेढब—साहब बहादुरों का—चोट्टे, लफंगे, शोहदे बदमाश-कहिये कहिये २ आप इनके लिये क्या क्या कह रहे थे?

एजेण्ट—लाइये, लाइये दिलवाइये, अब रोज २ बहाना नहीं चल सकता सरकार!

बेढब—लीजिये, ये भी हाज़िर हैं मौत के ठेकेदार।

एजेण्ट—अजी हज़रत! हींग की मण्डी, नाई की मन्डी अफीम की मण्डी, जीन की मण्डी, नोन की मण्डी, दाल की मण्डी सब छान मारी और पलन गंज, बेलन गंज, रकाब गंज इत्यादि शहर के सारे गंजों को देख आया मगर इस भौंडी शकल का कहीं नामो निशान भी न पाया। मगर यहाँ क्या आप कोई नाटक कर रहे हैं या सड़क पर झाड़ू लगा रहे हैं?

घसीटा—पर साहब! आपसे यह मण्डियों की और गंजों की Dictionery बोलने को किसने कहा था? बोलिये आप क्या चाहते हैं?

एजेण्ट—चाहते हैं आप [illegible] दिलवाइये, सीधे हाथ से बीमे की पहली [illegible]

बनिया—करफ

नक़द! फिर मर्रीच के महीणे में १६½ शेर दूध नक़द २०) रुपयो दो आणे की व्याज पर। तिनके शूद ≠)॥ रुपयो के हिशाब शूं पौणे २६) और फिरैल के महीणे में—

बेढब—हत् तेरे फिरैल की ऐसी तैसी! शर्म है, लानत है तुम पर और तुम्हारी पोथी पर। इतने बड़े नक़द शरीफ़ आदमी की इन दस भले आदमियों में इज़्ज़त उतार रहे हो!

बनिया—अरे बेटा, यह भी कोई फोकट को माल शमझ रखो है कि जो दोणो हाथों शे खातो है, फिर ऊपर शूं गुर्रातो है और आँखें दिखातो है?

बेढब—अरे लाला, क्यों धोती से बाहर निकले जाते हो तीन महीने की तलब तो मेरी चढ़ रही है।

घसीटा—फँस गये बेटा चूहे दान में।

क्या खूब नमूना है यह साहब बहादुरों का।
देखा न होगा हाल यूं साहब बहादुरों का॥
गो हैट कोट पेन्ट है साहब जरूर हूं।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूं॥

मगर इन बनमानुषों से कैसे पीछा छुड़ाऊँ? गिरती हुई इज्ज़त की बिल्डिङ्ग कैसे बचाऊँ? बेढब २! (कान में) जा २ जल्दी से बुला ला, कुत्तें की चाल से जा, बिल्ली की चाल से आ।

बेढब—मज़ा तो यही है।

घसीटा—अरे मज़े के ठेकेदार! जल्दी जा, नहीं तो ये लोग तेरी खोपड़ी का सिमेन्ट उखाड़ फेंकेंगे।

बेढब—सिमेन्ट उखड़ जायगा तो क्या हर्ज़ है? मिस्फ़ोकट आकर मज़बूत कर देंगी।

घसीटा—Get away you dam गेटअवे यू ड्याम!

बेढब—Good night गुड नाइट!

घसीटा—हाँ जनाब लाला साहब, इन आदमियों का और मेरी इज़्ज़त का ख़याल करके आज तो माफ कीजियेगा।

बनिया—माफी, माफी, कैशी? तेरी माफी कूं ले के चाटूं या ख़ैरात में बाँटूं?

घसीटा—अजी-एजेन्ट साहब! फ़िर ले लेना।

एजेन्ट—हज़रत! यह तो डाक्टरी की फीस का बिल है। मालूम तो तब पड़ेगी जब हर तीसरे महीने बाद प्रिमियम (Premium) का Warrant निकला करेगा।

घसीटा—(स्वगत) बुरे फँसे मियाँ घसीटा! मगर क्या बात है आज तो इन्हीं जाली नोटों से इनसे पीछा छुड़ाऊँ और इन दोनों को बड़े घर पहुंचाऊँ। (लाला के कान में) अच्छा चुपके से यह चार नोट ले लो मगर उस बैल से न कहना।

बनिया—अजी कभी नहीं।

घसीटा—(एजेन्ट से) लीजिये, बीमे के पहिले Premium के और १) इनाम। मगर उस लालू से न कहना।

एजेन्ट—नेवर माईण्ड। थैंक यू!

घसीटा—हाँ लाला साहब, अब आपको हमें कितना देना है?

बनिया—(हिसाब देखकर) ७५॥७॥

घसीटा—(एजेन्ट से) सुन लिया आपने ?

एजेण्ट—क्या ?

घसीटा—कि इनको हमें ४५॥) देने हैं ।

एजेण्ट—हाँ २ ठीक तो है ।

बनिया—इसमें डब्बल को भी फरक नहीं हो सकतो है शाहब !

घसीटा—आलराइट और एजेण्ट साहब ! आपको हमें क्या देना है ?

एजेन्ट—सिर्फ १६) रुपये ।

घसीटा—आपने सुना लाला साहब !

बनिया—क्यों नहीं, चेहरे शाही १६) ।

घसीटा—मगर तुम्हारा हिसाब गलत है ।

बनिया—बिलकुल नहीं ।

घसीटा—ग़लत है ।

बनिया—अरे क्या मुझमें भी ढोलकी तरह पोल समझ रक्खो है ? (आस्तीन चढ़ाना)

घसीटा—झूठ है ?

बनिया—सच है ।

बेढब—(आकर) मजा तो यही है ।

(जमादार का आना)

घसीटा—Good morning जमादार साहब ! जरा देखिये इनकी मुलाकी, बदजुबानी, बेशर्मी, महीनों से मुझे तंगकर रक्खा है ! मेरा सब रुपया पैसा दबा रक्खा है ।

जमादार—क्या बात है ?

बनिया—हुजूर, यह देखिये मेरा हिसाब गलत बताते हैं शिरी हजूर !

घसीटा—बिलकुल गलत, सवासौ में से कुल ४५॥) मंजूर करता है। क्यों एजेण्ट साहब !

एजेण्ट—बिल्कुल ठीक है।

जमादार—पूरा बदमाश है।

बेढब—मज़ा तो यही है।

घसीटा—क्यों एजेन्ट साहब ! इनको मुझे क्या देना है ?

एजेन्ट—४५॥)

जमा०—हम समझ गये। ये लोग दूकान में लकीर पर लकीर खींच कर उधार में उधार बढ़ाते हैं। और इन पर क्या चाहिये ?

घसीटा—लाला साहब ! आपही ईमान धर्म छोड़कर सच २ कह दीजिये इन्हें हमको क्या देना है ?

लाला—१६) तो इन्होंने अपने मुंह से ही मंजूर कियो है।

घसीटा—मार दिया पापड़ वाले को। हाँ जमादार साहब ! (जेब में रुपये डालकर) हम आपका बड़ा ऐहसान मानेंगे। जरा इन दोनों को कुछ दिन के लिये चिड़िया खाने में भिजवा दीजिये।

एजेन्ट—एँ यह क्या ? क्या उलटे बांस बरेली को लद रहे हैं ?

बेढब—मजा तो यही है।

लाला०—हत तेरी तकदीर की ऐसी तैसी। आये थे इसको शगुन बिगाड़ने पर अपनी नाकही कटा चले।

बेढब—मज़ा तो यही है !

जमा०—निकालो निकालो! अबे निकालो नहीं तो·········

दोनों—नहीं तो क्या?

जमा०—यह देख लो, अलीबकस और नापलो अपनी खोपड़ी। वरना·········

दोनों—(जाली नोट देकर) ये लो बाबा! हमारी जान छोड़ो।

जमा०—(देकर) लीजिये साहब सँभालिये।

घसीटा—बस २ रोब गठ गया है। साहब आप बड़े तजुर्बेकार हाकिम हैं! मगर है यह क्या······

जमा०—क्या है?

घसीटा—आप मुझे पकड़वाना चाहते हैं। मेरी इज्जत मिट्टी में मिलाना चाहते हैं? देखिये न ये तो जाली नोट हैं।

जमा०—सच मुच ये तो बड़े गुर्गे हैं!

बेढब—अजी दोनों विलायती मुर्गे हैं।

जमा०—क्यों बे बंदरो, लंगूरो, मेहनत करने में मरे जाते हो, जो इस तरह जाली नोट बनाते हो?

दोनों—हाय हाय! बुरे फँसे!!

घसीटा—शाबाश ÷

फैलेगा जाल हरगु हमसे बहादुरों का।
लो देखलो तमाशा साहब बहादुरों का॥
दुनियाँ के दावपेंच से वाक़िफ़ ज़रूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

दोनों—हुजूर, ये नोट इसने ही दिये हैं।

घसीटा—क्या साहब लोग जाली नोट रखता है?

जमादा०—चुप रहो तुम दोनों क्या बकता है।

बनिया—हुजूर, यह देखिये मेरा हिसाब गलत बताते हैं शिरी हजूर !

घसीटा—बिलकुल गलत, सवासौ में से कुल ४५॥) मंजूर करता है। क्यों एजेण्ट साहब !

एजेण्ट—बिल्कुल ठीक है।

जमादार—पूरा बदमाश है।

बेढब—मज़ा तो यही है।

घसीटा—क्यों एजेन्ट साहब ! इनको मुझे क्या देना है ?

एजेन्ट—४५॥)

जमा०—हम समझ गये। ये लोग दूकान में लकीर पर लकीर खींच कर उधार में उधार बढ़ाते हैं। और इन पर क्या चाहिये ?

घसीटा—लाला साहब ! आपही ईमान धर्म छोड़कर सच २ कह दीजिये इन्हें हमको क्या देना है ?

लाला—१६) तो इन्होंने अपने मुंह से ही मंजूर कियो है।

घसीटा—मार दिया पापड़ वाले को। हां जमादार साहब ! (जेब में रुपये डालकर) हम आपका बड़ा एहसान मानेंगे। जरा इन दोनों को कुछ दिन के लिये चिड़िया खाने में भिजवा दीजिये।

एजेन्ट—एँ यह क्या ! क्या उलटे बांस बरेली को लद रहे हैं ?

बेढब—मजा तो यही है।

लाला०—हत तेरी तकदीर की ऐसी तैसी। आये थे इसको शगुन बिगाड़ने पर अपनी नाकही कटा चले।

बेढब—मज़ा तो यही है !

जमा०—निकालो निकालो! अबे निकालो नहीं तो………

दोनों—नहीं तो क्या?

जमा०—यह देख लो, अलीबकस और नापलो अपनी खोपड़ी। वरना………

दोनों—(जाली नोट देकर) ये लो बाबा! हमारी जान छोड़ो।

जमा०—(देकर) लीजिये साहब सँभालिये।

घसीटा—बस २ रोब गठ गया है। साहब आप बड़े तजुर्बेकार हाकिम हैं! मगर हैं यह क्या……

जमा०—क्या है?

घसीटा—आप मुझे पकड़ाना चाहते हैं। मेरी इज्जत मिट्टी में मिलाना चाहते हैं? देखिये न ये तो जाली नोट हैं।

जमा०—सच मुच ये तो बड़े गुर्गे हैं!

बेढब—अजी दोनों विलायती मुर्गे हैं।

जमा०—क्यों बे बंदरो, लंगूरो, मेहनत करने में मरे जाते हो, जो इस तरह जाली नोट बनाते हो?

दोनों—हाय हाय! बुरे फँसे!!

घसीटा—शाबाश ÷

फैलेगा जाल हरग़ हमसे बहादुरों का।
लो देखलो तमाशा साहब बहादुरों का॥
दुनियाँ के दावपेंच से वाक़िफ़ ज़रूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

दोनों—हुजूर, ये नोट इसने ही दिये हैं।

घसीटा—क्या साहब लोग जाली नोट रखता है!

जमादा०—चुप रहो तुम दोनों क्या बकता है।

एजेन्ट—अच्छा यार, मैं भी बदला न लूं तो इन्सोरिङ्ग एजेन्ट ही नहीं।

लाला—और मैंने भी तुझे भूत न बनायो तो बाणियो नाम नहीं।

घसीटा—आप उन्हें ज़ोर से खींचे रहिये कहीं मुझे काट न खायें!

गाना।

घसीटा—

यह मारा वो मारा दोनों को दे मारा चकमा है मेरा अजीब—
यारो हज़ारों रईसों सरदारों को दम भर में करदूं ग़रीब—
मेरा नाम घसीटा हा हा हा:हा हा

एजेण्ट—हमें किया तबाह।

बनिया—हाय हाय हाय!!

घसी०—चकमा है मेरा अजीब।

(जमादार का पीटते और गाते २ सब का जाना)

अङ्क २ दृश्य ७

शाहजहाँ का महल

(पागल शाहजहाँ सोया हुआ है—जहान आरा दवा लाती है)

जहाँ०— गाना ।

अपना दुनियाँ में कहीं कोई सहारा न रहा ।
हम रहे खूब मगर कोई हमारा न रहा ॥
लूट कर हिंद को गौरी जो बहुत खुश देखा ।
हाथ मलता ही गया वो भी बिचारा न रहा ॥
पेश करते थे हमारे यहाँ लाखों लेकिन ।
आज अपने लिये दुनियाँ में गुज़ारा न रहा ॥
छोड़कर चल दिये "आनन्द" से झूठी दुनियाँ ।
गज़नवी और सिकन्दर गये दारा न रहा ॥

सो रहा है, बूढ़ा बादशाह सो रहा है। बादशाह नहीं एक ग़रीब मिसकीन, ज़िन्दगी से बेज़ार, उम्मीदों से लाचार, एक मुसीबतज़दा भलामानस सो रहा है। आह! ऐ दुनियाँ वालो, मैं तुमसे पूछती हूँ क्या शाहंशाह शाहजहाँ यही है, या उसके एवज़ कोई बूढ़े आदमी को औरङ्गज़ेब ने क़ैद कर रक्खा है? औरङ्गज़ेब! मेरे अज़ीज़ भाई!! तूने ऐसी शैतानियत का जामा क्योंकर पहन लिया? मज़हब के नाम पर दाग लगाने वाले, लालच की परदे में कुफ्र करने वाले, दोज़खी अन्धे,

तू नहीं जानता, कि इस बूढ़े की एक २ बद्दुआ तुझको बिहिश्त के रास्ते पर रोकेगी। बड़े भाई का ख़ून, मुराद का क़त्ल-बाप की क़ैद, ये सारी खुराफ़ातें सिर्फ मजहब के नाम पर! ओ हिन्दुस्तान में खुदगर्ज़ी की आड़ में दीने इस्लाम का झंडा खड़ा करने वाले भाई! याद रख—

ईमान से उस दर का जो सायल नहीं होता।
मज़हब की बू से दिल में जो क़ायल नहीं होता॥
वह अपने दीन दार से नाखुश नहीं होता।
झूठी खुशामदों से खुदा खुश नहीं होता॥

(शाहजहां चौंककर उठ पड़ता है)

शाह०—हैं! हैं!! वह झूठा है, खुशामदी है! मक्कारों से खुश, दीनदारों से नाखुश, गुनहगारों पर मेहरबान और ईमानदारों पर क़हर नाज़िल करता है। वह खुदा ही नहीं है। उसकी खुदाई ही नहीं है। कौन जहानआरा? जहान आरा! अब वह खुदा, खुदा नहीं रहा।

जहान०—(पकड़ कर) नहीं अब्बाजान! जिस खुदा ने औरङ्गजेब ऐसे शैतान को पैदा किया है, उसने हम आप जैसे ग़रीब मिसकीनों की जान भी बख़शी है।

शाह०—नहीं २ तुम झूठी हो। अब उस खुदा की खुदाई नहीं रही, उसे औरङ्गजेब ने रिशवत देकर मिला लिया है। वह देखो, औरङ्गजेब हमारी तरफ इशारा कर रहा है—और उसका खुशामदी खुदा हमारी तरफ़ आँखें फाड़ २ कर देख रहा है? ओ, ओ, खुदा (आंखें मीच लेना) जा, जा, तू भी खुशामदी है, मेरे सामने से चली जा।

जहान०—अब्बाजान !

शाह०—जहान आरा ! तू इस वक्त यहाँ क्यों आई ? क्या औरङ्गजेब ने तुझे भेजा है ?

जहान०—नहीं अब्बा ! मुझे अल्लामियाँ ने आप के पाक क़दमों की ख़िदमत के लिये भेजा है।

शाह०—जहानआरा ! तू मेरी बेटी है, मेरी आखों का नूर है............

जहान०—मेरे मेहरबान अब्बा !

शाह०—जहान आरा ! मैं तुझसे कुछ दर्याफ्त करूँ क्या तू सच सच कहदेगी ?

जहान०—ज़रूर ! अब्बाजान, आप शौक से पूछिये। मेरी सआदतमंदी का ख़ून औरङ्गज़ेब से ज़्यादा पाक है।

शाह०—(हाथ जोड़कर) मेरी औलाद, मेरे खून और मेरे कलेजे के टुकड़े ! (चारों तरफ देखकर) मुझे यह बता, मेरा ग़रीब दारा इस वक्त कहाँ है ? कहाँ पोशीदा है ?

जहान०—अब्बाजान ! उस फरिश्ते भाई का......

शाह०—क्या खून ? आह ! मेरे नूरे नज़र—ख़ून ! ख़ून !!

(पछाड़ खाना)

जहान०—आह ! किस क़दर नातवानी ? तिसपर यह बदख़बरें ? या ख़ुदा रहम कर ! अपने बेकस लाचार मज़लूमों पर रहम कर !!

गाना।

मज़लूम बेकसों को राहत सरूर क्या है।
गुरबत में पिस चुके हों उनको ग़रूर क्या है ?

हमें क्यों सता रहे हो हमें क्यों जला रहे हो।
आख़िर तो कुछ बताओ अपना क़सूर क्या है ?
क़िस्मत का फेर क्या है मेरी बार देर क्या है।
ऐसा असर भी आख़िर दिल पर हज़ूर क्या है ?
बेकस की आरज़ू पर कर दे रहम खुदाया।
गरदिश यही है 'आनन्द' सर में फतूर क्या है ?

शाह०—(उठकर) उफ़, देखो, देखो, दरिया उमड़ा हुआ चला आ रहा है। चारो तरफ आग लग गई है। किले की दीवारें बह रही हैं। जुमा मसजिद से नमाजी सदाओं का धुआँ निकल रहा है। मुल्लाओं के क़त्ल से दरिया बह रहा है। कौन २ औरंगजेब ! (जहानारा का गला दबाना) मूज़ी, शैतान, काफ़िर, पकड़ लिया। आज तुझे मार डालूँगा-खा जाऊँगा-

जहान०—अब्बा २ क्या आप सचमुच पागल हो गये ?

शाह०—अगर पागल न होता तो तुम्हारा एक अदना कैदी कैसे होता ? पागल समझ कर ही तूने मेरे वालिये मुल्क फरिश्ते दारा को कत्ल कर दिया, मुराद को मरवा डाला। पागल, पागल के बच्चे ! तुझको यहीं दफन कर दूँगा।

जहान०—अब्बाजान ! मैं तो तुम्हारी जहान हूँ।

शाह०—कौन जहान आरा ? माफ कर मेरी बेटी, माफ कर ! मैंने बड़ा बुरा ख़्वाब देखा है !

जहान०—क्या देखा है अब्बाजान ?

शाह०—बेटी, देख वो सफेद संगमरमर की इमारत नज़र आती है ?

जहान०—वह तो हमारी अम्मीजान की क़ब्र ताजमहल है अब्बाजान!

शाह०—बस २ मैंने देखा है कि तेरी माँ की पाक रूह मुझे लानत मलामत कर रही है और दारा की मौत से पेशतर मुझे बुला रही है।

जहान०—अब्बा जान! आपकी कमज़ोरी बहुत ज़्यादा बढ़ी जा रही है! आप ज़्यादा बात चीत न करें।

(शाहजहाँ बैठता है—ऊपर देख कर)

शाह०—जहान आरा! औरङ्गज़ेब तख़्त पर चैन से बैठ गया?

जहान०—जी हाँ।

शाह०—रिआया ने सर भी नहीं उठाया?

जहान०—मारे जाने के डर से?

शाह०—चूं भी नहीं की?

जहान०—शाही ख़ौफ से?

शाह०—ओह! क्या अब मुझे कोई बादशाह कहने वाला नहीं है?

जहान०—हां है! आप की बेटी जहान आरा है।

शाह०—जहान, जब मैं तुम्हारा बाप हूँ और बादशाह भी हूँ तो तुमको मेरा हुक्म मानना चाहिये।

जहान०—मैंने कब इनकार किया अब्बा जान?

शाह०—अच्छा तो मैं तुमको अपनी-अपनी बादशाहत की-अपने दीन की-ग़रज़ अपने हर अज़ीज़ की क़सम दिलाता हूँ और हुक्म देता हूँ कि मैं जैसा कहूँ वैसाही करना।

जहान०—तैयार हूँ अब्बा ! हुक्म दीजिये !

शाह०—अच्छा जब मैं इशारा करूँ, इस रस्सी को काट देना।

जहान०—बेहतर—

(शाहजहाँ का मुँह पर पट्टी और कमर से रस्सी बाँध कर ऊपर चढ़ना)

जहाँ०—अफ़सोस ! जिस-शख़्श की बुज़ुर्गी पर ज़िन्दा और बेजान, ज़मीन व आसमान सभी तरस खाते हैं, खुद मौत भी जिसके आगे रहम के हाथ जोड़े खड़ी है, आज उस बेचारे की ज़िंदगी को ज़लील होते हुये ये आँखें कैसे देख सकेंगी।

शाह०—नहीं नहीं ? जहान आरा ! देख मैं अगर यूं ही मर जाऊँगा तो यह सब खेल बिगड़ जायेगा। मुझे अभी औरङ्गजेब को एक बड़ा भारी सबक़ सिखाना है।

जहान०—(खुद से) शुक्र है अब समझ आई।

शाह०—(सरपर हाथ मारकर) ओह ! जुल्म की भी हद होती है, मुसीबतों का भी आख़ीर होता है। मगर मुझ बदवक़्त की क़िस्मत ने ढाई साल से अभी तक पल्टा नहीं खाया। ऐ दुनियाँ वालो ! जिन बच्चों के लिये तुम मानतायें मानते हो, सैय्यद, पीर, पैग़म्बरों की इबादत करते हो, परस्तिश करते हो, मगर जब खुदा के फजलो करम से वह बच्चा गोद में होता है तो कितना छोटा होता है। उसवक्त जिसतरह बिल्ली अपने बच्चे को खाती है तुम भी खा सकते हो। शेर और भालू वग़ैरह जंगली जानवरों की तरह तुम भी उनको मौत के घाट लगा सकते हो। मगर नहीं, ये दुनियाँ वाले पागल हैं ! उनको इस अम्र का क़तई इल्म नहीं है, कि एक दिन यही बच्चे बड़े

होकर तुमको खाने की कोशिश करेंगे। आह कैसा ग़ज़ब है! फेंक दो, ऐ माँ ओ, अपने बच्चों को ज़मीन पर पटक दो। बाप कहलाने वाले ग़रीब शख्सो! इन बच्चों के गलों पर फौरन छुरी चलाओ। वर्ना ये सब एक दिन औरङ्गज़ेब बन जायँगे (उठकर) ये सुहावने हरे पीले फल कैसे खुश्नुमा हैं! मगर नहीं २ ये भी एक रोज काँटे निकाल २ कर ऊँचा सर कर के खड़े हो जायँगे। ये भी एक दिन औरङ्गज़ेब बन जायँगे।

(फूल तोड़कर फेंकता हुआ भाग जाता है पीछे २ जहांन आरा जाती है)

(सीन ट्रान्सफर)

अङ्क २ दृश्य ८

शायस्ता खाँ का महल

(शायस्ता खाँ बैठा है शराब का दौरा चल रहा है—नाच हो रहा है)

सहे०— गाना

हिल मिल के रंग रचावो रचाओ प्यारी ।
तान सुनाओ, भाव दिखाओ, अबरू के तीर चलाओ २ प्यारी ॥
कमर झुका के, सैन चला के, सैयाँ से नेह लगाओ २ प्यारी ॥
बन बन के बिगड़ जाते थे सौ बार मिनट में ।
बनते न थे किसी से उन्हें क्यों बना लिया ॥
अबरू चढ़ा कर मूं फुला कर आँख दिखा कर ।
रूठे हैं इस लिये कि हमें क्यों मना लिया ॥
प्रीतम को आज रिझाओ २ प्यारी ।
भर भर के जाम पिलाओ २ प्यारी ॥

(नाचने वाली बैठ जाती हैं)

उस्मान—आ हा हा हा !!

रहीम—(भयातुर होकर) अरे मेरे खानदानी खुदा ! यह क्या आफत ?

१ उमरा—क्या हुआ ?

रहीम—या खुदावन्दकरीम ! (बैठकर सांस लेता है-पंखा करता है) भाई उस्मान, मैं तो डर गया। समझा कि जैसे शिवा जी आ गया। नब्ज चली गई, दम निकल गया, पसीना आ गया। दिल बन्द हो गया। बदन ठंढा पड़ गया। या खुदा ! क्या मैं सचमुच मर गया ? (अपनी नब्ज देखता है)

२ उमरा—अ हा हा हा ! कैसा जापानी बेवकूफ है ? अरे भाई ! क्या तुम्हें सोते-जागते उठते-बैठते, हमेशा शिवा जी ही नज़र आता है, जो तू हर वक्त डर के मारे मरा जाता है।

रहीम—भाई जान ! बात यह है कि मैंने उस काफिर को एक रोज़ तलवार चलाते देखा था। आह ! (पंखा करना) उसका नाम शिवा जी है।

शाय०—वह कैसी तलवार चलाता है ?

रहीम—हुज़ूर ! वह बिलकुल अनाड़ी है, बेवकूफ है। न दिल में सोचता है न अक्ल से काम लेता है और न तलवार चलाने का क़ानून ही जानता है। झट तलवार निकाली और लगा छम्मी जान की तरह थिरक २ कर नाचने।

शाय०—(हँसकर) फिर ?

रहीम—हुजूर वाला ! मिनट भर में हमारी फौज को कुल तीस मराठों की मदद से चनें के खेत की तरह काट कर रख दिया। हुजूर, उसका नाम शिवा जी...............

उस्मान—मगर भाई, तुम कैसे बच गये ?

रहीम—मैं सरकार, मेरी न पूछो।

उस्मान—आखिर कुछ तो बयान करो !

रहीम—मैं ने बड़ी बहादुरी दिखलाई।

उस्मान—वह कैसे ?

रहीम—वह ऐसे, कि जब मैंने सर और नाक पर हाथ रख कर देखा कि दोनों बख़ैरियत मौजूद हैं तो बस नज़र बचा कर ज़मीन पर पेट के बल सरकता हुआ एक दरख़्त पर चढ़ गया और मूछों पर ताव देता हुआ खूब सरकस का तमाशा देखा, क्या कहूँ भैय्या उसका नाम शिवा जी है।

सब०—वाह रे तुम्हारी बहादुरी !

शाय०—अच्छा वक़् फजूल न गँवाओ। कुछ नाच रंग हो-शराब की जंग हो।

रंडी०— गाना।

रूठ बैठे आज हम से आज़माने के लिये।
मूं फुला कर चल दिये शेखी जताने के लिये ॥
फेर दो मुझको मेरा दिल हम से तुमको काम क्या।
क्या हमीं बाक़ी हैं दुनियाँ में जलाने के लिये ॥
हमने गिरवीं रख लिया दिल आशि क़े नाशाद का ॥
ख़ूब पाया है खिलौना दिल लगाने के लिये।
आँख फेरी उस बुते काफिर ने सब कुछ लूट कर ॥
जब नहीं बाक़ी रहे हम माँग खाने के लिये।
इश्क़ की आतिश में फ़ुर्क़त के सबब शोला उठा।
खूँ के आँसू चाहियें इसको बुझाने के लिये ॥
आह भर कर कहते हैं किस काम की यह छेड़ छाड़।
जख़्मे दिल 'आनन्द' कोशिश है छिपाने के लिये ॥

(जाना)

उस्मान—हुजूरे अनवर ! आज शाम को जो मराहठों की बरात शहर में आई है अजीब ढंग की कार्रवाई है।

रहीम—हुजूर, वे सब काफिर आपके महलों की तरफ आँखें फाड़ २ कर देख रहे थे।

शाय०—हाँ यह तो हमने खुद अपनी आँखों से देखा कि वे लोग ऊपर की तरफ ग़ौर से देख रहे थे। मगर मेरा ख़्याल है कि इन देहाती गदहों ने कभी बड़ी २ शाही इमारतें देखी ही नहीं हैं। इसी लिये इतनी दिलचस्पी से देख रहे थे।

सब०—वाह, वाह, वाह, वाह।

रहीम—हुजूर ! मुझे तो ख़ौफ हो रहा है, कहीं वे भूखें बिल्ले हमारे सर्कार की दरे दौलत को नज़र न लगा जाँय। कहीं महलों के अन्दर न आ जाँय। उसका नाम शिवा जी है।

शाय०—यह सब तुम्हारा ख़्याल है। क्योंकि परसों कुल २५ आदमियों का इज़ाज़त नामा मंजूर किया है और उन से एक भी ज़्यादा नहीं नज़र आया

रहीम—क्या कहा हुज़ूर ! २५०० आदमी ! तब तो बरात बड़ी ज़बरदस्त है।

शाय०—अरे डरपोक २५०० नहीं फकत पचीस।

रहीम—हुज़ूर ! सच मानिये मराठे कुछ जादू भी जानते हैं। एक २ आदमी सौ सौ पठानों के लिये काफी होता है। उसका नाम शिवा जी है।

उस्मा०—अरे बुज़दिल, निकम्मे ! कहीं वे लोग यहाँ आ सकते हैं ?

रहीम–तुम्हारी जान की कसम बड़े भाई! शिवा जी बड़ा ही जादूगर है। दीवार तोड़ कर, ज़मीन फाड़ कर और आसमान को उधेड़ कर उसका ज़ाहिर होना निहायत ही आसान है। वह जिन्न है, भूत है। अमाँ उसका नाम शिवा जी है।

शाय०—काश कहीं मेरे काबू में वह शैतान आजाय तो मैं सीधा दिल्ली ले जाऊँ, आलमग़ीर के सामने पेश करूं और बड़ाही इनाम पाऊँ। पर वह यहाँ क्यों आने लगा?

उस्मा०—काश कहीं मेरे सामने वह काफिर आजाय तो मैं उसकी एक २ बोटी कुत्तों को खिला दूं?

रहीम—(बैठकर) न न न न न भाई! ऐसा न कहो, वह सुनता होगा। उसका नाम शिवाजी है।

उस्मा०—(पीठ पर धक्का देकर) चुप रह बेहूदे! तू आदमी है या हिन्दू।

रहीम—तो क्या हिन्दू लोग आदमी नहीं होते औरत होते हैं?

उस्मा०—बेशक औरतें होते हैं।

(तानाजी शिवाजी अन्नाजी और नेताजी का आना)

शिवा०—तो बस आओ, उन्हीं औरतों का मुक़ाबला करो।

रहीम—अरर! यह ज़नानख़ाना है, बाहर बैठो जी बाहर।

नाचने वाली—या खुदा या परवरदिगार!

शिवा०—देवियो! तुम डरो मत। अन्दर जाओ। हिन्दू लोग स्त्रियों पर हाथ नहीं उठाते।

(रहीम औरतों के साथ जाता है ताना पकड़ लेता है, वह डर से कांपता है)

शाय०—हैं ! शिवा जी, तुम और यहाँ ?

शिवा०—हाँ नवाब, अब तुम मेरे क़ैदी हो !

शाय०—मैं और क़ैदी ? ग़ैर मुमकिन।

शिवा०—मुमकिन और इस तरह मुमकिन !

(चारों तरफ से घेर लेना)

रहीम—हुजूर, हाथों को जेब में और पैरों को सर पर रख कर किसी चूहे के बिल में घुस जाइये ! इसी का नाम शिवाजी है।

(झपट कर आना तहव्वर खाँ का)

तहव्वर०—ठहरो २ काफिरो ! तुम्हारे सर पर मौत आगयी।

(शिवाजी पर पीछे से वार करना ताना का बचाना)

(इतने में शायस्ता खां भाग जाता है मगर शिवाजी की तलवार से उँगलियाँ कट जाती हैं)

शिवा०—डरपोक ! खुद भाग गया और निशानी छोड़ गया। हाँ अन्ना जी, शहनाई बजने दो और महलों में आग लगा दो। ऐ म्लेच्छो ! अगर जान प्यारी है तो तलवारें रखदो।

(तहव्वर लड़कर मारा जाता है और मुसलमान सिपाही तलवारें रख देते हैं)

रहीम—(तहव्वर से) हुजूर इसी का नाम शिवाजी है !

(पर्दा फटना अन्दर से ध्वनि—जय—महाराज शिवाजी की जय के साथ २ आग जलती दिखाई देना)

ड्रेहला

अङ्क २ दृश्य ६

दरबार औरंगज़ेब

(अमीर उमरा सभी विराजमान हैं औरंगजेब तख्तनशीन है)

१ उमरा—आलम में तेरा नूर आलमगीर बड़ा हो।
आलम में तू ही दौलते जागीर बड़ा हो॥

२ उमरा—दुश्मन तमाम खाक में मिल ख़ाक पस्त हों।
इस्लाम की तसलीम के आले दुरस्त हों॥

३ उमरा—हो लाख गुनी शान व शौकत दुचंद हो।
अब से हज़ारहाँ गुना रुतबा बुलंद हो॥

४ उमरा—राहत बनी रहे सदा इज़्ज़त बढ़ी रहे॥
दौलत भी हाथ बांधकर दर पर खड़ी रहे॥

५ उमरा—अल्लाह तेरे नूर से शरमाये आफताब।
इस रौनके इस्लाम से छुप जाये माहताब॥

औरंगजेब—मेरे अज़ीज़ जाँनिसारो! मेरी सल्तनत के चमकते हुये सितारो! मुझ फक़ीर को इस कदर इज़्ज़त बख्श कर दर हक़ीक़त तुम लोग दीने इस्लाम का सर ऊँचा कर रहे हो।

दानिशमंद—आली जाह! हुजूर के मुबारक हाथों में ही इस्लाम की तरक़्क़ी का सबाब है।

दिलेर०—इसका तो निहायत आसान जवाब है, कि जब मज़हब की राह में खड़े होने वाले ख़ास भाई की भी रियायत न की तो ज़ाहिर है कि ख़लक़ते इस्लाम ने आप से बढ़कर कोई कट्टर मुसलमान पैदा ही नहीं किया।

औरंगज़ेब—इस ज़िक्र को छोड़िये। हाँ वज़ीर साहब! शहर का क्या हाल है, और शिवा जी की क्या ख़बर है?

वज़ीर—शाँहशाहे हिन्द! शहर में हर तरफ रौनक़ व रौशनी के अलावा ग़रीबों को ख़ैरात बांटी जा रही है। हर क़िस्म के जश्न हुजूर की ख़्वाहिश के मुताबिक़ शहर में मनाये जा रहे हैं। हर काम का मुकम्मिल इंतजाम है। शिवाजी की आँखों में चका चौंध पैदा करने के लिये काफी सामान है।

जय०—कुंवर रामसिंह भी राजा शिवाजी को दरबार में लाते ही होंगे।

औरंगज़ेब—(बात काट कर) क्या कहा राजा शिवाजी? (घृणा मिश्रित हंसी) हा हा हा हा! राजा साहब! क्या एक पहाड़ी चूहा भी राजा हो सकता है? एक डाकू भी शरीफ कहला सकता है?

दिलेर खां—हुज़ूर! दक्खिन से जो खबर आई है वह निहायत फिक्र पैदा करने वाली है।

औरंगज़ेब—वह क्या?

दिलेर०—महाराज यशवंत सिंह ने निहायत ही जाँफिशानी व मशक्क़त के साथ मराठों का मुक़ाबला शुरू किया है। एक २ करके बहुत से क़िलों पर क़ब्जा कर लिया है। खुश-क़िस्मती से शिवाजी के इस तरफ चले आने के बाद वहां की

बदइन्तज़ामी की वज़ह से उन्होंने क़ाबिले तारीफ फतहयाबी हासिल की है। मगर अब उनके पास फौज बिलकुल अधूरी है। लिहाज़ा मदद भेजना ज़रूरी है।

औरंगज़ेब—अच्छा देखा जायगा।

दिलेर०—हुज़ूर, गरीब परवर!

औरंगज़ेब—कह दिया कुछ जल्दी नहीं है।

दिलेर०—मगर वक्त बहुत बुरा है।

औरंगज़ेब—कब किसका बुरा वक्त आता है, आलमगीर खूब जानता है। याद है दिलेर खां, इसी कम्बख़्त के सबब ख़ैबर घाटी के ऊपर एक दिन मेरा भी बुरा वक्त था। बस अगर आज उसका बुरा वक्त है तो उसकी क़िस्मत।

दानिश०—(बात काट कर) हुज़ूर! उस मैल को दिल से निकाल डालिये, गुस्सा थूक डालिये। हां शाह साहब, कुछ हुज़ूर की दिलजोई के लिये एक उम्दा सी ग़ज़ल कह डालिये।

शाह साहब—(डाढ़ी फटकारते हुवे—लम्बी सलाम के बाद)

शाबाश तेरी क़ुदरत मिल कर भी जुदा तू है।
ख़लक़त का ख़ुदा वो है पर अपना ख़ुदा तू है॥
फैली है मेहर ख़ुशबू आलम में तेरी हर सू।
आलम का ख़ुदा वो है पर अपना ख़ुदा तू है॥
ऐ शेर क़ौमे तुर्की इसलाम के सितारे।
रखना नज़र इनायत यह अपनी जुस्तजू है॥

औरंग०—(रुष्ट भाव से) बस बस वही ख़ुशामदी कलमे? वही एक अदना से फक़ीर की ख़ुदा के साथ हमसरी? शर्म करो, तुमलोग मुसल्मान होकर पाक दीन को धब्बा लगा रहे

हो। याद रक्खो, जहाँ झूठी खुशामद का दौर रहता है-वहाँ सचाई पर परदा पड़ा रहता है।

भूषण—हुक्म पाऊँ तो कुछ हुजूर की तारीफ कह सुनाऊँ।

औरंग०—ऐ हिन्दी भूषण, भूषण कवि! मैं अपनी तारीफ़ नहीं सुनना चाहता। क्या मेरे अन्दर कोई बुराई नहीं है? अगर बुराई है तो वह बयान करो, ताकि मैं उसके रफा करने का इन्तजाम करूँ।

भूषण—हाँ सुना तो सकता हूँ हुजूर। मगर......

औरङ्ग०—मगर क्या?

भूषण—कहने में डर लगता है।

औरङ्ग०—एक सचाई के पाबंद के सामने डरने की कोई ज़रूरत नहीं। खुदा के बन्दे से खुशामद की कोई जरूरत नहीं।

भूषण—अच्छा तो सुनाता हूँ। परन्तु एक प्रार्थना है।

औरंग०—जल्द बयान करो।

भूषण—श्रीमान्, शृङ्गार रस की कविता सुनते २ आलमगीर के हाथ जा बेजा स्थानों पर पड़ते रहे हैं।

औरंग०—इससे तुम्हारा मतलब?

भूषण—यही कि वीर रस की कविता सुनते २ आप का हाथ सीधा मूछों पर पड़ेगा। इसलिये यदि आप अपने हाथ पानी से धो डालें तो अच्छा होगा।

औरङ्ग०—फ़र्ज़ करो ऐसा न हुआ तो?

भूषण—बुरी से बुरी सज़ा।

औरंग०—तैयार?

भूषण—हर समय।

औरंग०—(हाथ धोकर) शुरू करो ।

भूषण—"किबले के ठौर बाप बादशाह शाहजहाँ;
ताको कैद कियो मानो मक्का आग लाई है ।
बड़ो भाई दारा वाको पकरि के कैद कियो,
मे हरहु नाहिं वाको जायो सगो भाई है ॥
बन्धु तो मुराद बक्स बाद चूक करिबे को,
हाथ लै कुरान खुदा की कसम खाई है ।
भूषन सुकवि कहैं सुनो नवरंगजेब,
एते काम कीन्हें फेरि बादशाही पाई है" ॥

(२)

"हाथ तसबीह लिये प्रात उठि बंदगी को,
आपही कपट रूप कपट सुजप के ।
आगरे में जाय दारा चौक में चुनाय दीनों,
छत्रही छिनायो मानो बूढ़े मरे बप के ॥
कीन्हों है सगोत घात सो मैं नाहिं कहों फेरि,
पील वै तोरायो चार चुगल के गप के ।
भूषन भनत छर छंदी मति मन्द महा-सौ सौ,
चूहे खाय के बिलारी बैठी तप के ॥

(औरंगज़ेब का मूछों पर ताव देना-एक सिपाही का पकड़ने जाना)

दानिशमंद—ठहरो ठहरो ।

(भूषण का डंडा व किताब लेकर भाग जाना)

चोबदार—(आकर) आली जाह का इक़बाल बुलन्द हो । कुंवर रामसिंह एक मराठा सर्दार के साथ आना चाहते हैं ।

औरङ्ग०—आने दो ।

(रामसिंह-शिवाजी-शंभाजी का आना)

रामसिंह—(आकर) शाहंशाह की सेवा में मेरे पूज्य पिता जी की प्रार्थना को स्वीकार करके महाराष्ट्रपति शिवाजी पधारे हैं।

औरङ्ग०—मुबारक ! मुबारक !! बहादुर शिवाजी ! मैं तुम्हें देखकर बहुत खुश हुआ।

(रामसिंह शंभा जी को हाथ जोड़ना सिखाते हैं)

रामसिंह—जय आलमगीर की जय।

शंभा—जय भारत माता की जय ! जननी जन्म भूमि की जय !! महाराष्ट्र पति शिवाजी की जय !!!

औरंग०—हाँ वजीर साहब ! काबुल और अराकान के लिये डेढ़ २ लाख फौजें रवाना कीजिये। बंगाल से ६५ हज़ार जवान और पंजाब से २५ हजार वापिस मंगाइये। और सवा दो लाख फौजें देहली की ज़रूरत के लिये रखकर काठियाबाड़ और उड़ीसा के लिये ज़रूरत के मुताबिक रिसाला रवाना कीजिये।

वज़ीर—जो हुकम।

रामसिंह—महाराष्ट्र पति शिवाजी ! आप यहां विराजिये।

शिवा०—कुंवर जी ! आपके इस सत्कार के लिये धन्य-वाद ! परन्तु मुझे मुग़लों की सभ्यता का भी अनुभव होने दीजिये।

औरंग०—वज़ीर साहब ! बहादुर शिवाजी को शाही खिलअत व पंच हज़ारी मनसबदारी इनायत करो।

शिवा०—ओह यह अपमान ?

वज़ीर—शाहंशाह आलमगीर शाहे हिन्द अपने इनायत व करम से बहादुर शिवाजी को पंच हज़ारी मंसबदारी इनायत फ़र्माते हैं।

शिवा०—(कड़क कर) बस २ इस इनायत को तुम (खिलत को फेंक कर) और तुम्हारा बादशाह दोनों अपने पास बांध रखो। शिवाजी भारतमाता का सेवक शिवाजी, दिल्ली पति के दरबार में इनायत की अर्ज़ी देने या करुणा-भिक्षा मांगने के लिये नहीं आया है।

वज़ीर—ऐ बहादुर सरदार! शाहंशाह आलमगीर की बख्शी हुई ख़िलत व मनसबदारी खुशी से कबूल करो।

शिवा०—वज़ीर साहब! प्रतापी महाराणा प्रतापसिंह के पवित्र कुल में जिसने जन्म लिया है, महाराष्ट्र को स्वराज्य प्राप्ति का जिसने प्रण किया है; वह शिवाजी अपनी वीरता के बल से कीर्ति का मुकुट धारण करता है। म्लेच्छों के पैरों से ठुकराये हुए सम्मान की आवश्यकता नहीं रखता।

वज़ीर—ऐ मराठा बहादुर! खुशी जाहिर करने व शुक्रिया अदा करने के बजाय इतने क्यों अकड़े जाते हो?

शिवा०—कायर और सियार ही गीदड़ को सर झुकाते हैं। क्या शेर भी किसी का जूठा खाते हैं?

औरंग०—तो क्या तुम्हें पंचहज़ारी मनसबदारी क़बूल नहीं?

शिवा०—नहीं, बिलकुल नहीं। बादशाह साहब! एक बार कृपा कर महाराष्ट्र में पधारें तो मैं दिखा दूँ कि जिस को आप यह इनायत बख्शना चाहते हैं; उसी शिवाजी के यहां ऐसे सैकड़ों पंच हज़ारी मनसबदार इस समय भी मौजूद हैं।

औरंग०—शिवा जी, एक बादशाह के सामने यों बेधड़क होकर जवाब देने का डर तो नहीं है?

शिवा०—डर? डर हमारे लिये कवि की कल्पना है, निराशों का स्वप्न है और बच्चों का खिलौना है। जिनके हृदय में देश के प्रेम की ज्वाला धधक रही है, जिनका रोम २ स्वतंत्रता की घोषणा कर रहा है, वे डर क्या है, इसको स्वप्न में भी नहीं जानते?

ख़िदमते मुल्क में परवाने बने फिरते हैं।
जाँ हथेली पै रख दीवाने बने फिरते हैं॥
आशिके दीन हैं शैदाये वतन फिरते हैं।
देख लो बाँध कर हम सरसे कफ़न फिरते हैं॥

शाह आलमगीर! जब हम लोग सच्चाई और देश भक्ति का मंत्र पढ़कर भारतमाता की जय बोल देते हैं, तो सत्य मानिये उस बन्दे मातरम् की निर्भय ध्वनि से अभय हो जाते हैं। हमारे देश के बच्चे २ भी शत्रुओं का खून पीने को तैयार हो जाते हैं।

मुल्क है अपना खज़ाना ग़ैर अपना ज़र नहीं।
जान दे देंगे मगर देंगे तुम्हें हम कर नहीं॥
सर फ़रोशाने वतन रखते हैं अपना सर नहीं।
ओखली में सर दिया तो मूसलों का डर नहीं॥

औरङ्ग०—कुँवर रामसिंह और मित्र जयसिंह! रास्ते की थकावट से इनका दिमाग़ ठिकाने पर नहीं है। लिहाज़ा इन्हें ले जाइये और देखना, (जयसिंह की तरफ़ आंख का इशारा करना) इनकी हिफ़ाज़त से ख़ातिर करना।

राम०—जो आज्ञा !

शम्भा०—चलिये पिता जी, इनकी सभ्यता तो देखली। अब मेहमानदारी भी देख लें।

शिवा०—चलो बेटे !

औरंग०—हां, जब आप फिर दरबार में आइयेगा तो सब मसले तै हो जायंगे।

शिवा०—देखा जायगा।

शम्भा०—जय भारत माता की जय !

(जाना तीनों का)

औरंग०—(खुशी से)

एक मूज़ी को किया सर शुक्र है परवर दिगार।
हो गये अरमान सब पूरे मेरे परवर दिगार॥
बाद मुद्दत के हुआ बे खौफ़ आलमगीर है।
तेरे क़दमों से ही आलमगीर आलमगीर है॥

दानि०—शर्म ! शर्म !!

नेक ख़सलत शाह को धोका कभी लाज़िम नहीं।
दोस्त कह कर क़ैद करना यों तुम्हें लाज़िम नहीं॥

दिलेर०—अफ़सोस !

हो ख़ून सदाक़त का लियाक़त के नाम पर।
इन्साफ़ का हो ख़ून शराफ़त के नाम पर॥

औरंग०—करना शिकार शेर का लोहे के जाल में।
ख़ूबी है शिकारी की ये बे हद कमाल में॥

दानि०—नुक़सान उठाते हैं शिकारी शिकार में।
जब बांधते हैं शेर को यों कच्चे तार में॥

बेखौफ़ कहां हैं हुज़ूर खौफ़ बढ़ रहा है।
हिन्दू मुसलमानों का दिली ज़ौफ़ बढ़ रहा है॥

औरंग०—दिलेर खां, तुम नहीं जानते कि औरंगज़ेब मुसलमान है।

दिलेर०—शाहे आलमगीर ! दिलेर खां भी एक सच्चा पठान है !

(तलवार निकाल कर फेंक देना)

औरंग०—मैं जो कर रहा हूं, सही कर रहा हूँ।

दिलेर०—आप जो कर रहे हैं वह ग़लत कर रहे हैं।

औरंग०—आख़िर मैंने कौनसा ग़लत काम किया है ?

दिले०—आपने एक बहादुर मेहमान को धोखे से क़ैद किया है।

औरंग०—मगर वह हिन्दुओं का तरफ़दार है।

दानि०—सोचिये आप भी तो मुसलमानों के तरफ़दार हैं।

दिले०—एक बहादुर को दग़ा व धोके से क़ैद करने की ज़रूरत ?

औरंग०—मुझे इसमें खुशी है।

रोशनआरा—(दौड़ कर आकर) तो मुझे इसमें रंज है।

औरंग०—किस लिये ?

रोशन०—इस लिये कि ख़ुदा ने फूल सूंघने के लिये, इतर खुशबू के लिये, और दिलेरी नेक नीयती के लिये ही बनाई है।

औरंग०—रोशनआरा ! क्या तेरे सर पर जनून सवार है ?

राम०—जो आज्ञा !

शम्भा०—चलिये पिता जी, इनकी सभ्यता तो देखली। अब मेहमानदारी भी देख लें।

शिवा०—चलो बेटे !

औरंग०—हां, जब आप फिर दरबार में आइयेगा तो सब मसले तै हो जायंगे।

शिवा०—देखा जायगा।

शम्भा०—जय भारत माता की जय !

(जाना तीनों का)

औरंग०—(खुशी से)

एक मूजी को किया सर शुक्र है परवर दिगार।
हो गये अरमान सब पूरे मेरे परवर दिगार॥
बाद मुद्दत के हुआ बे खौफ़ आलमगीर है।
तेरे क़दमों से ही आलमगीर आलमगीर है॥

हानि०—शर्म ! शर्म !!

नेक ख़सलत शाह को धोका कभी लाज़िम नहीं।
दोस्त कह कर क़ैद करना यों तुम्हें लाज़िम नहीं॥

दिलेर०—अफ़सोस !

हो ख़ून सदाक़त का लियाक़त के नाम पर।
इन्साफ़ का हो ख़ून शराफ़त के नाम पर॥

औरंग०—करना शिकार शेर का लोहे के जाल में।
ख़ूबी है शिकारी की ये बे हद कमाल में॥

हानि०—नुक़सान उठाते हैं शिकारी शिकार में।
जब बांधते हैं शेर को यों कच्चे तार में॥

बेखौफ़ कहां हैं हुज़ूर खौफ़ बढ़ रहा है।
हिन्दू मुसलमानों का दिली जौफ़ बढ़ रहा है॥

औरंग०—दिलेर खां, तुम नहीं जानते कि औरंगज़ेब मुसलमान है।

दिलेर०—शाहे आलमगीर! दिलेर खां भी एक सच्चा पठान है।

(तलवार निकाल कर फेंक देना)

औरंग०—मैं जो कर रहा हूं, सही कर रहा हूँ।

दिलेर०—आप जो कर रहे हैं वह ग़लत कर रहे हैं।

औरंग०—आख़िर मैंने कौनसा ग़लत काम किया है?

दिले०—आपने एक बहादुर मेहमान को धोखे से क़ैद किया है।

औरंग०—मगर वह हिन्दुओं का तरफ़दार है।

दानि०—सोचिये आप भी तो मुसलमानों के तरफ़दार हैं।

दिले०—एक बहादुर को दग़ा व धोके से क़ैद करने की ज़रूरत?

औरंग०—मुझे इसमें खुशी है।

रोशनआरा—(दौड़ कर आकर) तो मुझे इसमें रंज है।

औरंग०—किस लिये?

रौशन०—इस लिये कि ख़ुदा ने फूल सूंघने के लिये, इतर खुशबू के लिये, और दिलेरी नेक नीयती के लिये ही बनाई है।

औरंग०—रौशनआरा! क्या तेरे सर पर जनून सवार है?

रौशन०—नहीं २ अज़ीज़ बिरादर! आपकी ईमानदारी पर शराफ़त का ख़ून सवार है।

औरंग०—हट जा, दूर हो जा नादान लड़की! मेरी ईमानदारी का ख़ुदा गवाह है।

रौशन०—ख़ौफ कर! ख़ौफ कर!! ख़ुदा के नाम पर फरेबों की हस्ती! देख उधर देख! ख़ुदा का क़हर नाज़िल हो रहा है।

(पर्दे का फटना पहले दारा फिर शाहजहाँ का प्रकट होना)

दारा—ख़ौफ कर ख़ौफ कर, ईमानदारी की आड़ में भाइयों का ख़ून बहाने वाले क़साई! ख़ुदा का ख़ौफ कर।

शाहजहाँ—ज़ुल्म २ ऐ नाख़लफ़ औलाद! इस तख़्तो ताज के लालच में अपने बूढ़े बाप की इज़्ज़त मिटी में मिलाने वाले शैतान! ख़ुदा से डर।

दारा—ईमान के परदे में बेईमान! ख़ौफ़ कर।

शाहजहाँ—इन्सान की लिबास में शैतान! ख़ौफ़ कर।

(औरंगजेब का कांपना)

(टेब्ला)

अङ्क २ दृश्य १०

मार्ग।

(सूर्या जी और लक्ष्मी का पुरुष वेश में बातें करते आना)

लक्ष्मी०—क्या सचमुच छत्रपति जी बन्दी हो गये ?

सूर्या०—केवल शिवाजी ही नहीं उनका ८ वर्ष का पुत्र शम्भा जी भी उन्हीं के साथ कारावास में दिन काट रहा है।

लक्ष्मी०—यह तो राज नीति का सबसे नीच उदाहरण है।

सूर्या०—क्यों नहीं-राज्य की आशा में अपने सगे बड़े भाई दारा व मुराद को कत्ल करवाना, वृद्ध पिता शाहजहाँ को गद्दी से उतार कर कारावास के कठिन दंड द्वारा मृत्यु का ग्रास बनाना यह सब औरङ्गजेब जैसे नीच मुगलों के लिये बहुत ही साधारण कार्य हैं। अपने माता पिता का हाल तो तुमने सुनही लिया था ?

लक्ष्मी०—सुन लिया। आह, जब वह भीषण अत्याचार का दृश्य स्मरण आता है तो कलेजा कांप जाता है। यहाँ से अब शीघ्र चलिये। यदि चींटी हाथी से बदला नहीं ले सकती तो न सही, फिर भी सफलता की कुंजी प्रयत्न करना अवश्य है।

सूर्या०—क्या कहूं कोई युक्ति समझ में नहीं आती। चलो परिश्रम करना अपने हाथ है और परिश्रम का फल देना...

लक्ष्मी—ईश्वर के हाथ है !

सूर्या०—   गाना ।

वे अगर यूँ ही हमें बरबाद करते जायँगे ।
दस्त बस्ता फिर भी हम फर्याद करते जायँगे ॥
उनकी ख़सलत है अगर नख़ले चमन को दें उजाड़ ।
अपनी हसरत है उसे आबाद करते जायँगे ॥
ज़ुल्म ढा ढा कर अगर बरबाद करते जायँ वो ॥
हम बपा महशर दिले नाशाद करते जायँगे ॥
गर जफ़ा ओ जौर का हम पर रहा यूँही ग़ज़ब ।
अश्क से ढीली तेरी बुनियाद करते जायँगे ॥
"आनंद" गर पैदा हुये हो तुम गुलामी के लिये ।
ख़ुद बख़ुद वादे सबा आज़ाद करते जायँगे ॥

(गाते हुये जाना)

अङ्क २ दृश्य ११

जेलखाना ।

(शिवाजी बीमार हैं शंभा जी सो रहे हैं)

शि०--डूब गया, भारत वर्ष का भाग्य सूर्य डूब गया :—

दृष्टि कुछ टेढ़ी हुई है आज क्यों भगवान की ।
अब नहीं आशा रही भारत के फिर उत्थान की ॥
जेलखानों में सड़ेंगे वीर भारत के अगर ।
कौन रक्षा कर सकेगा देश के अभिमान की ॥

राजा यशवन्त सिंह के कहने से स्वदेश छोड़ कर इतनी दूर आया । आशा थी कि औरंगज़ेब से मान पूर्वक संधि हो जायगी, किन्तु समय का उल्टा प्रभाव पड़ा कि संधि के बदले बन्दी बन कर रहना पड़ा । ओ नीच ! औरंगज़ेब !! बुराई के कीड़े, धोके बाज़ कुत्ते ! जिस तरह तू ने अपने बाप को गद्दी से उतार कर क़ैद में सड़ा सड़ा कर मार डाला, भाइयों का खून, पानी की तरह बहा डाला, उसी तरह मुझे भी धोका देकर मारने की तेरी इच्छा है । परन्तु नहीं नहीं, शिवा जी एक महाराष्ट्र बीर है । नीच मुगल सम्राट ! याद रख, (रौशन आरा का आना)

रौश०—शाबाश, शाबाश ! इसी का नाम बहादुरी है ।

शिवा०—तुम कौन ?

रौश०—हिन्दू मुसलमानों के दरम्यान मुहब्बत की तस्वीर।

शिवा०—यानी ?

रौश०—आलमगीर की ख़ास हमशीर।

शिवा०—तुम्हारे यहाँ आने का सबब ?

रौश०—तुम्हारी मुहब्बत।

शिवा०—बस बस जाओ देवी ! मेरे विचारों को अपवित्र न करो।

रौश०—ख़ुदा के वास्ते मुहब्बत के मरीज़ को नाउम्मीद न करो।

शिवा०—धोकेबाज ! बादशाह की दुराचारिणी बहन !! मेरे सन्मुख से चली जा।

रौश०—मराठे बीर ! कहना मान ले। मैं फाटक खोल दूँगी—तुम्हारे साथ दक्खिन को चली चलूँगी। बस एक तुम्हारी रज़ामंदी की……

शिवा०—दुराचारिणी ! क्या अपने साथ मुझे भी दुराचारी बनाना चाहती है ?

रौश०—अगर नहीं, तो याद रखो ताउम्र इस ज़िलख़ाने में सड़ना होगा।

शिवा०—चिन्ता नहीं, भय नहीं। वीरता कलंकित होकर जीवित रहना नहीं चाहती।

रौश०—क्या तुम्हारी यही टेक है ?

शिवा०—हाँ हिंदुओं की वीरता और धर्म पवित्र है, नेक है।

रौश०—मेरे गुस्से की आग तुम्हें ख़ाक में मिलायेगी।

शिवा०—परवाह नहीं। दुनियाँ एक दिन खुद ही मिट

जायेगी। जो जाति अपनी मान मर्यादा और आत्म गौरव की रक्षा करना जानती है-जो जाति अपने धर्म पर अटल भक्ति रखती हुई सचाई की राह में कष्ट सहना जानती है, उसके निर्मल गौरव को संसार की कोई शक्ति नीचे नहीं गिरा सकती। बस जब तक हिन्दू २ हैं—मराठे २ हैं भवानी २ है तो·········

(तलवार निकाल कर)

रौश०—(द्वार पर आहट सुनकर) हैं, आवाज कैसी ? शायद कोई आ रहा है। हठीले मराठे! अगर तेरी यही जिद्द है तो अपने हठकी सजा पा।

(रौशनआरा का जाना बूढ़े वैद्य का आना)

वैद्य०—क्यों बेटा, कैसा मिज़ाज है ?

शिवा०—जी रहा हूँ।

वैद्य०—(नाड़ी देखकर) नाड़ी भी तीव्र है। स्वर भी धीमा है। चिन्ता नहीं, जल्द अच्छे हो जाओगे। बेटा! दान पुन्य अच्छा काम है। खूब मिठाई भिजवाया करो। ग़रीबों को खिलवाया करो। पर बेटा, तुम्हारी फौज तो कल चली गई ?

शिवा०—जी हां मेरी आज्ञा से ही भेजी गई।

वैद्य०—बेटा! तब तुम्हारी सहायता की आशा भी चली गई ? अब तुम्हें कौन बचायेगा ?

शिवा०— देखा जायेगा।

वैद्य०—अच्छा तो मैं जाता हूँ, दवा भेजता हूँ, तुम आराम करो।

(वैद्य जी का जाना सिपाही का आना)

सिपाही—मिठाई वाले हाज़िर हैं। (जाना)

शिवा०—(पहले सिपाही से) देखो, इस टोकरे को मथुरा ले जाना (दूसरे सिपाही से) इसे वृन्द्रावन पहुँचाना। (तीसरे से) और तुम गोकुल को जाना। (चौथा टोकरा देखकर) यह तो खाली है ?

सूर्य्या०— महाराज, चुप रहिये। इस एक टोकरे में आप और दूसरे में कुवँर को बैठा दीजिये और यहां से बाहर निकल चलिये। मैं आपका दास सूर्य्या जी हूँ।

शिवा०—कौन सूर्या जी ! शाबाश ! शाबाश !

(बैठकर सबका जाना) (सिपाही का दवा लेकर आना)

१ सिपाही—महाराज, दवा हाजिर है (चारपाई खाली देख चौंकता) हैं, दोनों चारपाई खाली हैं ?

२ सिपाही—या मेरे बाप का बाप ! शिवा जी कोई परिन्दा है जो उड़ गया ?

१ सिपाही—देखो तो कहीं जमीन में तो नहीं गड़ गया ?

२ सिपाही—किसी छिपे राह से छत पर तो नहीं चढ़ गया ?

१ सिपाही—भाई ! अब जान कैसे बचेगी ?

२ सिपाही—मुझे तो आलमगीर खा जायगा।

१ सिपाही—और मुझे तो कछवाही चबा जायगा ?

२ सिपाही—दुहाई है, आलमगीर की दुहाई है !

(दोनों का रोते हुये जाना, सीन का फटना नाव पर सवार होकर शिवा जी, सूर्या, लक्ष्मी इत्यादि का जाते दीख पड़ना)।

ड्रापसीन

अङ्क ३ दृश्य १

रायगढ़ का पहाड़ी महल।

(शिवाजी और उनकी माता का बातें करते आना)

माता०—किन्तु फिर क्या हुआ ?

शिवा०—हम स्त्रियों की भांति नजर बंद थे, परमेश्वर ने सूर्या जी को हमारी सहायता को भेजा और उसी वीर युवक के हाथों मेरा उद्धार हुआ।

माता०—हाँ, इधर कुछ दिनों से सूर्य्या जी बहुत ही वीरता दिखा रहा है। पर उसके साथ उसका मित्र कौन है ?

शिवा०—उसने तो मुझसे बहुत छिपाया, पर मैंने उसे पहचान लिया। वह मित्र पुरुष भेष में निंवालकर की पुत्री लक्ष्मी है।

माता०—तो बेटा, तुम्हें उसका भी बेड़ा पार करना चाहिये।

शिवा०—मातेश्वरी ! मैंने दोनों के विवाह के लिये पत्र लिखकर ताना जी मौलसरे के पास भिजवा दिया है।

माता०—बहुत अच्छा किया परन्तु कल संध्या समय जो मैंने कार्य तुम्हें सपुर्द किया ?

शिवा०—आपके आज्ञानुसार आज प्रातःकाल ही मैंने एक आदमी ताना को बुलवाने के लिये भेज दिया है।

माता०—वह कब तक आ जायेगा ?

शिवा०—मैंने कह दिया है कि यदि भोजन वहां करना तो जल यहां पीना। जिस दशा में हो वैसेही चल देना।

माता०—पुत्र सत्य समझना, कल प्रातःकाल सिर बांधते समय जो मनोहर छवि सिंहगढ की मेरी आंखों में खटकी है वह ज्यों की त्यों हृदय पट पर अब तक अटकी है। बेटा, तुम्हारा राज्य तब तक पूरा नहीं है जब तक सिंहगढ़ यवनों से जीत कर तुम्हारा नहीं है!

शिवा०—माता जी की आज्ञा शिरोधार्य है।

माता०—वीर पुरुषों का आदर्श सदा ऊँचा होना चाहिये। यदि तुमने मेरी इच्छा पूर्ण न की तो समझ लेना मेरे श्राप से सदा के लिये व्याकुल होना पड़ेगा।

शिवा०—(घुटने टेक कर) नहीं २ माता! ऐसी व्याकुलता किस काम की! आप की आज्ञा अवश्य पूरी करूँगा। यदि शिवा शिवा है तो आप के दूध का परिचय दूँगा।

माता०—अच्छा तो मैं जाती हूँ। (जाना)

शिवा०—ओह! कैसी विकट समस्या है। सिंहगढ़ आज कल यवनों की २० हजार सेना से सुरक्षित है। जहां एक चिड़िया भी नहीं जा सकती, उसे जीतना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव भी है।

(सोचना भूषण कवि का आना)

भूषण—(आकर) भगवान सब भला करेंगे।

शिवा०—आप कौन महापुरुष हैं ?

भूषण—मेरा नाम भूषण कवि है। औरंगज़ेब की सभा से

जान बचाकर महाराज शिवाजी की सेवा करने के विचार से आया हूं। क्या आप मुझे उनके दरबार में मिलने का यत्न बता देंगे?

शिवा०—असंभव तो नहीं है परन्तु हमें भी दो चार कवित्त सुना दोगे तो दरबार में तुम्हें कल ही पहुंचा देंगे।

भूषण—अच्छा तो लो भैया, शिवाजी के पहिले तुम्हीं सुन लो। (दो बार सुनाना)

"इंद्र जिमि जंभ पर बाढ़व सुअम्ब पर,
रावण सदंभ पर रघुकुल राज है।
पौन बारि बाह पर शंभु रतिनाह पर,
ज्यों सहसबाहु पर राम द्विजराज है॥
दावा द्रुम दंड पर चीता मृग झुंड पर,
भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज है।
कान्ह जिमि कंस पर तेज तम अंस पर,
त्यों मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज है"॥

शिवा०—वाह भाई, वाह!! एक बार इसी कवित्त को और सुना दो, कृपा होगी।

भूषण—वाहजी, तुम तो फोकट में ही गला फड़वा रहे हो भाई!

शिवा०—(हँसकर) भूषण जी, मेरा ही नाम शिवाजी है। मैंने सोचा था कि जितनी बार आप हमें इस कवित्त को सुनायेंगे उतनी ही लक्ष-मुद्रा, उतने ही हाथी और उतनी ही सहस्र गौ हम आपको देंगे! सो समझ लीजिये अधिक मिलना आपके भाग्य में ही न था।

भूषण—हरे ! हरे !! महाराज ! यवनों के अन्न जलने मेरी बुद्धि पलट दी है तभी तो मैं आपको पहचान न सका।

शिवा०—खैर ! चिन्ता नहीं।

भूषण—चिन्ता तो नहीं पर खेद अवश्य है कि बंदर के स्वरूप में हनुमान जी ने भगवान को तो पहचान लिया पर बिना पूंछ का लंगूर मैं आपको न पहचान सका।

शिवा०—तो चलिये—आपको पुरस्कार देकर प्रसन्न करूं।

भूषण—धन्य धन्य महाराज !! पधारिये (जाना)

अङ्क ३ दृश्य २

विवाह-मंडप

(सूर्या जी, और लक्ष्मी, विवाह वस्त्रों से सुशोभित हैं, सहेलियां गाती हैं)

सखियां— गाना।

सुख सों रहे संसार में यह सुंदर जोड़ी।
कैसी मिलाई करतार ने यह सुंदर जोड़ी।
देश का गौरव मान बढ़ाओ,
भारत की रज शीश चढ़ाओ,
फूलै फलै संसार में यह सुंदर जोड़ी।

(विवाह कार्य आरंभ होता है। मंत्रोच्चारण के साथ विधि पूर्वक पंडित जी का वर कन्या से प्रतिज्ञा कराना)

(इतने में घबराये हुए ताना जी का प्रवेश)

ताना०—बस २ समाप्त कीजिये, पंडित जी, हटाइये सब सामान यहाँ से ले जाइये।

१ पं०— हैं हैं यह क्या ? शुभ मुहूर्त में यह अशुभ वार्ता कैसी ?

२ पं०—अरे यह रंग में भंग कैसी ?

ताना—जैसी भाग्य में लिखी वैसी। देखिये महाराज शिवा जी ने यह पत्र भेजा है-लिखते हैं कि "यदि भोजन वहाँ किया हो तो जल पान यहां आकर करना। यदि हृदय में देश के प्रति प्रेम है तो राजनैतिक संकटों से देश को मुक्त करने के लिये तुरन्त चल दो।" अस्तु, मेरी आज्ञा है कि विवाह कार्य किसी अच्छे समय के लिये स्थगित किया जाय, और सब देश भक्त इसी दम रणभेरी के शब्द के साथ ही रायगढ़ को प्रस्थान कर दें।

(ताना, पंडित, सहेलियाँ सबका जाना)

सूर्या०—प्यारी लक्ष्मी !

लक्ष्मी०—कुंवर जी !

सूर्या०—बहुत बुरा हुआ।

लक्ष्मी०—नहीं अच्छा हुआ।

सूर्या०—तुम हँसी करती हो।

लक्ष्मी०—अवश्य हँसी करने का तो यही समय है।

सूर्या०—क्या हमारे भाग्य में यही लिखा था ?

भूषण—हरे ! हरे !! महाराज ! यवनों के अन्न जलने मेरी बुद्धि पलट दी है तभी तो मैं आपको पहचान न सका ।

शिवा०—खैर ! चिन्ता नहीं ।

भूषण—चिन्ता तो नहीं पर खेद अवश्य है कि बंदर के स्वरूप में हनुमान जी ने भगवान को तो पहचान लिया पर बिना पूंछ का लंगूर मैं आपको न पहचान सका ।

शिवा०—तो चलिये—आपको पुरस्कार देकर प्रसन्न करूं ।

भूषण—धन्य धन्य महाराज !! पधारिये (जाना)

अङ्क ३ दृश्य २

विवाह-मंडप

(सूर्या जी, और लक्ष्मी, विवाह वस्त्रों से सुशोभित हैं, सहेलियां गाती हैं)

सखियां— गाना ।

सुख सों रहे संसार में यह सुंदर जोड़ी ।
कैसी मिलाई करतार ने यह सुंदर जोड़ी ।
देश का गौरव मान बढ़ाओ,
भारत की रज शीश चढ़ाओ,
फूलै फलै संसार में यह सुंदर जोड़ी ।

(विवाह कार्य आरंभ होता है। मंत्रोच्चारण के साथ विधि पूर्वक पंडित जी का वर कन्या से प्रतिज्ञा कराना)

(इतने में घबराये हुए ताना जी का प्रवेश)

ताना०—बस २ समाप्त कीजिये, पंडित जी, हटाइये सब सामान यहाँ से ले जाइये।

१ पं०—हैं हैं यह क्या ? शुभ मुहूर्त में यह अशुभ वार्ता कैसी ?

२ पं०—अरे यह रंग में भंग कैसी ?

ताना—जैसी भाग्य में लिखी वैसी। देखिये महाराज शिवा जी ने यह पत्र भेजा है-लिखते हैं कि "यदि भोजन वहाँ किया हो तो जल पान यहां आकर करना। यदि हृदय में देश के प्रति प्रेम है तो राजनैतिक संकटों से देश को मुक्त करने के लिये तुरन्त चल दो।" अस्तु, मेरी आज्ञा है कि विवाह कार्य किसी अच्छे समय के लिये स्थगित किया जाय, और सब देश भक्त इसी दम रणभेरी के शब्द के साथ ही रायगढ़ को प्रस्थान कर दें।

(ताना, पंडित, सहेलियाँ सबका जाना)

सूर्या०—प्यारी लक्ष्मी !

लक्ष्मी०—कुंवर जी !

सूर्या०—बहुत बुरा हुआ।

लक्ष्मी०—नहीं अच्छा हुआ।

सूर्या०—तुम हँसी करती हो।

लक्ष्मी०—अवश्य हँसी करने का तो यही समय है।

सूर्या०—क्या हमारे भाग्य में यही लिखा था ?

लक्ष्मी०—इसी का नाम तो सौभाग्य है !

सूर्या०—नहीं प्रिये ! इसे दुर्भाग्य कहते हैं। स्मरण करो, जब तुम्हारे माता पिता को औरंगज़ेब ने बध करने की आज्ञा दी थी तो उन्हों ने अपनी अंतिम इच्छा यही प्रकट की थी कि हमारा तुम्हारा सम्बन्ध हो जाता, और दैव ने समय भी दिया तो महाराज शिवा जी की कृपा की बिज़ली हमारे मस्तक पर टूट पड़ी ! इसी को दुर्भाग्य कहते हैं।

लक्ष्मी०—यदि इसे दुर्भाग्य कहते हैं तो मुझ अभागिनी को क्षमा करो नाथ ! (जाना चाहती है)

सूर्या०—ठहरो २ प्रिये सुनो, जिस दिन के लिये हमने परमेश्वर से प्रार्थनायें की थीं, भवानी का भजन किया था, क्या मालूम था कि उसी दिन यह आकाश बिजली बन कर हमारे सर पर फ़ट पड़ेगा।

हाय हम दोनों की आशाओं पै पानी फिर गया।
बन रहा था प्रेम मन्दिर बनते बनते गिर गया ॥

लक्ष्मी०—हैं क्या आंखों में आंसू आ गये ? क्या पुरुष होकर पौरुष हीन हो गये ? क्षत्री होकर कायर बन गये ? छिः छिः आर्य पुत्र ! आज तो आप पुरुष होकर स्त्रियों को भी लज्जित कर रहे हैं।

सूर्या०—आह ! एक वृक्ष लगाया था, छाया में बैठने के लिये। एक मूर्ति स्थापित की थी पूजा करने के लिये, एक हृदय पाया था प्रेम करने के लिये, किन्तु आंधी चली, आग की चिनगारी उड़ी और सब कुछ जलकर भस्म होगया, सर्व नाश हो गया।

(एक सिपाही का आकर अभिवादन करके कहना)

सि०—कुंवर जी ! सेनापति ताना जी वीर योधाओं को लेकर रायगढ़ जा रहे हैं। पूछते हैं क्या आप भी साथ चलेंगे ?

सूर्या०—(नीची गर्दन करके चुप रहते हैं)
लक्ष्मी०—कह दीजिये मैं आता हूँ।
सि०—क्या आज्ञा है कुंवर जी ?
सूर्या०—(चुप)
लक्ष्मी०—(सिपाही से) कह दो कुंवर जी आते हैं।
सि०—जो आज्ञा !

(जाना)

सूर्या०—लक्ष्मी !

लक्ष्मी०—कुंवर जी ! आज से हमारा आप का सम्बन्ध सदा के लिये टूट गया। मुझे नहीं मालूम था कि जिसको मैंने अपने जीवन का आराध्य देव माना है, वह ऐसा कायर निकलेगा। एक तुच्छ स्त्री के प्रेम में फँसकर देश का प्रेम, जन्म भूमि का कर्तव्य भूल जायगा। कुंवर जी, ध्यान रखिये, स्त्रियाँ भी कभी कभी पुरुषों को कर्तव्य सिखा देती हैं। भूले हुए पथ को दिखा देती हैं।

सूर्या०—कदाचित !

लक्ष्मी०—कदाचित ? अर्थात् संदेह है ? अच्छा तो लीजिये आप का संदेह मिटाती हूँ, वीरता का भूला हुआ पाठ सिखाती हूँ। आर्य पुत्र ! देखिये—

भुलाकर देश की सेवा जो पूजा मेरी करते हो।
निरादर जन्म भूमि का प्रतिष्ठा मेरी करते हो॥
लजाओ आज तुमने जाति का गौरव मिटाया है।
बढ़ाकर मेरा आदर देश का आदर घटाया है॥
मैं ही निर्लज्ज हूँ जिसने तुम्हें पथ से गिराया है।
तुम्हें मैंने ही अपने प्रेम से कायर बनाया है॥
मैं उस जंजीर को अब तोड़ती हूँ अपने हाथों से।
लो मैं तकदीर अपनी फोड़ती हूँ अपने हाथों से॥

(छाती में छुरी मारना चाहती है सूर्या जी पकड़ते हैं)

सूर्या०—ठहरो २ प्राणधिके, ठहरो! मैं अपनी भूल समझ गया। प्रिये! मुझ कलंकी को क्षमा करो। मैं रण में जाऊंगा। मेरे पैर जो तुम्हारी प्रेम की बेड़ियों से बंधे थे वह खुल गये। कर्तव्य के आसुओं से हृदय के पाप धुल गये।

लक्ष्मी०—प्रेम? प्रेम बड़ी पवित्र वस्तु है नाथ! जिसे आप प्रेम समझते हैं वह मोह है, विलास है। प्रेम मनुष्य को उजाला देता है। किन्तु विलास अन्धा बनाता है। प्रेम कर्तव्य पर लाता है, पर विलास कर्तव्य से डिगाता है। प्रेम देश भक्ति सिखाता है, परन्तु विलास कामदेव की पूजा कराता है। बस, अब विलम्ब न करो। जाओ पिता जी आप की राह देख रहे हैं।

सूर्या०—प्रिये तुम धन्य हो। वीर बालाओं में अग्रगन्य हो। जाने के पूर्व मैं कुछ······

लक्ष्मी०—कुछ की कोई आवश्यकता नहीं है। स्वामी, इस दासी ने आप को चिरकाल से वर लिया है। यदि आप समर-

भूमि से विजय प्राप्त करके आयेंगे तो लक्ष्मी आपको गढ़ के द्वार पर जयमाल पहनायेगी। और यदि सम्भवतः आप युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए तो आपकी दासी पतिव्रत धर्मानु-सार आपके साथ सती होगी। किन्तु यदि आप रण से पीठ दिखाकर मेरे आंचल में प्रेम की भिक्षा मांगने आयेंगे तो भारत माता की शपथ है लक्ष्मी आपका कलंकी मुख आजीवन न देखेगी।

सूर्या०—प्राण प्यारी! यही हिंदू स्त्री के योग्य वीर बचन हैं।

(विवाह के वस्त्र भूषण उतार कर फेंकना)

लक्ष्मी०—तो-प्राणेश्वर! आज मैं अपने हाथ से ही आपको रण के लिये सजाऊँगी।

(मुकुट वगैरह से सजाना आरती उतारना)

सूर्या०—मोह निद्रा उचट गई, विलास की मादकता उतर गई। कर्त्तव्य का रुधिर नस नस में दौड़ रहा है और देश सेवा का जोश अपनी ओर खींच रहा है। प्यारी! अब आज्ञा दो।

लक्ष्मी०-भगवान आपका मंगल करें। प्रणाम!

(सूर्या का जाना)

लक्ष्मी—कर्तव्य और प्रेम का युद्ध हुआ और कर्त्तव्य ने विजय पाई। अब मैं भी पुरुषवेष में रणभूमि में जाकर स्वामी की सेवा करूँ।

(जाना)

अङ्क ३ दृश्य ३

महल

रौशन आरा— गाना ।

रूठी हुई नज़रें ज़रा इक बार इधर भी ।
मरते हैं मसीहा तेरे बीमार इधर भी ॥
हम एक ही निगाह में हो जायेंगे ठंडे,
इक जाम ज़रा शर्बते दीदार इधर भी ।
हम शौक़ से बिक जायेंगे जल्लाद के हाथों,
है दिल फरोश इश्क़ का बाज़ार इधर भी ॥
ज़ख्मे जिगर का शोर है सदक़े तेरे क़ातिल,
दो ठोकरें अंदाज़ से सरकार इधर भी ।
नाहक़ शबे विसाल में तड़पा किये "आनंद",
क़ातिल तेरी तलवार का इकवार इधर भी ॥

अहा ! कैसा ख़ूबसूरत चेहरा, कितना ख़ूबसूरत डील डौल, किस क़दर दिलकश अदायें, दिलेरी, बहादुरी और तिस पर शीरी गुफ्तगू ! ग़ज़ब है ! या ख़ुदा ! काश वो मज़हबी दीवाना रास्ते पर आ जाता ? मगर क्या, मैं ख़ूबसूरत नहीं, उसके लायक़ नहीं ! ओह शाहे हिन्द की हमशीर, इतनी ज़िल्लत और इतनी तौक़ीर ?

औरङ्गज़ेब (ग़ुस्से में आकर) ज़िल्लत, शर्म, बेइज़्ज़ती नाकामयाबी ! अफसोस ! सबको अन्धा बना कर चला गया ।

रौशन०—कौन चला गया भाई जान ?

औरंग०—वही वही मिट्टी का शेर, जंगली गीदड़, पहाड़ी चूहा नालायक़ पाजी-मराठा शिवाजी।

रौश०—क्या कहा वह चला गया? सच मुच चला गया ?

औरंग०—हां देहली की एक लाख मुग़ल फ़ौज की आंखों में धूल झोंक कर चला गया।

रौश०—आह! मेरे अरमानों को कुचल गया। मेरी ज़िन्दगी बरबाद कर गया, मेरे दिल के टुकड़े टुकड़े करके चला गया।

औरंग०—हैं मगर यह अभी तुमने क्या कहा ?

रौश०—कुछ नहीं। शर्म करो भाई जान! क्या हिन्दुस्तान के बादशाह को यही ज़ेबा देता है? इस क़दर फौजों और रिसालों के होते हुये भी जेलख़ानों की मज़बूत दिवारों को खेल समझ कर एक अदना सा क़ैदी शेर की तरह गुर्राता हुआ निकल गया। शर्म है इस शाही शान व शौकत पर! थू है इस निकम्मे इन्तज़ाम पर! (जाना)

औरंग०—कहो २ जो जिसके जी में आये कहो। मगर अब क्या होना चाहिये ? (टहलता है-प्रवेश दानिश्मंद) कौन दानिश्मंद! कुछ पता चला ?

दानि०—जी नहीं।

औरंग०—उम्मीद है ?

दानि०—बिलकुल नहीं।

औरंग०—मगर दानिश्मन्द, दुनियाँ क्या कहेगी ?

दानि०—शाहंशाह! दुनियाँ हँसेगी।

औरंग०—और ?

दानि०—और हिन्दू मुसलमानों के दिलों में ख़राश बढ़ जायेगी।

औरंग०—(टहलता है) दानिश्मन्द ?

दानि०—हुज़ूर !

औरङ्ग०—अभी तुमने क्या कहा ?

दानि०—हिन्दू मुसलमानों में सख्त नाइत्तफ़ाकी बढ़ जायगी।

औरंग०—क्या तुम एक मुग़ल बादशाह को बुज़दिली सिखाते हो ?

दानि०—जी नहीं, बल्कि ख़ुदाबन्दताला की अता की हुई पाक मुहब्बत का सबक़ सिखाता हूं।

औरंग०—वह क्या ?

दानि०—यही कि फ़ौरन जज़िया बंद करा दीजिये।

औरङ्ग०—और ?

दानि०—हिन्दू मुसलमानों को बराबर मज़हबी अख़्तयारात दे दीजिये और......

औरंग०—हां और क्या ?

दानि०—गोकुशी बन्द करने की मुनादी करा दीजिये।

औरङ्ग०—और कुछ ?

दानि०—बस; आपस के झगड़ों की यही तीन बड़ी बुनियादें हैं।

औरंग०—हुश् ! औरंगज़ेब से इस क़िस्म की उम्मीद बेकार है।

दानि०—जहांपनाह ! अगर दुनियां से मुहब्बत उठ जायगी ख़ुदा के बंदों से उसकी परस्तिश का हक़ छीन लिया जायगा,

दूध देने वाले जानवरों की भलाई की ऐवज़ उनकी कुर्बानी से लिया जायगा तो याद रखिये, जहांपनाह ! जिस जगह आज औलादे आदम नज़र आती हैं, वहीं पर कल बहते हुये खून के दरिया नज़र आयेंगे। इन्सानों के दिलों से इंसानियत की बू निकल जायगी, और आदमी आदमी के खून से अपनी प्यास बुझाया करेगा।

औरंग०—खुदा की मर्ज़ी।

दानि०—खुदा की नहीं, इन्सान की मर्ज़ी है। यह आपकी मर्ज़ी है। और इस खुदगर्ज़ इरादे के बद नतायज अंधे आसमान में काले बादलों की तरह इसलाम के उंजले आफताब को लपेटे हुए नज़र आ रहे हैं। इस मुग़लिया सल्तनत की ज़बरदस्त बुनियाद, जो अकबर जैसे अज़ीमुल्शान खुदा परस्त फ़रिश्ने के हाथों रक्खी गई थी, आपके हाथों खोखली हो जायगी।

औरंग०—क्या यह तुम कह रहे हो दानिश्मन्द ?

दानि०—जहांपनाह ! इस ग़ुलाम के बाल सचाई के रास्ते में ही सुफेद हो गये हैं। अब भी वक्त है अगर आप······

औरं०—अच्छा अच्छा ! मैं इसपर ग़ौर करूंगा। (जाना)

दानि०—खुदा हुज़ूर को सचाई का रास्ता दिखाये। ओ इन्सान ! खुदा के बनाये हुए नाचीज़ पुतले !! दो दिन की नापायदार ज़िन्दगी पर इतरा कर तू क्या से क्या कर गुज़रता है ? कुछ नहीं यह, सिर्फ़ उसकी आज़मायश है। ओह हिन्दू मुसल्मानों के दिल बाहमी रंजिस के सबब टुकड़े २ हो गये हैं। चलूं अगर इन दो ज़बरदस्त क़ौमों को फ़िर से मिला

सका तो खुदा का एहसान ! मख़लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत ही अल्लाह ताला की पाक ख़िदमत है ।

(ताना)

अङ्क ३ दृश्य ४

सिंहगढ़ की रणभूमि

(फौज के साथ ताना जी, सूर्या जी और लक्ष्मी का पुरुष भेष में प्रवेश)

ताना०—भारतभूमि के सच्चे सुपूतो ! जो कार्य तुमने उठाया है वह बड़ा ही भयानक है । यदि घर गृहस्थी का मोह है, प्राणों का भय है, शत्रु का डर है, तो अभी से उत्तम है, घर लौट जाओ । समरभूमि जैसे पवित्र स्थान को अपने कलुषित पग से अपवित्र न बनाओ । और यदि तुम्हें अपने इस परतंत्र देश की, गुलामी से जकड़े हुये भारतवर्ष की लाज रखनी है तो वीरों की भांति रणक्षेत्र में आओ । और अग्नि में तपे हुये सोने की तरह विशुद्ध हो जाओ ।

सब—हम स्वतंत्रता के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुती देंगे ।

१ सि०—मर मिटेंगे पर देश का नाम न डुबायेंगे ।

२ सि०—अपना सिर कटा कर अपने देश का सिर ऊँचा कर जायेंगे ।

३ सि०—हम मर कर भी संसार को देशभक्ति का पाठ सिखा जायेंगे ।

ताना०—शाबाश! वीर वरो! शाबाश!! परन्तु तुम्हारा लक्ष्य क्या है?

सब—मातृ भूमि को, भारतवर्ष को स्वतंत्र कराना।

ताना०—तो बोलो, भारत जननी की जय! जननी जन्म भूमि की जय!! बन्दे मातरम्!!!

सब—वन्दे मातरम्!

गाना।

प्राण तजेंगे प्रेम से-लेंगे मगर स्वतंत्रता।
देंगे ये शीश शौक से-देंगे न पर स्वतंत्रता॥
भारत हमारा देश है-सबसे पियारा देश है।
काटेंगे तेरी बेड़ियाँ-देंगे तुझे स्वतंत्रता॥
मंत्र भी है स्वतंत्रता-धर्म भी है स्वतंत्रता।
मर्म भी है स्वतंत्रता-कर्म भी है स्वतंत्रता॥
अपने लहू की बूंद भी-माँगेगी जब स्वतंत्रता।
आनँद से मरेंगे हम-लेंगे मगर स्वतंत्रता॥

(सबका एक तरफ जाना। सलीम की फौज का आना, एक २ करके लड़ाई का होना, फिर सूर्या का लड़ाई में बेहोश होना लक्ष्मी व सलीम की लड़ाई, लक्ष्मी सूर्या जी लड़ते २ भीतर चले जाते हैं। ताना जी को, दुश्मन घेर लेते हैं-कई आदमी और सलीम उनको चारो ओर से वार कर घायल कर देते हैं)

ताना०—राक्षसो! धोका देकर एक योद्धा को गिराना कहां का न्याय है! म्लेच्छो! तुम कपटी हो, छली हो, यह तुम्हारा अन्याय है।

सलि०—बस काम ख़तम हुआ। अब चलो इसके घर ख़र-दार को भी जहन्नुम पहुंचायें।

सब—जो हुक्म! अल्ला हो, अकबर! (जाना)

ताना०—भगवान! भारत वर्ष की स्वाधीनता फेर दो! फिर से इस स्वर्ग भूमि को स्वर्ग तुल्य बना दो, जिससे कि हिंदुओं में बीरता के अंकुर उत्पन्न हो जांय और नवयुवक अपने देश व धर्म के ऊपर बलिदान होना सीख जांये! आह आह!!

सूर्या०—(दौड़कर) पिता जी, पिता जी!! यह क्या आपकी ऐसी शोचनीय अवस्था? क्या सचमुच आप······

ताना०—देश और धर्म के ऊपर जो जीना जानते हैं एक दिन उनकी यही दशा होती है। पुत्र! यह मृत्यु नहीं है, यही सच्चा जीवन है, ओह, जगदीश्वर!

सूर्या०—परंतु पिता जी मेरे लिये आज्ञा?

ताना०—बेटा! बोला नहीं जाता। यदि तू भारत माता की संतान है, यदि तू हिंदू रक्त है तो प्राण रहते तक विधर्मियों की दासता स्वीकार न करना, स्वधर्म और स्वदेश की रक्षा के निमित्त जो महायुद्ध हो रहा है, उसे स्वतंत्रता प्राप्त कराये बिना न छोड़ना। हे भगवान···हे हरी···ओ३म्···(मृत्यु)

(सूर्या जी एक टक खड़े रहते हैं-पीछे से सलीम का फायर करना, सूर्या का बहाने से गिरना-फिर उठ कर सलीम से लड़ना)

सूर्या०—ओ धोकेबाज़ जालसाज़! आ सामने से आकर लड़ना सीख।

(पीछे से ४-५ आदमी आकर सूर्या जी को पकड़ लेते हैं-सूर्या जी का घायल होकर गिरना-फिर लक्ष्मी मय सिपाहियों के आ टूटती है)

लक्ष्मी०—आ, आ, दगाबाज़ ! देख, हिन्दू वीरों की भी शक्ति देख !!

सलीम०—सब मालूम पड़ जायगा ।

(लड़ना—सलीम की तलवार गिरना लक्ष्मी का छाती पर चढ़ना)

लक्ष्मी०—बोल२ तेरा खून पीलूं ! हत्यारे ! तेरा रक्त चाटलूँ ?

सलीम—माफ़ कर बिरादर ! मुझे माफकर ।

लक्ष्मी०—तो उठ और फिर तलवार ले । अपनी वीरता दिखा । (तलवार लेकर फिर सलीम का लड़ना और हारकर भागना)

लक्ष्मी०—नीच ! कहां भागता है ! (चोट गहरी लगने के कारण घबराती है) आह बड़ी वेदना हो रही है ! चोट गहरी लगी है, अब नहीं चला जाता है । आह ! सर चकराता है । (गिरना)

नेपथ्य में—जय महाराज शिवाजी की जय !

(फिर सलीम का एक सिपाही के साथ आना)

सलीम—क्या सिंहगढ़ पर शिवाजी ने क़ब्ज़ा कर लिया ?

सि०—जी हाँ ।

सली०—बिला मेरे हुक्म के ?

सि०—तलवारों के ज़ोर से ।

सली०—मगर तुम देखते रहे ?

सि०—आँखे फाड़ फाड़ कर ।

सली०—अच्छा देखा जायगा, मालूम पड़ जायगा ।

(नेपथ्य से "पकड़लो २ यही है" की आवाज़ आती है, सलीम का भागना, आदमियों का उसके पीछे जाना, फिर दानिशमंद व सलीम का आना)

दानिशमंद—नहीं २ शाहज़ादा साहब ! अब डर की कोई बात नहीं है ।

सलो०—मगर वे खूंख्वार काफ़िर मुझे खाने के लिये मुंह फाड़ रहे हैं !

दानि०—मेरा यक़ीन कीजिये--देखिये शाहन्शाह आलमगीर की तरफ़ से यह सुलह का फ़र्मान है। अब बे ख़ौफ़ महाराज शिवाजी के दरबार में चलिये और तवारीख़ में पहली मरतबा आज हिन्दुओं व मुसलमानों में हमेशा के लिये मुहब्बत व सुलह की ज़ंजीर को मजबूत कीजिये।

सलो०—अच्छा चलिये, सब मालूम पड़ जायगा (जाना)

लक्ष्मी०—(होश में आकर सूर्या को बेहोश सामने देखकर) हैं हैं क्या यह चले गये ! हमेशा के लिये सो गये, ओह ! परमात्मा ! यह दारुण दुख ! ऐसा क्लेश ! नहीं २ प्यारे-प्राण प्यारे ! उठो २ तुम एक बार हँसो ! देखो २ लक्ष्मी तुम्हें जयमाल पहिनाने के लिये खड़ी है। यह क्या-यह कैसा वज्रपात ! हे हरी ! हे भगवन ! मैं कैसा स्वप्न देख रही हूँ ? चद्रमा सदा के लिये अस्त हो गया-बिजली टूट पड़ी, वृक्ष जल गये-मकान गिर गये, और पृथ्वी फट गई ! (सूर्या जी का शिर अपनी जांघों पर धर कर)

गाना

सुहाग खो के जो घी के दिये जलाते हैं।
हम अपनी मौत को ख़ुद आपही बुलाते हैं॥
किसी के ऐश में हम को मलाल क्या मानी ?
हम आँसुओं से ही दिल की लगी बुझाते हैं॥
क़ज़ा उजाड के मेरा सुहाग क्यों चल दी ?
जिगर के ख़ून से मेंहदी हमीं रचाते हैं॥
यह मौत धन्य है "आनन्द" से जीना उनका ?
जान क़ुर्बान कर जो देश को बचाते हैं॥

मैं हूँ, मैं हूँ प्राणनाथ ! तुम्हारी आपत्ति का कारण मैं हूँ। हैं, जाते हो ? कहाँ ? ठहरो ठहरो मैं भी आती हूँ। (बेहोश होना)

(आना गुरू रामदास का)

गुरु—वर्षा के बाद पृथ्वी शांत हो गई ! दिन के बाद रात्रि शांत हो गई ! तलवार की लड़ाई से, ख़ून की दरिया से हृदय वेदना शांत हो गयी। (लक्ष्मी और सूर्या के मुख पर हाथ लगाकर) हैं ! दोनों बेहोश हो गये ? उठो उठो देश के अभिमान, महाराष्ट्र के गौरव, मनुष्य समाज के रत्न ! भारतमाता की आशा ! उठो। (पानी डालना-दोनों का उठना)

लक्ष्मी सूर्या०—गुरुदेव ! प्रणाम !! क्या आज्ञा है ?

गुरु—चलो चलो और देखो आज मनुष्य समाज ने मनुज रक्त व्यापार और भेड़ियों का सा हिंसक व्यवसाय त्याग दिया है। प्रजा की शांति का समय आ गया है। अब युद्ध और परस्पर द्वेष के स्थान में प्रेम के अंकुर पैदा होंगे। हिन्दू मुसलमान देशी, विदेशी, प्रत्येक धर्मावलम्बी-सब प्रेम भाव से पूर्ण हो परस्पर गले मिलेंगे।

अङ्क ३ दृश्य ५

मकान घसीटा

(घसीटा गाते हुऐ आता है)

गाना

इस कोट की तारीफ, इस हैट की तारीफ़।
इस बूट की तारीफ़ इस, पतलून की तारीफ़॥
घिस्सू से घसीटा बनाया, मुझको हैट ने।
हज्जाम से साहब बनाया मुझको हैट ने॥
(जो) जूती की ठोकरों से किया करते थे ख़ातिर,
झुककर सलाम करते हैं इस हैट की ख़ातिर।
गोरा नहीं तो क्या हुआ काला जरूर हूं-
साहब नहीं तो साहबों की दुम जरूर हूं।

(नोट गिनता है आना फोकट का)

फोक०—(स्वगत) आगया भैंसासुर! सुना है यह भड़भूंजा साहब बाहब खाक़ भी नहीं है। यह तो घसीटा नाई है। मगर मुझ से मिलने के लिये यह शकल बनाई है। हां और मुआ जाली नोट भी बनाता है। आज मैं भी वो रंग दिखाती हूं कि यह विलायती बंदर बिना टिकिट सीधे जेलख़ाने जाता है।

घसी०—(देखकर) माई डार्लिङ्ग! जी चाहता है कि तुम्हारे सामने दिनरात २४ घन्टे ८ पहर और ३२ घड़ी शीशा लिये खड़ा रहूँ।

फोक०—मगर किस लिये ?

घसी०—यह देखने के लिये कि तुम्हारा अक्स तुमसे ज़्यादा खूबसूरत तो नहीं है।

फोक०—अगर हो तो ?

घसी०—तो उसको ज़मीन पर इस ज़ोर से मारूं, कि चूर चूर हो जाय।

माशूक के लिये तो मैं आशिक़ ज़रूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

फोक०—तब तो ज़रूर आपने एम० ए० डी० की डिगरी पास की है!

घसी०—एम. ए. डी. की डिगरी! अजी वह तो बहुत दिन हुए जब पास की थी।

एम. ए. डी. नहीं हूँ तो डी. ए. एम. ज़रूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥

फोक०—ओ हो! यह तो कोई नई डिगरी आपने पास की है?

घसी०—जी हां, मैं तो हरसाल एक नई डिगरी लेकर पुरानी वाली को छोड़ दिया करता हूँ।

फोक०—देन सौरी!! आई डोन्ट वॉन्ट यू!

घसी०—ठहरो, ठहरो, कहाँ चलदी! मिस फोकट उर्फ़ फजीता!

फोक०—जाओ तुम दूसरी डिगरी लाओ। हम दूसरा Candidate (उम्मेदवार) देखेगा।

घसी०—हाय हाय! पर हम तो मांफी माँगता है। अब कभी ऐसा न बोलेगा।

(कान पकड़ना)

गाना ।

घसी०—माफ करो ऐक्सक्यूज मी, यू मैडम फजीता!

फोक०—गेट अवे आई डोन्ट वांट यू मिस्टर घसीटा!!

घसी०—वन्स मोर।

फोक०—गेट आउट।

घसी०—लुक हीयर।

फोक०—कीप क्वाइट।

घसी०—बेग योर पार्डेन! बेग योर पार्डेन! मैडम फजीता!

आज हम यार से बेकार झगड़ बैठे हैं।
एक बोसे के तनाज़े पै अकड़ बैठे हैं॥
मुफ्त की दर्द सरी पाई हमने उल्फ़त में।
बिगड़े हम उनसे तो वो हमसे बिगड़ बैठे हैं॥

फोक०—यू ड्याम फूल!

घसी०—हम बन गये साहब—

फोक०—तो मैं मेडम ज़रूर हूँ।

घटी०—साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ।

फोक०—डीयर! आज मुझे कपड़े वाले को २५) देने हैं अच्छा होता अगर आप……

घसी०—हाँ हाँ! लीजिये, इसमें शरमाने की क्या ज़रूरत है? जो आप का माल सो मेरा माल! लीजिये ये ४ नोट हैं।

फोक०—थैंक्यू!

घसी०—नो मैनशन माई चाकलेट!

फोक०—(मन में) हैं यह तो जर्मन के माल की तरह पक्का बदमाश है! घर पर ही जाली नोट बनाता है और सी० आई० डी० के इंजन की तरह मेरे सामने

भकभकाता हुआ चला आता है। ख़ैर मैंने भी पुलिस इन्सपेक्टर मिस्टर पास को बुलाया है, उसके हाथों आज इसे गिरफ्तार कराना है। जाली नोटों के बनाने का मज़ा चखाना है।

घसी०—क्यों डार्लिङ्ग ! क्या सोच रही हो ? अगर और नोटों की ज़रूरत है तो लीजिये गिनिये ! अपनी तबीयत ठंडी करने के लिये सोडा बर्फ पीजिये।

(घसीटा चूमना चाहता है बीच में बेढब आकर कूदता है)

बेढब—अरे मर गया साहब ! साहब मर गया !

घसी०—क्यों क्यों क्या हुआ ?

बेढ०—अरे बड़ा बुरा हुआ ?

घसी०—अबे तो क्या हुआ ?

बेढ०—हुआ क्या ? किसी बावले कुत्ते ने मेरा गाल काट खाया।

घसी०—अरे कमबख़्त, तुझे दूसरे के फटे में पैर डालने की क्या ज़रूरत थी ?

बेढ०—तो आप भी दूर से बातें क्यों नहीं करते ? मुंह पर मुंह रखकर टेलीफ़ोन करने की क्या ज़रूरत थी ?

(इन्सपेक्टर का आकर दरवाज़े पर आवाज़ देना)

इन्सपेक्टर—घसीटा ! मिस्टर घसीटा ?

घसी०—अरे देख कौन आया ?

फोक०—वही तुम्हारा बाबा।

बेढ०—अरे मेरे बाबा को तो साढ़े १७ सौ साल मरे हो गये।

घसी०—अरे बाबा सच बता ! (फिर आवाज़ सुनना)

बेढ०—यह है इन्सपेक्टर मि० पास।

घसी०—तब तो बस हो गया अपना सत्यानास।

बेढ०—मज़ा तो यही है।

(फोकट घसीटा लिखकर कुर्सी पर गोंद लगाकर रख देती है)

इन्सपेक्टर—अजी दरवाज़ा खोलो !

घसी०—अरे ज़रा धीरे धीरे बोलो। मगर प्यारी ! मुझे जल्द कहीं छुपा ! नहीं तो कोतवाल की बिल्ली घसीटे के बिल्ले को सफ़ाचट फ़ौरन वन टू थ्री कर जायगी।

फोक०—अजी यहां तो बैठो ! (कागज़ चिपक जाता है) मगर तुम्हें कैसा डर ! तुम्हारे पास तो नोटों की गड्डी है, दस नोट उसे भी दे देना।

घसी०—अररर ! उसे न दिखलाना ! जो कहीं लार टपक पड़ी तो मुझे भी नोटों के साथ चाट जायेगा।

बेढ०—जभी तो मज़ा आयेगा।

घसी०—अच्छा प्यारी ! हम दोनों इधर खड़े होते हैं ! तुम यों कहना कि मैंने दो तस्वीरें बनाई हैं, यह देखिये। समझी ?

(दोनों का गमले लेकर मूर्ति की तरह खड़े हो जाना)

इन्स०—(आकर) वह जालसाज़ बदमाश घसीटा कहां है ?

घसी०—अरे कह दे कि मर गया।

बेढ०—मज़ा तो यही है।

फोक०—वो तो यहां नहीं हैं। मगर देखिये दो मूर्तियां मैंने बनाई हैं, कैसी सुन्दर हैं (घसीटा को बतलाना)

इन्स०—हैं तो अच्छी। (हिलाता है घसीटा उसके ऊपर गिर जाता है) अरे उठा उठा ! यह तो गिर गया।

घसी०—अब तो बेटा मर गया।

बेढब—मज़ा तो यही है।

इन्स०—वेल मिस ! यह तसवीर अच्छी तरह गढ़ी नहीं है। ढीली है। एक लकड़ी लाना ! ज़रा इसे मज़बूत करदूं ! वर्ना किसी दिन गिर जायेगी, किसी गरीब की जान जायेगी।

(इन्सपेक्टर लकड़ी से ठोकता है घसीटा इधर उधर कूदता है)

बेढब—मज़ा तो यही है।

इन्स०—अरे इस पत्थर की मूर्ति में तो जान आ गई !

बेढब—मज़ा तो यही है !

(इन्सपेक्टर का ठोकना घसीटा का उठकर भागना)

इन्स०—चोर; डाकू, बदमाश ! अब कहां जायगा ?

घसी०—जहन्नुम मे ?

बेढब—मज़ा तो यही है !

घसी०—हुजूर माफ़ करें, मैं तो हुजूर का माई बाप हूँ।

इन्स०—शटप ! देखो जान बचाना मांगता है तो हम जैसा बोलता है वैसा बोलो।

घसी०—बहुत ख़ूब ! ज़रूर बोलेगा।

इन्स—नोट निकालो।

घसी०—नोट निकालो।

इन्स०—डैमिड अपना नोट निकालो।

घसी०—डैमिड अपना नोट निकालो।

इन्स०—बदमाश ! तुम नोट निकालो।

घसी०—बदमाश ! तुम नोट निकालो।

इन्स०—सुअर हम बोलता है तुम नोट निकालो।

(दोनों का हाथापाई करना)

घसी०—क्या हर्ज है, चार पांच महीने तक ससुराल की दावत ही सही।

इन्स०—क्यों बे बदमाश! जाली नोट बनाना और फिर आंखें दिखाना?

(सीटी बजा कर सिपाहियों को बुलाना और गिरफ्तार करलेना)

घसी०—अरे मर गया इन्सपेक्टर साहब!

इन्स०—उतार कोट।

घसी०—लो कोट।

इन्स०—उतार हैट।

घसी०—लो हैट।

इन्स०—उतार बूट।

घसी०—लो जूते।

(सब चीज़ें एक २ करके उतरवा लेना)

घसी०— गाना

मारखाई कैसी, किस्मत में लिखी जैसी।
सौ फिटकार है, यारो: इस साहब की ऐसी तैसी॥
इस कोट और पतलून ने पागल बना दिया।
इस साहबी के ठाठ ने झागल बना दिया॥
मिस्टर घसीटे मरगये अब तो ढपोची रहगये।
साहबी चलती हुई मोची के मोची रह गये॥
नेकटाई डाट कर एक दिन ईसाई बन गये।
पहले भी नाई थे यारो, अब भी नाई बन गये॥
अब तो जिजमानों की गर्दन पर छुरा चलता रहे।
खूब बन आये हजामत उस्तरा चलता रहे॥
होता है नतीजा यही हमसे बहादुरों का।
लो देख लो तमाशा साहब बहादुरों का॥

खा खा के मार बन गया हल्लाम ज़रूर हूँ।
साहब नहीं तो साहबों की दुम ज़रूर हूँ॥
बेढब—मज़ा तो यही है।

(सब का घसीटे को पीटते जाना)

अङ्क ३ दृश्य ६

सिंहगढ़ दुर्ग दरबार-भवन

सहेलियाँ— गाना।

तेरो ही आधार जगत में, तेरो ही आधार।
सब मिल करें बंदना तेरी, तू साईं सर्दार॥
ध्रू प्रहलाद को तारा तूने-हिर्नाकुश को मारा तूने।
भक्तों को उद्धारा तूने, संकट मोचन हार,जगत में॥
गज को ग्राह से आन छुड़ाया-दुष्टों का अभिमान मिटाया,
द्रुपद सुता का चीर बढ़ाया, तू पति राखन हार॥जगत में०॥

(भूषण जी का कवित्त पढ़ना)

"दाढ़ी के रखैयन की दाढ़ी सी रहत छाती, बाढ़ी मरजाद जस हद हिंदवाने की। कढ़ि गई रैयत के मन की कसक सब मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की॥ भूषन भनत दिल्ली पति दिल धक धक सुनि सुनि धाक सिवराज मरदाने की। मोटी भई चंडी बिन चोटी के चबाय सीस खोटी भई संपति चकत्ता के घराने की"॥

शिवा०—कोटि कोटि धन्यवाद है उस परम पिता जगदीश्वर का, जिसकी असीम कृपा से आज मुझे अपने देश को स्वतंत्र कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। केवल, चार दिन की ही बात है कि मुग़लों व मुसलमानों के अत्याचार से सारे देश में कोलाहल मच रहा था, प्रजाजन के हृदयों को दारुण दुख पहुंच रहा था, किन्तु लाख लाख धन्यवाद है उस महान शक्ति का जिसने अपने दयालु चरणों से अभिमानियों का गर्व चूर्ण कर दिया; निराशों की आशाओं को पूर्ण कर दिया।

इब्रा०—(आकर) छत्रपति की सेवा में इब्राहीम खां का सलाम!

शिवा०—सेनापति इब्राहीम ख़ां! तुमने अपने एहसानों से मुझे दबा दिया। पुर्तगालियों की ज़बरदस्त ताक़त को तुमने नीचा दिखाकर मार भगाया, यह तुम्हारा ही काम है। भाई इब्राहीम ख़ां! तुम्हारे जैसे ही सूरमाओं के शीश पर इस देश की स्वतंत्रता का गौरव शोभा देता है! बोलो, मांगो, बताओ, तुम्हें क्या चाहिये? मैं वीर योद्धाओं के उचित सम्मान में अपना ही सम्मान समझता हूं।

इब्रा०—आफ़रीं आफ़रीं! मैं और कुछ नहीं सिर्फ़ छत्रपति की पनाह मांगता हूं। मुझे अच्छी तरह याद है जब देहली में शिया व सुन्नियों में आपस में दुश्मनी व नफ़ाक़ पैदा हो गया था। बादशाह की मेहरबानी की आड़ में जब हम ग़रीब शियों के सर धड़ से अलग होने लगे तो हमारा इस दुनिया में कोई हामी न था। किसी ने उस ज़ालिम के मुक़ाबिले में ज़बान न खोली। आपको ही खुदाताला ने हम ग़रीबों के लिये ग़रीब-परवर बना कर भेजा था:—

इज़्ज़त बढ़े शौकत बढ़े इक़बाल हो बुलंद।
हरसू यही जहान में आवाज़ हो बुलंद॥
दुश्मन भी सर झुकाये होकर शर्म से ज़लील।
हँस कर कहे यह आसमां इक़बाल हो बुलंद॥

शिवा०—शाबाश बहादुर सेनापति! शाबाश! तुम्हारे ही जैसे नेक मुसलमानों से तुम्हारे धर्म का सितारा उज्ज्वल होकर चमक रहा है। किन्तु सेनापति, वह पुर्तगाली सेना का अध्यक्ष कहां है, उसे लाओ मैं उसे देखना चाहता हूं।

(इशारा करने से डिगामा का हथकड़ी बेड़ी सहित आना)

शिवा०—सेनापति! यह कोई वीर पुरुष है। योद्धाओं को हथकड़ी बेड़ी में बांध रखना ही कायरता है। खोलो खोलो इसे तुरंत बंधन मुक्त करदो! डिगामा साहब! हमने सुना है तुम सभ्य जाति के आदमी हो। फिर तुम जलदस्यु की वृत्ति ग्रहण करके भोले भाले भारतवासियों को क्यों सताते हो?

डिगामा—राजा! हम टुमको उसका कैफियट नहीं देने सका है-इस बखत हम टुम्हाड़ा कैड़ी है, टुम जो मांगटा कड़ो।

शिवा०—फिरंगी, सावधान! दरबार में इस तरह उद्दंडता दिखाने से दंड मिलता है।

डिगामा—ड़ाजा हमको टुम डराने नहीं सकटा है।

शिवा०—साहब! तुम नहीं जानते? वीरता और उद्दंडता में बड़ा अंतर है।

डिगामा—वेल जल्डी बोलो क्या बोलना मांगटा है?

शिवा०—तुम लोग सात समन्दर तेरह नदी लांघ कर मुग़लों से सताये हुये भारतनिवासियों को लूट मार करके सताते हो-

मरे हुओं को मारना चाहते हो, फिर भी नहीं लजाते हो? क्या तुमने समझ रक्खा है कि भारत बिलकुल ही मुर्दा है? यहां के रहने वाले भारत वासी बिल्कुल ही शक्ति हीन हो गये? तुमको कुछ दंड नहीं दे सकते?

डिगामा—राजा! अब हम अपना मुँह-अपना देश में नहीं दिखाने सकटा! टुम हमको जल्दी कटल कड़ने बोलो।

शिवा०—साहब! तुम जैसे योद्धा ही वीरता के उदाहरण हैं। और शिवा जी वीरता का उचित सम्मान करना जानता है। साहब, मैं तुमको वह दंड देता हूँ जो हिन्दुओं के यहाँ सबसे कठिन दंड समझा जाता है।

डिगामा—जल्डी करो मैन हम शरम का आग में जल रहा है।

शिवा०—साहब! मैं तुमको क्षमा करता हूँ। इब्राहीम! साहब को इज़्ज़त के साथ इनके जहाज़ तर्फ़ वापिस कर दो।

इब्रा०—जो हुक्म।

डिगामा—राजा! हम टुम्हारा पेहसान का नीचू दबा गया। आगे जो काम हमारा वास्टे होने से हमको भूलना नहीं।

अन्नाजी—छत्रपति महाराज! मैं देख रहा हूँ आज कल आप निःसंकोच होकर मुसलमानों पर विश्वास बढ़ाते जाते हैं। भगवान न करे, कहीं इन विधर्मी शत्रुओं के हाथ से हमारा कोई अनिष्ट न हो जाय।

शिवा०—अन्ना जी! मेरा शत्रु दिल्ली का बादशाह है। कोई मुसलमान क़ौम मेरी शत्रु नहीं है। सच तो यह है कि मैं अपने देव मंदिरों की तरह उनकी मस्जिदों को भी पवित्र दृष्टि से

देखता हूं तथा न्याय और धर्म के अनुसार जो जैसा कर रहा है उसे वैसा ही दंड देता हूं। मेरी हार्दिक इच्छा तो यह है कि हिन्दू व मुसलमान दोनों इस भारतभूमि को अपनी माता समझ कर आपस में भ्रातृभाव का नाता रक्खें तो इस देश का कल्याण हो जाये।

द्वारपाल—(आकर) छत्रपति की जय हो! द्वार पर सर हेनरी औक्सडन नाम का अंग्रेज व्यापारी आपके दर्शनों को आना चाहता है।

शिवा०—आने दो।

द्वार०—जो आज्ञा! (सर हेनरी का द्वारपाल केसाथ आना)

शिवा०—बोलो, फिरंगी! तुम्हें क्या कहना है?

स० हेनरी—डाजा! हम बिलायत का सौडागर है! हम टुम्हारा राज में व्यापार करना मांगटा है। हम टुम्हारा पास फरयाड लेकर आया है। डाजा! हमारा सूरत बंडर का कोठी टुम्हारा आडमी लूट लिया।

शिवा०—तुम लोग कितने चालाक हो, हमको ख़ूब मालूम है। साहब! शिवाजी के दूत सब जगह रहते हैं, तुम्हारा भेद प्रकट है! हमें मालूम है तुमने हमारे विरुद्ध बादशाह से जाकर सलाह की थी। उसी के पुरस्कार रूप तुम्हारी सूरत की कोठी लूट ली गई। तुम्हारी मीठी २ बातों पर मुझे ज़रा भी विश्वास नहीं है। साहब! फिर भी शरणागत की रक्षा करना हम हिन्दुओं का मुख्य धर्म है।

स० हेनरी—ओ टुम बड़ा रहम दिल राजा है। पर हम पाडसा का पास नहीं गया।

शिवा०—चुप रहो साहब ! शिवाजी की आंखों में धूल झोंकना असम्भव है। तुम्हारी चालाकी की बातों से मालूम पड़ता है कि एक दिन तुम लोग मौका पाकर जरूर हमें धोका दोगे। तुम्हारे व्यापारी हृदय में अवश्य राज्य की आशा छिपी हुई है। फिर भी जब तुम मेरी शरण आये हो तो मैं तुम्हें अभयदान देता हूं। याद रक्खो, जब तक तुम लोग हमारे देश के विरुद्ध कोई काम न करोगे तब तक तुम्हें कोई भय नहीं है—

स० हेनरी—मगर हमारा लोग तिजारत करने सकटा है ?

शिवा०—इसके लिये तुम्हें हरसाल अपनी आमदनी का चौथाई हिस्सा हमें देना होगा, समझे ?

स० हेनरी—Allright very cunning fellow indeed

(जाता है)

द्वारपाल०—महाराष्ट्र पति श्री १०८ समर्थ गुरु महाराज पधार रहे हैं। (आना)

शिवा०—(उतर कर चरण छूना) श्री गुरु चरणभ्यो नमः !

गुरु०—कल्याण हो ! पुत्र ! चिरंजीव रहो !

(गुरु को ऊंचा आसन देकर खुद नीचे बैठते है)

शिवा०—गुरुदेव ! बहुत समय पश्चात श्रीमान् के दर्शन हुये। किन्तु यह हाथ में क़ागज़ कैसा है ?

गुरु—शिवशंकर जी के अवतार, देवी भवानी के एक मात्र पुत्र वीर शिवा ! मैंने जब से सिंहगढ़ की विजय का समाचार सुना तो एकबार स्वतंत्र महाराष्ट्र को इन प्यासी आंखों से देखने का फिर विचार हुआ। मैं आज प्रसन्न हूं। महाराष्ट्र देश स्वतंत्र है। उस समय मैं और भी प्रसन्न हूंगा और अपने

को बड़ा भाग्यशाली समझूंगा जब मैं समस्त भारत वर्ष को इसी प्रकार स्वतंत्र देखूंगा।

शिवा०—भगवान आपकी इच्छा पूर्ण करें।

गुरु—महाराष्ट्र पति शिवा! आज की खुशी में मैं दो प्रस्ताव इस राज्य के सन्मुख रखता हूं।

शिवा०—गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य्य है!

गुरु—प्रथम यह कि बीजापुर राज्य की सेना बाग़ी हो गई है-और प्राण भय से वहां का युवराज सलीम तुम्हारी शरण आता है। एक उदार हृदय क्षत्रिय की भांति तुम इस बालक को शरण दो।

शिवा०—कौन? युवराज सलीम? (सलीम का सामने आना)

गुरु—हाँ युवराज सलीम!

शिवाजी—सलीम! तुमने मुझे पहचाना!

सली०—(घुटने टेककर) माफ़ कर ऐ रहम दिल राजा, मुझे माफ़ कर! मैं वह सांप हूं जिसने अपनी उम्र ऐयाशी, दग़ाबाज़ी व हिन्दुओं की बरबादी में तबाह की है। ख़ुदा के लिये सब कुछ भूल जाओ, मुझे बचाओ। मैं एक मुसीबत ज़दा हूं-तुम्हारा ग़ुलाम हूं, तुम्हारा गाय हूं।

शि०—(उठाकर) आ आ! मेरे मुसलमान भाई! मैं तेरी हर तरह रक्षा करूँगा! गुरुदेव के आज्ञानुसार तुम्हें अपना भाई समझूंगा! परमेश्वर ने सब धर्मों में हिन्दू धर्म और सब हृदयों में हिन्दू हृदय ही कोमल बनाया है! भाई मैं तुम्हें अभयदान देता हूँ।

गुरु०—धन्य है धन्य है! यही वीरोचित कार्य है। शिवा, तुमने अपने प्रचंड शत्रु को शरण देकर क्षत्रिय उदारता का परिचय दिया है। अब दूसरा प्रस्ताव यह मुगल सम्राट औरङ्गज़ेब का

संधिपत्र है, जिसमें सम्राट ने महाराष्ट्र राज्य को वार्षिक चौथ देना स्वीकार कर लिया है। मेरे विचार से देश और जाति के कल्याण के हेतु आवश्यक है कि इस संधि को तुम भी स्वीकृत करो।

शिवा०—जैसी गुरुदेव की आज्ञा! किन्तु........

भूषण—महाराज एक प्रार्थना इस दास की भी है।

गुरु—कहिये भूषण जी, आपको क्या कहना है?

भूषण—महाराज! कुत्ते की पूछ यदि दस वर्ष भी पत्थर के नीचे दबाकर रक्खी जाय तो भी टेढ़ी की टेढ़ी ही निकलेगी। महाराज! यह मुग़ल मुसलमानों की संधि, संधि नहीं है वरन् स्वार्थ सिद्धि का एक ढंग है। बहुत समझ सोचकर संधि पर स्वीकृति दी जाय।

शिवा०—भूषण जी! समर्थ गुरु की आज्ञा का उल्लंघन करना शिवाजी की सामर्थ्य के बाहर है।

गुरु—यही सोचकर मैंने संधि पत्र पर इतना और बढ़ादिया है कि "जब तक किसी प्रकार का उत्पात न होगा संधि स्वीकार है।"

दा०—मुझे यह इज़ाफा मंज़ूर है। (नेपथ्य में भारत माता की जय)

बन्द हो घर का कलह मिल जाय दो दिल साथ साथ।
छोड़दें सब द्वेष भावों को खुशी से साथ साथ॥
देश को माता कहें गरदन झुकायें साथ साथ।
भाई २ हम बनें हिन्दू मुसल्माँ साथ साथ॥

नेपथ्य में—हिन्दू धर्म की जय-भारत माता की जय!!

(पर्दा-फटना, सूर्या जी व लक्ष्मी का पाणि ग्रहण)

ड्राप (धर्म और नीति की पुष्प वर्षा)

समाप्त